सूचना

तुलसी साहब हाथरस वाले की असली फोटो यदि पाठकगण दे सकने की कृपा करेंगे जिससे कि इस पुस्तक की शोभा और भी बढ़ जावे। उनका मैं जन्मान्तर आभारी रहूँगा और धन्यवाद सहित नाम और पता प्राप्ति का फोटो के नीचे छपेगा—इस पुस्तक के अन्त में कुछ ऐसे महात्माओं के नाम छापे गये हैं जिनकी बानियाँ तथा संग्रह असली अब तक प्राप्त नहीं हुआ है यदि कोई भी सज्जन उन महात्माओं की असली बानी प्राप्त कर सकें तो वह पुस्तक के रूप में प्रकाशित की जा सकती है।

पत्र व्यवहार का पता—

एडिटर—

संतबानी पुस्तक माला, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

घट रामायण भाग २

तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की

रेवतीदास चरित्र

॥ बचन तुलसी साहिब ॥ चौपाई ॥

फूलदास सँग रहि इक साधा । मनमुख और मान मद माता ॥
रेवतीदास ताहि कर नामा । फूलदास देखि घबराना ॥
पुनि बोला मन में रिसियाना । स्वामी अब चलिये अस्थाना ॥
फूलदास कहै आज न आवौं । तुम सब मिलि अस्थानै जावौ ॥
हमहूँ भोर बिहानै अइहैं । राति यहीं चरनन में रहिहैं ॥
तिन पुनि तरक कीन्ह इक बाता । तुम हूँ रहि हौ इनके साथा ॥
हम को सूझि परा अस लेखा । तुम्हरी मति बुधि अचरज देखा ॥

॥ फूलदास चौपाई ॥

गुसा खाइ बोले अस बोली । लै उतार दीन्ही सोइ सेली ॥
फूलदास दीन्ही तेहि हाथा । रेवती सीस नवायो माथा ॥
गल बिचडारि महंती दीन्हा । सुखपालै बकसीसी कीन्हा ॥
तुम तौ करौ महंती जाई । अब हम नहिँ अस्थानै आई ॥
चेला चला बैठि सुखपाला । फूलदास भया और हवाला ॥
चेला मारग मता बिचारा । मन में सोच किया अधिकारा ॥
छाँड़ि महंती हमको दीन्हा । या से अधिक बात कछु चीन्हा ॥
सब सुख भोग मनै नहिँ लाये । ये तौ अधिक बात कछु पाये ॥
जो महंत पद होता भारी । तौ छाँड़त ये देत न डारी ॥
ये सब बात तुच्छ सम होई । तब हमरे सिर डारी सोई ॥
ये बिचार मन माहिँ समाना । मति भई सुद्ध उठा अस ज्ञाना ॥
फिरि पीछे मारग से आये । सुखपालै अस्थान पठाये ॥
सब मिलि कै जावौ अस्थाना । हम महंत संग उपज्यो ज्ञाना ॥
मंगलदास रहे गुरु भाई । टोपी सेली तेहि पहिराई ॥
आये पुनि महंत के पासा । जहँ तुलसी की कुटी

चौरदार खपाली गइया । चौरा पर उन खबर जनइया ॥
मंगल चेला सुनि पछिताना । चौरा सून भया अस्थाना ॥
पुनि बिचार कीन्हा मन माईं । यह अस्थान महंती जाईं ॥
ये दोनों मिलि कीन्ह बिचारा । हम छाँड़ैं तो होय बिगारा ॥
जो कछु होइ होइ सो होई । अब निबाह बिन बनै न सोई ॥
मंगल मन में बहुत रिसाना । सेली पहिरि बैठि अस्थाना ॥
रेवतीदास कुटी पर आवा । ले पकरे तुलसी के पाँवा ॥
रेवतीदास बोले अस बानी । मैं रहि हौं इनके ढिंग स्वामी ॥
कुटी सामने कुटी बनाई । दोनों रहे कुटी के माईं ॥
रेवतीदास दीन दिल आनी । स्वामी से पूछौं इक बानी ॥
गुरु चेला कर कैसा लेखा । सो स्वामी मोहिं कहौ बिबेका ॥

॥ बचन तुलसी साहिब चौपाई ॥

रेवतीदास सुनो तुम भाई । याकी बिधि कहौं समझाई ॥
नहिं कोइ गुरू नहीं कोइ चेला । बोलै सब में एक अकेला ॥
जो कोइ गुरुचेला कर जाना । सोइ सोइ परे नर्क की खाना ॥
एक बोल सब माहिं बिराजा । गुरु चेला दोइत बिधि साजा ॥
चेला होइ नीकि बिधि भाई । गुरू होइ चौरासी जाई ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी मैं तू जो तजै, रहै दीन गति सोई ।
गुरू नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोइ ॥ १ ॥
तुलसी कह रेवती सुनो, कहौं कबीर मुख बात ।
कहि कबीर सब में बसौं, को गुरु चेला साथ ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

कहकबीर सब माहिं बिराजौं । सब मैं किया सभी मैं साजौं ॥
कह कबीर हम सब के माईं । सब हम किया सभी सब ठाईं ॥
सब के माहीं बासा कीन्हा । सब में हमीं हमीं को चीन्हा ॥
जो महंत चेला करे भाई । सब में रहा कबीर समाई ॥
ये बिधि बिधी कबीर पुकारा । का को चेला करै लबारा ॥

घट घट माहिँ कबीर समाना । का को चेला करै हैवाना ॥
कहा कबीर मोहिँ सब में बूझा । चेला करै आँखि नहिँ सूझा ॥
है कबीर सब काया माईं । ता को तुम चेला ठहराइ ॥
कह कबीर सब ठाम ठिकाना । सोई कबीर का फूँकौ काना ॥
तुम्हरी मति कहौ कौन हिराई । कहा कबीर हम ठामै ठाईँ ॥
कहते तुम को लाज न आई । कहौ कबीर फिरि गुरू कहाई ॥
कहौ कबीर सब माहिँ समाना । गुरू कबीर की करौ बखाना ॥
तुम कबीर को स्वामी गावौ । पुनि वा को चेला ठहरावौ ॥
कस कस ज्ञान तुम्हारा भाई । भूल न अपनी देखौ जाई ॥
अगम निगम का ज्ञान सुनावौ । अपने घर की भूल न पावौ ॥
कहि कबीर मुख गाना गावौ । सब्द न खोजौ पोल चलावौ ॥
नहिँ कोई तुम को पकरन हारा । सो धन सब्द समझ की लारा ॥
ता से सोल पोल तुम लाई । पकरै तो कछु ज्वाब न आई ॥
और अनेक बात अस नासी । कौन कौन कहुँ तुम्हरी फाँसी ॥
अपना मता ऊँच करि ठानौ । ऊँचे का कछु भरम न जानी ॥
कहि कबीर मुख साँची बानी । तुम अबूझ कछु परख न जानी ।
कहि कबीर कथनी को गावै । बूझै ज्वाब न ता को आवै ॥
एक स्वाल हम पूछैँ भाई । कँवल चौरासी कौने ठाईँ ॥
या की भेद राह बतलाई । कौन ठाम वे कँवल रहाई ॥
नौलख कँवल कबीर बखाना । कहौ तुम उनका कौन ठिकाना ॥
सहस कँवल दल सो पुनि भाखा । अष्ठ कँवल दल भेद कहौ ताका ॥
चारि कँवल दल देव बताई । दोइ दल कँवल कौन से ठाईं ॥
ये सब कँवल जोग से न्यारा । जोगी न जानै भेद बिचारा ॥
कँवल चक्र षट जोगी गाई । ऊन कँवलन से न्यारे भाई ॥
या की बिधि बधि कहौ बुझाई । कही कबीर पंथ तेहि नाहीँ ॥
जो कबीर मुख भाखि बखानी । ता की तुम से पूछौं बानी ॥

॥ चौपाई ॥

असु सुन भेद कहौँ समझाई । रेवतीदास सुन चित्त लगाई ॥
षष्ठ कँवल जोगी पुनि गाई । या का तुम को भेद ॥

रहै चार दल गुदा के माईं । और दूजो को बिधी बताई ॥
छः दल कँवल नाभ के नीचे । अष्ट दलमल पुहमी के बीचे ॥
पखड़ी बारह हिरदे माईं । सोला पखड़ी कंठ रहाई ॥
उदित मुदित दुइ दीप कहावै । ता में सहस कँवल को पावै ॥
कँवल चक्र षट खुल के कहिया । संत कँवल भिनि न्यारे रहिया ॥
ये कँवला षट चक्र से न्यारा । उन को जानै संत बिचारा ॥
षोड़स द्वार काया के माईँ । तुम जानौ दस द्वार रहाई ॥
छः त्रिकुटी काया के माईँ । तुम जानौ पुनि एकै भाई ॥
नाल सताइस काया के माईँ । अट्ठाइस पुनि बंक कहाई ॥
बाइस सुन्न संत बतलावा । ये कबीर मुख अपने गावा ॥
मान सरोवर सुषमनि नारी । तिरबेनी ब्रह्मंड के पारी ॥
इतना भेद कहा हम गाई । भिन्न भिन्न कर दिया बुझाई ॥
ये हम कहा भाखि सोइ देखा । ये कबीर ने भाखा लेखा ॥
जो कोइ या का भेद बखानै । पंथ कबीर जाहि को जानै ॥
कहि कबीर की भाखि सुनावै । ये झूठै औरन की गावै ॥
अपना चखा स्वाद बतलावै । और की करनी काम न आवै ॥
और की करनी बूझ बुझावै । सो अपना कारज नहिँ पावै ॥
गुरु चेला का बूझौ लेखा । सो गुरु का मैं कहौँ बिबेका ॥
जगत गुरू नहिँ संत पुकारा । सत गुरु भेद जगत से न्यारा ॥
जो कोइ चढ़ै गगन को धावै । सो सयगुरु के सरनै आवै ॥
सतगुरु सत पुरुष हैं स्वामी । सो चौथा पद संत बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै विचार, रेवती यह बिधि गुरु लखौ ।
चखौ अमर पद सार, देखि आदि अन्दर मई ॥

॥ प्रश्न रेवतीदास और फूलदास चौपाई ॥

सुनि रेवती मन संसय आनी । तुम ने औरै और बखानी ॥
जस जस वचन विधी समझावा । अस आगे कोउ संत न गावा ॥
औरो संत गये वोहि राही । सो अब उनकी साखि सुनाही ॥

उत्त सुधा रस जिन की बानी । कहिये नाम भेद गुर ज्ञानी ॥
येहि बिधि फूलदास पुनि बोला । पूछै बिधि गुरू और चेला ॥
स्वामी या की साखि सुनाई । अगम पंथ को संतन पाई ॥
भिनि भिनि न्यारा नाम बताई । जिनकी साखी शब्द सुनाई ॥
अनुभौ भिनि भिनि सब करन्यारा । भाखौ एक एक बिस्तारा ॥
संत संत की न्यारी बानी । एक एक की कहौ निसानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब चौपाई ॥

कहै तुलसी तुम सुनिये काना । संत शब्द का करौं बखाना ॥
दादू मीरा नाभा भाई । नानक दरिया सूर सुनाई ॥
अरु कबीर पुनि भाखा भाई । और अनेक संत बिधि गाई ॥
जो जो संत अगम पुर धाये । जिन जिन साखी शब्द सुनाये ॥
संत चरन रज तुलसीदासा । कछु कछु भाखा अगम बिलासा ॥
तुलसी संत चरन की लारा । मेरी बुद्धि न उन अनुसारा ॥
संत चरन महिमा पुनि भाखौं । उनके चरन सीस पर राखौं ॥

॥ दोहा ॥

संत शब्द बिधि बिधि कहौं, सुनियो फूलादास ।
जो जो शब्द उन भाखिया, कहौं चरन होइदास ॥

॥ शब्द ॥

तुलसी तुल जाई, गुरु पद कंज लखाई ॥ टेक ॥
मैं तो गरीब कछू गुन नाहीं, मो को कहत गुसाँई ।
जो कछु कीन्ह कीन्ह करुनामय, मैं उनकी सरनाई ॥ १ ॥
मैं अति हीन दीन दारुन गति, घट रामायन बनाई ।
रावन राम की जुद्धि लड़ाई, सो नहिं कीन्ह बनाई ॥ २
ये तत सार तती निज जानत, जो ये लखै लखाई ।
काल काया परिवार मयाई, ये गुन ग्रंथन गाई ॥ ३
ता में सार पार पद न्यारा, सो कोइ संत जनाई ।
पंडित भेष जगत अरु ज्ञानी, भेद कोऊ नहिं पाई ॥ ४
अब बरतंत कहौं याही कौ, भरत सत्रगुन भाई ।
दसरत सीता और कौसिल्या, सिया लछमन

काग भसुंड गरुड़ सबै सब, मंथ्रा अरु केकाई ।
रघुपति रंग संग परिवारा, येहि बिधि जगहिँ सुनाई ॥ ६ ॥
और सुनौ रावन रंग राई, सब परिवार बताई ।
कुँभकरन भाभीषन भाई, इंद्रजीत सुत राई ॥ ७ ॥
रानी राइ मँदोदरि सोइ, सब परिवार सुनाई ।
ये घट माहिँ घटा घट ही में, रामायन्न बनाई ॥ ८ ॥
रावन ब्रह्म बसै त्रिकुटी में, लंक त्रिकूट बनाई ।
कुंभ तनै करता मनहीँ को, कुंभकरन्न कहाई ॥ ६ ॥
भय भौ खानि भभीषन भाई, सो भौ माहिँ भ्रमाई ।
इंद्रजीत जीतै मनहीँ को, सो इंद्रजीत कहाई ॥१०॥
रावन ब्रह्म बसै मन दौरी, ता को मँदोदरी बनाई ।
मन की दौरि को दूर बहावै, त्रिकुटी ब्रह्म कहाई ॥११॥
दस इंद्री रत दसरत कहिये, राम रम मन जाई ।
सत की सीता असत सिया को, कुमति कौसिल्या बसाई ॥१२॥
मन थिर सुरति करै थिर कोई, सो मन मंथ्रा कहाई ।
वहँ की बात कहौ कौन सुनाई, कर्मन थिर केकाई ॥१३॥
लै छै रस मनही को भाई, लछमन वीर बड़ाई ।
गो में रूढ़ गरूढ़ गिनाई, भय लै भसुंड भुलाई ॥१४॥
भय रत भरम भरत है सोई, चाह त्रिगुन्न गिनाई ।
तो को नाम चतुरगुन कहिये, ये सब भेद बताई ॥१५॥
ये नौ द्वार काया के माहीं, सो हनुमान हँसाई ।
ये तो चिन्न भिन्न विन देखे, जोग करै सो जनाई ॥१६॥
काया सोध कसै इंद्रिन को, त्रिकुटी ध्यान लगाई ।
स्वाँसा धाइ वंक खुल खोलै, सहस कँवल दल पाई ॥१७॥
जो कोइ जोग जुगति करि लाई, जेहि घट ब्रह्म दिखाई ।
जोगी का जोग इष्ट जगही को, ये गति यौँ बिधि गाई ॥१८॥
दूजा जोग ज्ञान गति गाई, आतम तत्त लखाई ।
मुद्रा पाँच अवस्था चारी, ज्ञान तीनि गति गाई ॥१६॥

चाचरि भूचरि और अगोचरि, खेचरि खेह लगाई ।
उनमुनि उभै अकास के ठाईं, ज्ञान त्रिधी बतलाई ॥२०॥
रेचक पूरक कुंभक कहिये, येहि बिधि ज्ञान गिनाई ।
और अवस्था अरथ बताई, ज्ञाना किनहुँ न पाई ॥२१॥
जाग्रत सुपन सुषोपति कहिये, तरियातीत कहाई ।
तुरियातीत बसै वोहि पारा, जो या करै तिन पाई ॥२२॥
चारो बानी का भेद बताई, सास्तर संध लखाई ।
परा पसंता मधिमा सोई, बैखरी बेर बताई ॥२३॥
ये सब जोग ज्ञान गति गाई, ज्ञानी यही बताई ।
इनके परे भेद है न्यारा, सो कोइ संत जनाई ॥२४॥
और सुनौ जो अगाध अघाई, संतन की गति गाई ।
जा को भेद बेद नहिँ जानै, जोगी किनहुँ न पाई ॥२५॥
परमहंस बैरागी गुसाँईं, जग्त की कौन चलाई ।
ये कहुँ देखि कहूँ न कहाई, काहू प्रतीति न आई ॥२६॥
तुलसी तोड़ फोड़ असमाना, सूरति सार मिलाई ।
सरकी चाँप चली धै धाई, धनुवा धनुष चढ़ाई ॥२७॥
तीनि लोक तिल खेई पारा, चौथे जाइ समाई ।
वो साहिब सतनाम अपारा, तिन मोहिँ अंग लगाई ॥२८॥
या के पार परे गति न्यारी, सो कोइ संत जनाई ।
जा को नाम अनाम अमाई, केहि बिधि कहौँ बुझाई ॥२९॥
ता के रंग रूप नहिँ रेखा, नाम अनाम कहाई ।
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिँ जानै, ता घर जाइ समाई ॥३०॥
सब संतन के चरन सीस धरि, आदि अजर घर पाई ।
तीनि लोक उपजै और बिनसै, चौथे के पार बसाई ॥३१॥

॥ सोरठा ॥

येहि विधि रघुपति रंग, रावन संग प्रसंग भयो ।
सुरति चढ़ी चित चंग, ज्यों पतंग डोरी गह्यो ।

॥ शब्द १ दादू साहिब ॥

दादू देखा अदीदा, सब कोइ कहत सुनीदा ॥टेक॥
हवा हिरस अंदर बस कीदा । तब यह दिल भया सीधा ॥१॥
अनहद नाद गगन चढ़ गरजा । तब रस पिया अमींदा ॥ २ ॥
सुखमनि सुन्न सुरति महलों नभ । आया अजर अकीदा ॥ ३ ॥
अष्ट कँवल दल में दृग दरसन । पाया खुद खुदीदा ॥ ४ ॥
जैसे दूध दूध दधि माखन । बिन मथे भेद न बीदा ॥ ५ ॥
ऐसे तत्त मत्त सत साधन । तब टुक नसा पिय पीदा ॥ ६ ॥
नहिँ यह जोग ज्ञान मुद्रा तत । यह गति और पदीदा ॥ ७ ॥
जो कोइ चीन्ह लीन्ह यह मारग । कारज हो गया जीदा ॥ ८ ॥
मुरसिद सत्त गगन गुरु लखिया । तन मन कीन्ह उसीदा ॥ ९ ॥
आसिक यार अधर लखि पाया । हो गया दीदम दीदा ॥ १०॥

॥ शब्द २ दादू साहिब ॥

जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी ॥ टेक ॥
नौ लख कँवल जुगल दल अंदर । द्वादस साहिब स्वामी ॥ १ ॥
सूरत कड़क कँवल दल नभ पर । झटकि झटकि थिर थामी ॥२ ॥
जैसे जहांज चलै सागर में । बरदवान[1] बहै धीमी ॥ ३ ॥
तैसे यार प्यार लखि पाया । तब सूरति ठहरानी ॥ ४ ॥
सूरति सब्द सब्द में सूरति । अगम अगोचर धामी ॥ ५ ॥
का से कहौँ पिया सुख सारा । ज्यों तिरिया मुसकानी ॥ ६ ॥
नहिं ये जोग ज्ञान तुरिया तत । यह गति अकथ कहानी ॥ ७ ॥
चंद न सूर पवन नहिं पानी । क्योंकर करौँ बखानी ॥ ८ ॥
सुन्न न गगन धरन नहिं तारा । अल्ला रब्ब न रामा ॥ ९ ॥
कहा कहौं कहिवे की नाहीं । जानत संत सुजानी ॥१०॥
वेद न भेद भेप नहिं जानत । कोऊ देत न हामी ॥११॥
दादू दृग दीदार हिये के । सूरति करति सलामी ॥१२॥
में पिया प्यार प्यार पिय अपने । मिलि रहे एक ठिकानी ॥१३॥
सूरति सार संध लखि पाई । ये गति विरले जानी ॥१४॥

[1] बादबान अर्थात् पाल ।

॥ शब्द नानक साहिब ॥

उघरा वह द्वारा वाह गुरू परिवारा ॥ टेक ॥
चढ़ गइ चंग पतंग संग ज्यों । चंद चकोर निहारा ॥ १ ॥
सुरति सोर जोर ज्यों खोलत । कुंजी कुलफ किवारा ॥ २ ॥
सुरति धाइ धसी ज्यों धारा । पैठि निकसि गइ पारा ॥ ३ ॥
आठ अटा की अटारि मँझारा । देखा पुरुष नियारा ॥ ४ ॥
निराकार आकार न जोती । नहिँ वहँ बेद बिचारा ॥ ५ ॥
ओँकार करता नहिँ कोई । नहिँ वहँ काल पसारा ॥ ६ ॥
वे साहिब सब संत पुकारा । और पखंड पसारा ॥ ७ ॥
सतगुरू चीन्ह दीन्ह यह मारग । नानक नजर निहारा ॥ ८ ॥

॥ शब्द दरिया साहिब ॥

दरिया दरबारा खुल गया अजर किवारा ॥ टेक ॥
चमकी बीज चली ज्यौँ धारा । ज्यों बदरी बिच तारा[1] ॥ १ ॥
खुलि गया चंद बंद बदरी का । घोर मिटा अँधियारा ॥ २ ॥
लै लगी जाइ लगन के लारा । चाँदनी चौक निहारा ॥ ३ ॥
सूरति सैल करै नभ ऊपर । बंक नाल पट फारा ॥ ४ ॥
चढ़ि गइ चाँप चली ज्यों धारा । ज्यौँ मकरी मुख तारा ॥ ५ ॥
मैं मिलि जाइ पाय पिया प्यारा । ज्यों सलिता जल धारा ॥ ६ ॥
देखा रूप अरूप अलेखा । लेखा वार न पारा ॥ ७ ॥
दरिया दिल दरवेस भये तब । उतरे भौजल पारा ॥ ८ ॥

॥ शब्द मीरा बाई ॥

मीरा मन मानी सुरति सैल असमानी ॥ टेक ॥
जब जब सुरति लगै वा घर की । पल पल नैनन पानी ॥ १ ॥
ज्यौं हिये पीर तीर सम सातल । कसक कसक कसकानी ॥ २ ॥
रात दिवस मोहिं नीद न आवै । भावत अन्न न पानी ॥ ३ ॥
ऐसी पार बिरह तन भीतर । जागत रैन बिहानी ॥ ४ ॥
ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी । देस बिदेस पिछानी ॥ ५ ॥

---

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "बीज" की जगह "दीप" और "बदरी" की जगह "बिजुली" है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

ता से पीर कहौँ तन केरी । फिरि नहिँ भरमौँ खानी ॥ ६ ॥
खोजत फिरौं भेद वा घर का । कोऊ न करत बखानी ॥ ७ ॥
रैदास संत मिले मोहिँ सतगुरु । दीन्ही सुरति सहिदानी ॥ ८ ॥
मैं मिलि जाइ पाइ पिया अपना । तब मोरी पीर बुझानी ॥ ६ ॥
मीरा खाक खलक सिर डारी । मैं अपना घर जानी ॥ १०॥

॥ शब्द सूरदास जी ॥

मुरली धुनि गाजा, सूर सुरति सर साजा ॥टेक॥
निरखत कँवल नैन नभ ऊपर । सब्द अनाहद बाजा ॥ १ ॥
सुनि धुनि मैल मुकर मन माँजा । पाया अमी रस झाँझा ॥ २ ॥
सुरति संध सोध सत काजा । लखि लखि शब्द समाजा ॥ ३ ॥
घटे घट कुंज पुंज जहँ छाजा । पिंड ब्रह्मंड बिराजा ॥ ४ ॥
फोड़ि अकास अललपच्छ भाजा । उलटि के आपु समाजा ॥ ५ ॥
ऐसे सुरति निरखि निःअच्छर । कोटि कृष्न तहँ लाजा ॥ ६ ॥
सूरदास सार लखि पाया । लखिलखिअलखअकाया॥ ७ ॥
सतगुरु गगन गली घर पाया । सिंध में बंद समाया ॥ ८ ॥

॥ शब्द नाभा जी ॥

नाभा नभ खेला, सुरति केल सर सैला ॥टेक॥
दरपन नैन सेन मन माँजा । लाजा अलख अकेला ॥ १ ॥
पल पर दल दल ऊपर दामिनी । जोत में होत उजेला ॥ २ ॥
अंडा पार सार लखि सूरति । सुन्नी सुन्न सुहेला ॥ ३ ॥
चढ़ि गई धाय जाय गढ़ ऊपर । शब्द सुरति भया मेला ॥ ४ ॥
ये सब खेल अपेल अमेला । सिंध नीर नद मेला ॥ ५ ॥
जल जल धार सार पद जैसे । नहीं गुरू नहिं चेला ॥६॥
नाभा नैन ऐन अंदर के । खुलि गये निरखि निहाला ॥७॥
संत उचिष्ठ वार मन झेला । दुरलभ दीन दुहेला ॥८॥

॥ शब्द कबीर साहिब ॥

कबीर पुकारा, मैं तो जगत से न्यारा ॥टेक॥
आदि पुरुष अविगत अविनासी । दीप लोक पद पारा ॥१॥
सुरति सहर हेर हिय द्वारा । सब्द न सिंध अकारा ॥२॥

काल न जाल स्वाल नहिं बानी । सो घर अघर हमारा ॥३॥
अंत न आदि साध कोइ जानै । सतगुरु पदम निहारा ॥४॥
नहिँ तहँ आदि निरंजन जोती । सत्त पुरुष दरबारा ॥५॥
ब्रह्मा बिस्नु बेद बिधि नाहीँ । नहीँ आदि ओंकारा ॥६॥
ये सच यार प्यार लख पूरा । रूप न रेख जहूरा ॥७॥
कहै कबीर संत वोहि द्वारा । चकवा चौक हुकारा ॥८॥

॥ दोहा ॥

फूलदास तुलसी कहै, सन्त सब्द की रीत ।
जो जो गये अगाध को, सोइ सोइ सन्त समीर ।

॥ छन्द ॥

तुलसी गति गाई सब्द सुनाई, पंथ अगम सुर्त सार भई ॥१॥
नानक और दादू दरिया साधू, मीरा सूर कबीर कही ॥२॥
नाभा नभ जानी भाखि बखानी, सुरति समानी पार गई ॥३॥
सब की बिधिन्यारी एक बिचारी, सब संतन इक राह लई ॥४॥
सब चढ़े इक धारा पहुँचे पारा, लखा गगन गति गवन गई ॥५॥
कोइ करिहै संका महा मतिरंका, तुलसी डंका दीन्ह सही ॥६॥
ये सतमत भाखा देखा आँखा, साखि सब्द में गाइ कही ॥७॥
ये करी बखाना भेष न जाना, सब्द निसाना सुरति लई ॥८॥
कागद नहिँ स्याही ग्रन्थन पाई, गाइ गाइ सब जनम गई ॥९॥
कोइ संत लखे हैं न्यारो कहिहैं, कथन बदन में नाहिँ नहीँ ॥१०॥
जो पोथी पढ़िहैँ ज्ञान से अड़िहैँ, नरक परैँ पन भक्ति नहीं ॥११॥
बिन भक्ति न पैहैं जनम गमैहैं, संत सरन बिन राह नहीं ॥१२॥
जिन जिन यह मानी सत कर जानी, भक्ति संत सब भाखि कही १३
संतन को जाना शब्द पिछाना, सुरति समानी आदि लई ॥१४॥
तुलसी तत सारा अगम निहारा, गुरु पिया पद पार लई ॥१५॥
महँु पुनि गाई संत सुनाई, संत सब्द रस अगम कही ॥१६॥
सब संत पुकारा महँ पुनि लारा, सारा चारा पार गई ॥१७॥
चौथा पद गाई संत सुनाई, सुरति सैल अज आदि लई ॥१८॥

संतन कर भेदा जानै न बेदा, खेद कर्म को दूर भई ॥१९॥
संतन की सरना दुख सुख हरना, बरना तुलसी तोल लई ॥२०॥
संतन मुख भाखी अगम की आँखी, उनसे ताकी तरक कही ॥२१॥
कोइ बूझै न संधा पड़ा जम फंदा, अंधा जग को बूझ नहीं ॥२२॥
संतन बिधि लाई सब्द सुनाई, भई बानी सब गाइ कही ॥२३॥
सब्द जो गावै आँखि न आवै, बिन सतसंगति भर्म सही ॥२४॥
छूटै सब टेका बूझै एका, ये संतन ने सार दई ॥२५॥
तुलसी गोहराई बूझ न पाई, बिन बूझे सब खानि मई ॥२६॥
दीन निहारा संत पुकारा, सब्द बिचारा पार भई ॥२७॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सब्द बिचार, फूलदास ये बिधि सुनौ।
सब्द करै निरधार, सार पार पद लखि परै ॥१॥
सब्द सब्द बहु भेद, ये अभेद गति भाखिया।
तुलसी ता की धार, शब्द निरखि रस जिन पिया ॥२॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सब्द संत जो भाखा। निज निज संत जो गये अगाधा ॥
अपने अपने सब्द बनाये। अपनी अपनी साखि सुनाये ॥
जो जो गये अगम के द्वारा। पंथ अगम के उतरे पारा ॥
पार जाय विधि सगरी भाखी। जो जो देखा अपनी आँखी ॥
अपनी देखी कही बखानी। आदि अंत जो जिन ने जानी ॥
कही संत और कही कबीरा। सब मिलि कही एक बिधि हीरा ॥
पहुँचे पहुँचे एक ठिकाना। बिन पहुँचे का और बखाना ॥
जो जो संत जो भये सनाथा। पहुंचे पार सार रस माता ॥
बरनि न जाइ संत गति न्यारी। मोरी मति कछु नाहिं बिचारी ॥
संतन की गति कस कस गाऊँ। दादू की कहौं साखि बताऊँ ॥
दादू सब्द संत गति गाई। सब्द संत उन भाखि सुनाई ॥
उनकी निसा साखि दरसाऊँ। तुलसी उनकी अगम सुनाऊँ ॥

॥ शब्द (३) दादू साहिब ॥

दादू जानै न कोई, संतन की गति गोई ॥ टेक ॥
अविगत अंत अंत अंतर पट । अगम अगाध अगोई ॥१॥
सुन्नी सुन्न सुन्न के पारा । अगुन सगुन नहिँ दोई ॥२॥
अंड न पिंड खंड ब्रह्मंडा । सूरति सिंध समोई ॥३॥
निराकार आकार न जोती । पूरन ब्रह्म न होई ॥४॥
इनके पार सार सोइ पैहै । तन मन गति पति खोई ॥५॥
दादू दीन लीन चरनन चित । मैं उनका सरनोई ॥६॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाय, फूलदास सुन संत गति ।
दादू साखि बताय, निसा बूझि कै यह कही ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनियौ चित लाई । यह दादू की साखि बताई ॥
जो संतन ने देखा माहीँ । रूप रेख बिन रहै अकाई ॥
तन भीतर जो लखा अलेखा । रूप रेख ना रहै अदेखा ॥
जा के रूप रेख कछु नाहीँ । सो वो देखा घट के माहीँ ॥
पुनि दादू की साखि बताऊँ । सब्द एकजो गाइ सुनाऊँ ॥
जो जो संतन दिल में देखा । जिन जिन भाखा अगम अलेखा

॥ शब्द (४) दादू साहिब ॥

दादू दिल बिच देखा, रंग रूप नहिँ रेखा ॥टेक॥
हद हद बेद कितेब बखानै । मैं कहा बेहद लेखा ॥१।
मुल्ला सेख सैयद और पंडित । ये मुए अपनी टेका ॥२।
राम रहीम करीम न केसो । हरि हजरत नहिँ एका ॥३।
वो साहिब सबहिन से न्यारा । कोइ कोइ संतन पेखा ॥४
दादू दीन लीन हुइ पाया । क्योँ कहूँ अगम अलेखा ॥५
जिनजिन जाना तिन पहिचाना । मिटि गया मन का धोखा ॥६

॥ शब्द (५) दादू साहिब ॥

दादू देखा मैं प्यारा, अगम जो पंथ निहारा ॥ टेक ॥
अष्ट कँवल दल सुरति शब्द मेँ । रूप रेख से न्यारा ॥

पिंड ब्रह्मंड और बेद कितेबै । पाँच तत्त के पारा ॥२॥
सत्त लोक जहँ पुरुष बिदेही । वह साहिब करतारा ॥३॥
आदि जोत और काल निरंजन । इनका वहँ न पसारा ॥४॥
राम रहीम रब्ब नहिँ आतम । मुहम्मद नहिँ अवतारा ॥५॥
सब संतन के चरन सीस धर । चीन्हा सारा असारा ॥६॥

॥ शब्द (६) दादू साहिब ॥

दादू दरस दिवाना, आरसी यार दिखाना ॥ टेक ॥
आधी रात गगन मध चंदा । तारा खिलक खिलाना ॥१॥
चटकी सुरति चढ़ी ज्यों चकरी । फूटि गया असमाना ॥२॥
लै लगी जाइ महल मध ऊपर । सूरति निरत ठिकाना ॥३॥
मिल गया यार प्यार बहु कीन्हा । खुलि गया अरस निसाना ॥४॥
आदि अन्त देखा मध म्याना । क्योंकर करूँ बखाना ॥५॥
गुप्त बात गुप्तै भई गाफिल । अंदर माहिँ छिपाना ॥६॥
मैं कछु कीन लीन सोइ जानत । और कहूँ नहिँ चीन्हा ॥७॥
दादू पीर मिटी परलै की । जनम मरन नहिँ माना ॥८॥

॥ सोरठा ॥

जो देखा घट माहिँ, जिन जिन संतन सब कही ।
रूप रेख नहिँ ताहि, सो अदृष्ट अन्दर लखा ॥

॥ चौपाई ॥

सब संतन ने पाया लेखा । जोई अगम पंथ जिन देखा ।
जोइ जोइ संतन भाखि सुनाई । सो सब देखा अपने माईं ॥
बिन देखे नहिँ संत पुकारा । देखे बिन कहै झूठ लबारा ।
फूलदास बूझो मन माईं । संत कही जो कबीर गुसाँईं ॥
संत कबीर से अंतर नाहीं । भिन्न कहै सो नरकै जाई ॥
जो जो संत गये निज धामा । सो कबीर ने कहे मुकामा ॥
चढ़े संत जो गगन ठिकाना । उनकी गति काहू नहिँ जाना ॥
संत मते को दुइ कर जानै । ता तेँ परै नरक की खानै ॥
संत की निन्दा करै बनाई । आदि अंत मो भटका खाई ॥

संतन की गति भेष न जाना । संत बिना कहुँ नाहिँ ठिकाना ॥
भेष भुलाना भौ के माहीँ । रहै कालबस जम की छाहीँ ॥
मैं कछु कही न निन्दा भाई । जस जस देखा तस तस गाई ॥
मुख अपने निंदा नहिं गाऊँ । और संत की साखि सुनाऊँ ॥
औरो और और पुनि गाऊँ । तिन तिन की मैं साखि बताऊँ ॥
तुलसी संत भेष कर चेरा । ये भौ सिंध अनीत अनेरा ॥
तुलसी संत चरन की धूरी । दादू सब्द बताऊँ मूरी ॥
उनकी साखी सब्द बताऊँ । पुनि दादु की साखि सुनाऊँ ॥
भेष भूल सब जग के माईं । ता कारन ये सब्द सुनाई ॥
भेष भुलान खान सुख कारन । ता तेँ दादू सब्द पुकारन ॥

॥ शब्द (७) दादू साहिब ॥

दादू भेष भूलाना, जम संग कीन्ह पयाना ॥टेक॥
षट दरसन पंडित और ज्ञानी । पढ़ि पढ़ि मुए पुराना ॥१॥
परमहंस जोगी सन्यासी । बेद करत परमाना ॥२॥
आतम ब्रह्म कहैं अपने को । सब में हमीं समाना ॥३॥
ता से भौजल पार न पावैं । अहंग ब्रह्म मन माना ॥४॥
मन बिहंग की खबरि न जानै । तन निहंग है बाना ॥५॥
जग जज्ञास मोह मद माते । ता से बहु लपटाना ॥६॥
वे साहिब समरथ हैँ दाता । तिन को नहिँ पहिचाना ॥७॥
वा को भेद बेद नहिं पायो । अगम पंथ नहिँ जाना ॥८॥

॥ शब्द (८) दादू साहिब ॥

दादू दो दिन रहिहौ, जम दुख बंधन सहिहौ ॥टेक॥
तू मत जान ज्ञान आतम कस । इन बस धोखा खैहौ ॥१॥
ये संसार भाव भय भावत । खोजत फिरि फिरि बैहौ ॥२॥
भेष भुलान खान सुख कारन । सार न पुनि फिरि पैहौ ॥३॥
ये जग खोट मोट कौँ पूजत । सूझत स्वारथ दैहौ ॥४॥
ये भौ-सिंध अथाह अपारा । बूझि बूझि पग दैहौ ॥५॥
जम की जाल बड़ी अति दारुन । आपे आपु बँधैहौ ॥६॥

दादू कहत पुकारि जगत जग । भेष सबै सुनि लैहौ ॥७॥
भौजल पार जबै होइ जैहौ । सूरति शब्द समैहौ ॥८॥

॥ शब्द (६) दादू साहिब ॥

दादू दीन अवाजा, जग जिव भेष न लाजा ॥टेक॥
सिव सनकादि सिंगी पारासर । इन कौ सर्‌यो न काजा ॥१॥
ये तन तोर काल कर खाजा । छिन छिन सिर पर गाजा ॥२॥
सुकदेव ब्यास जनक नारद मुनि । घट घट उन पर छाजा ॥३॥
तू केहि लेखे माहिँ न बचिहै । पचि पचि मरत अकाजा ॥४॥
बाघ उपाव करै गउ कारन । जम दल यहि बिधि साजा ॥५॥
पल में छुटि जैहै सुख सम्पति । ज्यों माखी मधु राजा ॥६॥
राति दिवस धावै धन कारन । मरन काल कित आ जा ॥७॥
जिनकोइ सुर तिसत्त लखि चीन्हा । जनम मरन भौ भा जा ॥८॥
दादू भेष भेद जब छूटै । सूरति शब्द समा जा ॥९॥
जब भया सिंध बुंद का मेला । वोहि साहिब को लाजा ॥१०॥

॥ शब्द (१०) दादू साहिब ॥

दादू कहत पुकारी, कोइ मानै नाहिँ हमारी ॥टेक॥
पंडित काजी वेद कितेबा । पढ़ि पढि मुए लबारी ॥१॥
ये तीरथ वे हज को जाते । बूड़े भौजल धारी ॥२॥
हिंदू तुरक दीन दोउ भूले । करम धरम पचि हारी ॥३॥
नूर जहूर खुदा हम पाया । उतरे भौजल पारी ॥४॥

॥ शब्द (११) दादू साहिब ॥

दादू दीन अधीना, मैं मति काहू न चीन्हा ॥टेक॥
देह भाव जानत जग सारा । मैं तिन से तस कीन्हा ॥१॥
मैं अति नीच जाति कर वेहना । का कहुँ बूझि न सैना ॥२॥
जो कछु कही सही नहिँ लीन्हा । पुनि पुनि उत्तर दीन्हा ॥३॥
मैं कहा सार पार परमारथ । स्वारथ जग मति हीना ॥४॥
जो कोइ कहन गहन लखि लीन्हा । कही संतन मत भीना ॥५॥
आठ अरब बानी पद पूरन । सूर न सार यकीना ॥६॥

दादू दूरि गाँव बसि पारा। धुनि कपास रस पीना ॥७॥
सतगुरु संध मारग अति झीना। ज्यों जल तैरत मीना ॥८॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी भेष भुलान, जानि मानि भौ में लसा।
फँसा रस सार न जान, जानि कानि बूझी नहीं ॥

॥ चरचरी ॥

तुलसी सब तोल देख, भेष भाव जाई ॥ टेक ॥
तुलसी रस खान पान, जान मान माईं।
ऐसा मन भूल भेष, भिन्न चिन्ह न पाई ॥ १ ॥
संतन से बैर हेर, साथ चहत नाईं।
तुलसी सब भेष भूल, अपने हँग[1] माईं ॥ २ ॥
देखा सब झार झार, पार कोउ न पाईं।
लाई लै लार लार, जग असार साईं ॥ ३ ॥
भूलो हक[2] सक नाहिँ, तुलसी कछु गाई।
पैहै सुख संत साथ, और कहूँ नाहीं ॥ ४ ॥
संत साँच और काँच, पाँच भूत माईं।
तुलसी सब हेर देख, भेष अनेक ठाईं ॥ ५ ॥
देखा सब जोइ जोइ, चौज[3] कहुँ न पाई।
तुलसी मन टूट फूट, छूट छाँड़ ताही ॥ ६ ॥
बिना संत सत्त तत्त, हाथ नहीँ आइ।
देखा सब जोइ दोइ, द्वार खानि माईं ॥ ७ ॥
तुलसी निरखा निहार, पार सार नाहीँ।
चित्त कहन बर्त बूझ, कर्म काल जाई ॥ ८ ॥
मैं तो कही पेखि नैन, देख भेद जाइ।
बूझा नहिँ सुपन सैन, ऐन आद नाहीँ ॥ ९ ॥
ता से मन चेत बूझ, देखि दृष्टि जाई।
तुलसी तन तोड़ फोड़, मोड़ पोढ़ पाई ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

भेष भुलान सबै जग माईं। आदि अन्त की खबरि न पाई ॥
जो कोई भेद कहै समझाई। भेष कान पर एक न लाई ॥

(१) हँगता, अहंकार। (२) सत्त, सत्तपुरुष। (३) आनन्द, विलास।

कपरा रँगे भेष भये साधू । बूझै न बस्तु जो आदि अनादू ॥
दया जानि कोइ भेद बतावै । तौ वह नगर रहन नहिँ पावै ॥
गृही भेष सब मारि निकारै । कहै हमरा रुजगार बिगारै ॥
परमारथ नहिँ बूझि गँवारा । पढ़ि पढ़ि बूड़े भव जल धारा ॥
या ते संत मता नहिँ पावै । ता ते जिव भव में रहि जावै ॥
कर्म बंध जिव भरमै खाना । बिना संत नहिँ लगै ठिकाना ॥
फूलदास रेवती सुन दासा । संत मिलै तौ होइ सुबासा ॥
औरजो सुनौजगत सबबोरा । भेष टेक में बूड़ न थोड़ा ॥
संत मता कहुँ देख न आवै । भेष मता सब जगत बुड़ावै ॥
ऐसी सोल पोल कहा कीजै । उपजै बिनसै नित नित छीजै ॥
ऐसी कहा कहा की कहिये । ता से गुप्त मौन होइ रहिये ॥
कोजग अजगुत सिरपर लेही । परी भूल सर्व मत येही ॥

हाल मुसलमान साधू अली मियाँ का

॥ वचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

एक समयइक अचरज भइया । इक फकीर मक्के से अइया ॥
नाम अली तेहि जाति फकीरा । राति भई रहे हमरे तीरा ॥
अल्ला कुह कुह करै निमाजा । हमरे माहिँ देखि मन लाजा ॥
फारिग भये तब खाना खाया । ले आसन कुटिया में आया ॥
हम से खुदा खुदा कर बोले । खुदा नबी बिन कछू न तोले ॥
पूछा अल्ला नबी केहि ठावाँ । उन पुनि ले असमान बतावा ॥
हम पुनि कहा तुम्हारे पासा । मुरसिद मिलै तो होय खुलासा ॥
हमरी बानी कान न लावा । तब दादू का सब्द सुनावा ॥
अली मियाँ सुन हक्क इमाना । मुरसिद दादू किया बखाना ॥
अंदर अली भली कर मानौ । अल्ला अलिफ जुबान बखानौ ॥

॥ अली मियाँ । चौपाई ॥

भूल रसूल रमक दरसावौ । पैगम्बर
पैगम्बर कहि भाखि सुनावौ । मसि

॥ तुलसी साहिब चौपाई ॥

कितनी कही इमान न लावा । गजल एक उन भाखि सुनावा ॥
खुदा खुदाय सब खलक बखानै । खुदा बिना कही एक न मानै ॥

॥ ग़ज़ल अली मियाँ ॥

बंदा बेहोश याद हर दम लावै ।
तेरे बिन .खुदी .खूब कैसे भावै ॥१॥
कीन्हे तैं आफ़ताब .खलक आफ़रीँ ।
कलमा बिन पढ़न कहै कुफ़र काफ़रीँ ॥२॥
तुलसी ये अली ग़ज़ल गाइ सुनाई ।
दादू दुरवेश देश हमहूँ गाई ॥३॥

॥ ग़ज़ल तुलसी साहिब ॥

दिल का दुरवेश एक दादू फ़क़ीरा ।
भाखि कही साखि शब्द मुरशिद पीरा ॥१॥
सुनिये म्याँ अली अलिफ़ बानी उनकी ।
रोज़ निमाज़ा कही अंदर धुनकी ॥२॥
कलमा पढ़ .खुदा खोज अपने माईँ ।
देखो तन बदन बीच भिश्त बनाई ॥३॥
तुलसी की कहन मियाँ दिल में लावो ।
बदन बीच खोज यार अंदर पावो ॥४॥

॥ सोरठा ॥

अली अजब दीदार, पार परख दादू कही ॥
दिल दुरबीन निहार, सो बिचार कह्यो सब्द में ॥

॥ दोहा ॥

फहम फकीरी अरस की, मुकर देखि दुरबीन ।
चीन्ह चलै उस राह को, रूह रहम लौलीन ॥

॥ सोरठा ॥

दादू दूर दराब[१], आबताब[१] पट अबर नहिँ ।
अल्ला अलिफ मकान, अबर फाड़ि पट राह लख ॥ १ ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "दराब" की जगह "निशान" और "आयताब" की जगह "आफताब" है लेकिन आगे की चौपाई की पहिली और तीसरी कड़ी और दादू के शब्द (१२) की टेक और तीसरी कड़ी के देखने से हमारा पाठ शुद्ध समझ पड़ता है।

दिल बिच अलिफ दीदार, स्याम सहर पर रूह लखौ ।
चखौ अरस रस सार, ये बिचार दादू कही ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

दरिया भी दादू बतलाई । अली मियाँ सुन साखि सुनाई ॥
जो सराब दादू भरि पीना । सो सुनि कर के करौ यकीना ॥
आब अलिफ जिन को चलि आई । सो फकीर दुरबेस कहाई ॥
उन कुरान का मझब सुनावा । भिस्त खोज खुद खुदा लखावा ॥
अब दादू का सब्द सुनाऊँ । परस पिया रस लखन लखाऊँ ॥

॥ शब्द (१२) दादू साहिब ॥

दादू दूरि दराबी, पिय रस पियत सराबी ॥ टेक ॥
पियत पियाला मन मतवाला । भोर भई उँजियारी ॥ १ ॥
खूबी खलक खुदी खोइ ख्वाबी । अंदर खिलि गइ स्वाबी ॥ २ ॥
मक्का भिस्त हज्ज को देखा । अबरा आब और ताबी ॥ ३ ॥
अल्ला आदि नबी लख छूटा । रोजा निमाज अजाबी ॥ ४ ॥
मलकुत नासुत जबरुत जा के । लाहुत हाहुत पागी ॥ ५ ॥
लै लगी लामुकाम रबि ही से । जगत जहान खराबी ॥ ६ ॥
दादू दृग दीदार हिये के । चूँ बेचूँ बेज्वाबी ॥ ७ ॥
चौथा तबक रियाजत बाजा । आया अरस अराबी ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

अली मियाँ सुन साखि, दिलै फहम बेदिल हुआ ।
मुए रूह से वाद, साथ स्वाल काफर कहा ॥

॥ चौपाई ॥

अली मियाँ सुन हमरी बानी । गुन गुन मन में बहुत रिसानी ॥
कही कुरान अल्ला मुख बानी । सिंदू को काफर कर जानी ॥
और रसूल पर करौ यकीन्हा । उन फकीर ताजीमी कीन्हा ॥
स्वाल भाखि पुनि आसन लीन्हा । उठकर चलन फिकर मन कीन्हा ॥
हाथ पकरि हम गुसा उतारा । आसन जिमीं डारि बैठारा ॥
हम पर मेहर करो तुम साँइ । अपने दिल में बूझ...

तुम खुदाइ का खोज न पावा । मट्टी महजित को सिर नावा ॥
जो महजित तुम आप बनाई । ता महजित में खोज लगाई ॥
कहौ खुदा तुम सब के माईं । ऐसे कुरान कितेब सुनाई ॥
अपने मुख से सब में भाखौ । मट्टी महजित को फिर ताकौ ॥
समझौ अपने दिल के माहीं । खुदा खोज खोजौ दिल माहीं ॥
पाँच यार मुहम्मद जो भाखा । आग खाक जल पौन अकासा ॥
ता को खोजो अपने माहीं । बिन मुरसिद कोइ खोज न पाई ॥
सब में खुदा कुरान बतावै । करौ हलाल सो दरद न आवै ॥
अपना कुफर चीन्ह नहिं भाई । हिंदू को काफर बतलाई ॥
सुन कर अली मियाँ कछु बूझा । ये तो जवाब खूब कर सूझा ॥
खुसी भये और गुसा उतारा । है खुदाइ सब में इक प्यारा ॥
फिर हमसे वो पूछन लागा । कहौ खुदाइ सब माहिं बिराजा ॥
अली कहै कछु देख न आवै । खोजै खुदा खोज नहिं पावै ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कह म्याँ अली सुन, खुदा भिस्त के द्वार ।
दो अनार लटकत रहैं, कुंजी मुरसिद हाथ ॥१॥
अली मियाँ अचरज भया, कहो बात सब साँच ।
तुलसी भेद बताइये, दीन होय मैं जाँच[1] ॥२॥

॥ चौपाई ॥

कहि तुलसी हम भेद बतावा । भिस्त के द्वार अनार लखावा ॥
येहि अनार पर सुरति लगावो । खुलै द्वार भिस्त तब पावो ॥
तब तुलसी के कदम उन लीन्हा । अली मियाँ आधीनी कीन्हा ॥
हुआ अधीन भेद बतलाई । तब उठि मियाँ राह को जाई ॥
फूलदास बूझौ तुम भूला । हिंदू तुरक भेद दोउ भूला ॥
भूला भेष काल भरमाया । काल अपरबल सबको खाया ॥
संत मते की राह न जानै । काल चाल बिधि कालहि मानै ॥
जम फाँसी में भेष भुलाना । केहि बिधि पावै जीव ठिकाना ॥

---
(१) माँगता हूँ, प्रार्थना करता हूँ ।

ये जग माँहि फाँस जम डारा। संत बिना नहिँ होइ उबारा ॥
बारा[1] मते काल ने कीन्हा। आदि अन्त फाँसी जिव दीन्हा ॥
सतजुग द्वापर त्रेता माईँ। और कलजुग की कहा बताई ॥
अनेक जुगन जुग फाँसी फँसानी। भेद न चीन्हा पड़े पुनि खानी ॥
जब निरगुन बैराट पसारा। सत्त नाम से माँगि लबारा ॥
बारा मते मोहिँ को दीजे। मोरा मता साध अस कीजे ॥
बारा मत की राह चलाऊँ। जा से जीव जगत उरझाऊँ ॥
ऐसे निरगुन माँगा भाई। कालजालमति जिनहिँ चलाई ॥
बारा माहिँ भेष सब भूला। सो जग जाल सहै जम सूला ॥
निरगुन काल जग कीन्हे भेषा। चारो जुग जग बाँधी टेका ॥
भेष किया जग काल कराला। संत बिना नहिँ छूटै जाला ॥
काल भेष जग भये अनेका। अपनी अपनी बाँधी टेका ॥
ता से तुलसी पंथ न कीन्हा। जगत भेष भया काल अधीना ॥
जो जो कहे जीव निरबारा। सो सो फाँसी सब ने डारा ॥
बिन आँखी सूझा नहिँ भाई। बिना संत कहौ कौन लखाई ॥
चीन्है संत तो होइ उबारा। नहिँ तो बूड़ै भौजल धारा ॥
जो कोइ बारा मत को चीन्हा। काल रहै पुनि तासु अधीना ॥
ता पर काल जाल नहिँ डारा। जम होइ दीन ताहि की लारा ॥
संत मिलैँ पुनि मारग पावै। ऐसे जीव लोक[2] को आवै ॥
ये जग भेप काल बस होई। इनकी बात न मनौ कोई ॥
जो कोइ काल भेप पहिचानै। गतिमति भेद संतकर जानै ॥
दस औतार निरंजन जाना। ब्रह्मा बिष्नु काल उत्पाना ॥
वेद कितेब अस फंद पसारा। ये जग काल जाल मत डारा ॥
या को जब चीन्है कोइ प्रानी। मत बारा की राह पिछानी ॥
पुनि बारा से भये अनेका। कहँ लग कहौं पार नहिँ लेखा ॥

॥ फूलदास ॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, स्वामी कहौ तुम्हार।
ये बिधि मो को लखि परी, पुनि कबीर कहि गार ॥

(१) बारह। (२) सत्तलोक।

॥ सोरठा ॥

अनुराग सागर माहिँ, कही कबीर धर्मदास सोँ ।
हम पुनि देखा ताहि, स्वामी यह बिधि सत्त है ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब । सोरठा ॥

तुलसी पूछै बात, फूलदास कहिये बिधी ।
कस कबीर बिख्यात, काल मते बारा कहे ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास यह भाखौ साखी । बारा मते काल कस भाखी ॥
कस कबीर ग्रंथन में गावा । सो बारा की बिधी बतावा ॥
तुम ग्रन्थन मेँ देखा आँखी । सो सब भाखि कहो बिधि ताकी ॥
पहिले तुम भिनि भिनि बतलाई । फिरि तुमको हम बरनि सुनाई ॥
बारा भेद नाम गुन कहिये । भिन्न भिन्न पुनि बरनि सुनैये ॥
कस कबीर ने भाखि बताई । सो बिधि तुम हम को समझाई ॥

॥ उत्तर फूलदास चौपाई ॥

फूलदास अस भाखा लेखा । कही कबीर सो कहूँ बिबेका ॥
तुम ने बचन जो भाखि सुनावा । सो कबीर मुख अपने गावा ॥
तुम भाखा सत नाम से पावा । बारा मते काल लै आवा ॥
या मेँ वा मेँ अंतर नाहीँ । ता की बिधि मैँ बरनि सुनाई ॥
ये कबीर मुख अपने कीन्हा । काल निरंजन को मत दीन्हा ॥
उन अपना खुद ज्ञानै भाखा । तुम ने भक्ति भाव कर राखा ॥
दोनों बिधी एक सम जानो । या मेँ कछू भेद नहिँ मानो ॥
बारा मते काल को दीन्हा । मन अपने परमान जो कीन्हा ॥
ये तो स्वामी सत्त जनाई । कहि कबीर ग्रन्थन मेँ गाई ॥
भाखा सोई सुनाऊँ लेखा । जोइ कबीर ग्रन्थन मेँ देखा ॥
ये कबीर मुख अपने भाखी । बारा मते काल बिधि ताकी ॥
धरमराइ नीरंजन होई । बारा मते दीन्ह हम सोई ॥
अस कबीर ग्रन्थन मेँ गाई । देखी जस बिधि ताहि सुनाई ॥
प्रथम दूत मृतअंध कहावा । दास नरायन नाम धरावा ॥

काल अंस ये नाम नरायन । जीव फाँस फंदा जिन लायन ॥
तिरमिर दूजा नाम बखाना । जाति अहेरी कुफर कहाना ॥
दूत तीसरा भाखि सुनाऊँ । अंध अचेत ताहि कर नाऊँ ॥
सुरति गुपाल नाम तेहि पावा । कह कबीर ऐसी बिधि गावा ॥
चौथा दूत भंगमन होई । झंगा मूल पंथ कहै सोई ॥
पँचवाँ दूत ज्ञानभँग नामा । परचा करन मंत्र को थामा ॥
मकरंद षष्टम दूत कहावा । नाम कमाली तासु धरावा ॥
सप्तम दूत आहि चितभंगा । नाना रूप करै मन रंगा ॥
अष्टम दूत का नाम बताऊँ । अकलभंग तासु कर नाऊँ ॥
नवाँ दूत कर नाम बताऊँ । दूत बिसंभर बरनि सुनाऊँ ॥
अब मैं दसवाँ दूत बताई । नकटा दूत ताहि कर नाँईं ॥
एकादस दूत नाम बतलाऊँ । दुर्गदानी तेहि बरनि सुनाऊँ ॥
द्वादश दूत नाम बतलाऊँ । हंस मुनी तेहि बरनि सुनाऊँ ॥
ऐसे बारा दूत बखाना । अनुराग सागर करत बखाना ॥
साहिब कबीर ऐसी बिधि गावा । सो मैं तुमको भाखि सुनावा ॥

॥ प्रश्न फूलदास चौपाई ॥

तुलसी स्वामी बिधी सुनाई । कस कस मता काल बिधि पाई ॥
याकी विधि मोहिं बरनि सुनैये । सब बिधि नाम दूत कर कहिये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब चौपाई ॥

फूलदास सुनियौ चित लाई । अब या कौ हम बरनि सुनाई ॥
निरगुन काल निरंजन जानौ । सोई याहि मनै पहिचानौ ॥
सत्त सब्द तन माहिं रहाई । वा को छाँड़ि खानि को जाई ॥
बारा मत नहिं कहिया भाई । वाही राह की मती बुझाई ॥
मन ये राह की मति जो राखा । या को बारा की मति भाखा ॥
मन ये द्वैत भाव जग राखा । दूत नाम येही बिधि भाखा ॥
एक नाम बिधि भूला भाई । ता से मन को दूत बताई ॥
ये मन की बिधि कहूँ बखाना । फूलदास सुनियौ दै काना ॥
बारा मत मन ही के जाना । द्वैत न छाँड़ि एक नहिं माना ॥

योँ बारा मत मन के भइया । बारा मत मन नाम कहइया ॥
द्वैत राह मन छाँड़ न भाई । तहँ लगियह मन काल कहाई ॥
द्वैत काल मन यह बिधि गाया । मन मत द्वैत जगत सब आया ॥
मन मत द्वैत वो राह न पाया । ये कबीर ने योँ बिधि गाया ॥
या मन की बिधि बिधि समझाई । बारा दूत मन काल कहाई ॥
ये मत बिधि सब कही बखाना । बारा नाम मनहिँ के जाना ॥
नरायनदास नर मन है भाई । येहि बिधि दास कबीर बताइ ॥
मन मृत अंध दूत बतलाई । मन नित मृत्त करै जग जाई ॥
ये मन तिमर जगत को लावा । या ते तिमर नाम मन पावा ॥
मन जगअंध अचेत करावा । अंध अचेत दूत ठहरावा ॥
सुरति गुपाल नाम तेहि कहिया । सूरति मन्न गोपाल न करिया ॥
मन मत भंग करै जग केरी । मन मत भँग नाम अस फेरी ॥
मन मत ज्ञान करै चित भंगा । मन मत दूत नाम रस रंगा ॥
मन पतंग माया मन राखा । मन मकरंद दूत योँ भाखा ॥
मन अरुचित भंग करै अनेका । चितभंग दूत नाम योँ लेखा ॥
मन अकल जो भंग लगावा । अकलभंग नाम अस गावा ॥
बिषै अमर मन करिकै राखै । सुरति नाम को नेक न ताकै ॥
ताकर नाम बिसंभर दूता । बिष रस जीव किया मजबूता ॥
मन कहँ नकटा दूत कहाई । ज्ञान सुनै फिर बिष रस खाई ॥
या को लज्जा नेक न आवै । नकटा होइ पीछे पुनि धावै ॥
नकटा नाम दूत येहि जानौ । याको साखि न कोऊ मानौ ॥
मन दुर्ग[1] गुन के दान चुकावै । गुन तीनोँ से जग बौरावै ॥
दुर्ग दानी येहि मन को जाना । अस दुर्ग दानी नाम कहाना ॥
या की बात सत्त कर मानो । येहि बिधि मन को दूत बखानी ॥
यह मन निर्मल सुरति कराई । मन होइ हंस सुरति घर जाई ॥
हंस मुनी होइ दूत उड़ाई । सुरति सब्द घर अपने जाई ॥
सत्य नाम पद पहुँचे भाई । चौथा पद रस पिये अघाई ॥

(१) देखो नोट पृष्ठ १४, भाग १ ।

मुनि होइ हंस ताहि कर नामा । बारा मत मन के पहिचाना ॥
यह कबीर ने भाखा पेखा । औरो संत यही बिधि लेखा ॥
ये सब मन के मते बताये । मन से पंथ भेष जग आये ॥
मन वाहर कोइ पंथ न होई । ये सब मते काल कर जोई ॥
मन से भिन्न सुरति को पावै । सुरति जाइ पद नाम समावै ॥
सो बारा से न्यारा होई । सो जिव अमर पंथ को जोई ॥
मन से राह सुरति नहिँ जाने । सो सब पंथ काल मत साने ॥
यह महंत मन अंधा धुंधा । येहि माँ काल रखावा फंदा ॥
दास कबीर येही पुनि भाखा । हमहुँ दीन्ह येही बिधि साखा ॥
वह कबीर यह तुलसी लेखा । मन मानै तौ करौ बिबेका ॥
तुलसी संत चरन की आसा । संत चरन मेँ सुरति निवासा ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास मत भाखिया, मते काल के नास ।
बारा मत मन के बसे, जग्त भेष के पास ॥

॥ छंद ॥

बारा मत गाई मनहिँ लखाई । बूझ बुझाई राह कही ॥१॥
तुम अंतै गावौ भेद न पावौ । मनहिँ काल घट घाट मई ॥२॥
या को नहिँ बूझा अंत न सूझा । ता से तुम को भूल रही ॥३॥
जिन मन को जाना सुर्त पिछाना । निरत तोल असमान गही ॥४॥
संतन निज जानी करी बखानी । महुँ पुनि उन सम गाइ कही ॥५॥
मन की विधि जानी सुरति पिछानी । बिन सूरति यह राह नहीँ ॥६॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै बुझाइ. फूलदास सूरति लखौ ।
ये चौका येहि पान, सुरति जाति पद रस चखौ ॥

॥ चौपाइ ॥

सुरति चीन्ह रस जानौ भाई । तब वा घर का मारग पाई ॥
कमठ ध्यान कछुवा मत ताकौ । ऐसी सुरति नाक से राखौ ॥
ज्यौं चकोर चंदा को ताकै । येहिबिधिसुरतिनाम रस चाखै ॥
सूरज-मुख पषान इक होई । रवि सन्मुख तेहि पावक जोई ॥

पथरी सूरज सन्मुख लावै । तत खन तामें अगिनि समावै ॥
चन्द्र मुखी इक पथरी भाई । सन्मुख चंदा जाय दिखाई ॥
तत खन नीर चुवै तेहि माईं । देखो पथरी हाल मँगाई ॥
ऐसे दृढ़ करि सुरति लगावै । चूवै अमी नाम रस पावै ॥
चौका पान झूठ है भाई । सूरति नाम पान से पाई ॥
भाखा संत सरन को चीन्हा । सुरति पान लखि होइ यकीना ॥
नील सिषर खिरकी के पारा । वहँ से ताकै अगम दुवारा ॥
अलख पलक से न्यारा होई । खलक राह सब छूटै सोई ॥
निस दिन सुरति गगन में राखै । झँझरी सुरति नजर से ताकै ॥
येहि बिधि निस दिन सुरति लगाई । मन में इष्ट भरम नहिं लाई ॥
ऐसे सुरति द्वार पर खेला । स्याम सपेदी न्यारी सैला ॥
स्याम लोक पुनि सेतहि दीपा । संखचक्र मध पुनि एक सीपा ॥
वा के परे बंकगढ़ न्यारा । सुख मुनि सैल मानसर पारा ॥
वा के परे त्रिबेनी घाटी । ता से निकरि अगमपुर बाटी ॥
करि असनान अगम को धावै । तब साँचे सतगुरु को पावै ॥
चारि कँवल द्वै भीतर माईं । ता में पैठि द्वादस में जाई ॥
ता के परे पुरुष इक देखा । रूप रेख बिन अगम अलेखा ॥
अठमेवा पूरुष को जाना । अठवाँ लोक तेहि संत बखाना ॥
कोउ कोउ आठ अटारी भाखो । कोउ कोउ आठ महल कहै जाको ॥
संत बिना कोउ भेद न पावै । ताते तुलसी येहि विधि गावै ॥
यह बिधि भेष पंथ में नाहीँ । संत मिलै तो पावै राही ॥
सूरति चढ़ै गगन को धावै । तौ अठमेवा पुरुष को पावै ॥
पाँच बासना मन से जावै । तब मन राह पुरुष की पावै ॥
नरियर ऐनक मुकर लगाई । मन मोड़ै पुनि बास उड़ाई ॥
तीनि गुनन का तिनुका तोड़ै । इंद्री गौ घृत रित को मोड़ै ॥
कदली छेद बास चढ़ पारा । सेत के परे निरखि वहि द्वारा ॥
सो पारी जाइ पवन सो पावै । सेत सुपारी पुनि दरसावै ॥

यहि बिधि चौका जो कोई जानै । सोई कबीर पंथ हम मानैं ॥
और अनेक बिधि कस कस कहिये । स्याना होइ समझ लखि लैये ॥
थोड़े में लखि लेइ सयाना । बहुत बहुत क्या करूँ बखाना ॥
सूच्छम बूझ भेद हम भाखा । थोड़े माहिं भेद कह्यो ता का ॥
या से भेद संत कर न्यारा । कोइ बूझै संतन का प्यारा ॥
जिन पर संत दयाला कीन्हा । अगम बूझ कोइ बिरले लीन्हा ॥
कहा कहा कहूँ अगम की बाता । तुलसी बूझ संत सँग साथा ॥
ता से मौन मौन होइ रहिये । जस जग देखि ताहि बिधि कहिये

भेद राम रामायण के रचने का

॥ चौपाई ॥

भेष अबूझ जगत नहिं जानै । कस कस कहूँ कोऊ नहिं मानै ॥
जग अपनी बिधि में सब माना । ता से उन से करी बखाना ॥
राम रमायण माहीं गाई । सात काँड कहि अस बिधि भाई ॥
रावन राम किया सम्बादा । औरौ कही बनाइ जियादा ॥
जग सब अंध फंद गति बूड़ा । राम राम गति जानि अगूड़ा ॥
उन अंधरन मिलि कै हम गायो । यहि बिधि राम चरित्र सुनायो ॥
सब जग कहै राम रस भाखी । राम बिना कछु इष्ट न राखी ॥
तुलसी तौ भये राम उपासी । येहि बिधि सकल जगत करै हाँसी ॥
सब अंधन में मह्रूँ पुनि चाटा । कस कस कहूँ जगत सब खोटा ॥
राम काल जग खाइ बढ़ाया । मैं दयाल पद औरै गाया ॥
राम काल जग कारन भाखा । सो सूझा नहिँ इन की आँखा ॥
राम जगत हम येहि बिधि गावा । नहिँ देखा जग मोर निभावा ॥
राम राम कछु इष्ट न मानी । जग अँधरे को कहा बखानी ॥
राम चरित्र राम बिधि राखी । दसरत राम अजुध्या भाखी ॥
ये नहिँ अगम राह कर पंथा । अगुन सगुन जहँ नहिँ तहँ संता ॥
निरगुन सरगुन इष्ट न जाना । चौथा पद सत नाम बखाना ॥
अगुन सगुन दोउ काल की फाँसी । जग में कहूं जगत करै हाँसी ॥

---

(१) चाटा = चार ।

सो साहिब पद इन से न्यारा। तीनि लोक निरगुन के पारा॥
निरगुन सरगुन दोउ न जाई। तेहि घर संत करैं पासाही[१]॥
तुलसी इष्ट संत को जाना। निरगुन सरगुन दोउ न माना॥
जो जो संत अगम गति गाई। निरगुन सरगुन नहिँ ठहराई॥
जो कोइ बूझै तुम कस गावा। राम राम कहि ग्रंथ बनावा॥
हम कछु और भेद दरसावा। जब अबूझ अँधरा समझावा॥
जो ग्रंथन में गाइ सुनाई। जियत न मिलै मुए कस पाई॥
मैं मति ठीक ठीक कर गावा। पंडित भेष जगत नहिं पावा॥
राम राम कहि सब जग मरिया। आदि अंत मध कोउ न तरिया॥
राम जो कहै परै भौ खानी। राम मरम मन आप न जानी॥
जो कोइ करै राम की टेका। सो भौ भरमै खानि अनेका॥
तुलसी सत्त सत्त कहि भाखी। जस जस सूझ जौन जेहि आँखी॥
फूलदास बिधि सुनहु बनाई। येहि बिधि तुलसी ग्रंथन गाई॥
और कबीर दादू रैदासा। दरिया नानक अगम तमासा॥
सूरदास नाभा अरु मीरा। औरो संत अगम मति धीरा॥
अरु अस बिधि सब साखि बनाई। सो सो सभन अगम गति गाई॥
जस जस मैं पुनि भाखि सुनावा। संत कृपा रज महुँ पुनि गावा॥

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुनु बैन, आदि सैन अंतै कही।
जो कबीर मत ऐन, संत सार लारै लई॥१॥
ये संतन मत सार, जो अगार अंदर लखा।
चखा सुरति पद सार, आदि अंत बिधि सब लखी॥२॥

॥ दोहा ॥

तोल बोल जेहि लखि परै, तुलसी निरखि निहार।
सार पार सूरति करै, तब लख लोक अगार॥

॥ राग बिलावल ॥

तुलसी जग तरक तोल, बोल हेर हारा॥ टेक॥
देखो दुर्ग काल जाल, माँगै स्वर्ग बास हाल।

(१) बादशाहत, राज।

लिये मोह भरम जाल, ख्याल खोजि पारा ॥
बूझै नहिं साध संत, खोजै नहिँ आदि अंत ।
पावै कस पिया पंथ, बूड़ै भौ धारा ॥
ऐसा भौ भरम माहिँ, काम क्रोध लारा ॥१॥
राम प्रिये परन ठान, मन से सुत त्रिये मान ।
माया बस परत खानि, बूझ खोज पारा ॥
येहि बिधि अज्ञान बास, बूझौ मृत अंत नास ।
प्रीति मुक्ति कह अकास, स्वाँस नास न्यारा ॥
ऐसी बुद्धि हीन चीन्हि, बूझि ले गँवारा ॥२॥
चाहत पद राम बास, रामहिँ पुनि होत नास ।
वोहू पुनि काल फाँस, आस मौत मारा ॥
वा से कोउ करौ न हेत, बूझौ नर अंध अचेत ।
सूरति छबि नाम लेत, चौथे पद पारा ॥
याही व्रत बान ठान, संत पंथ न्यारा ॥३॥
देखौ कृत कर्म काग, या से पुनि निकस भाग ।
साधौ सत सुरति लाग, लखि अकास पारा ॥
ऐसी लख मान सीख, नाहीँ भौ खानि नीक ।
ऐसी अज अमर लीक, तुलसी तन छारा ॥
याही घट खोज रोज, चौज मौज मारा ॥४॥
भाखा सत मत पसार, ता का भौ भिन अपार ।
चाखा पद मूर सार, जाहिर जग सारा ॥
पावे सत मत्त सार. देखै अगमन बिचार ।
उतरौ भौ सिंध पार, नौका भौ वारा ॥
तुलसी घर घोर सोर, निरतौ चित चारा ॥५॥
तुलसी तन माहिँ पैठि, छाँड़ौ नर सकल टेक ।
आदि और अंत देखि, टेक एक सारा ॥
कहनी मन में बिचार, तेरा कोउ ना निहार ।

निरखो नैना पसार, वाहि को अधारा ॥
तुलसी ये खूब अजूब, पावै मन मारा ॥६॥
मो को सब जगत कहत, तुलसी के राम टेक ।
जाना निज एक अलेख, संतन के लारा ॥
जा के नहिँ रूप रेख, देखा जो जाइ अदेख ।
ऐसा पद पार पेख, कोटि राम चेरा ॥
तुलसी तत करि बिचार, राम खानि घेरा ॥७॥
तुलसी सतगुरु की दृष्ट, ता से निरखा अदृष्ट ।
सत्त लोक पुरुष इष्ट, वे दयाल न्यारा ॥
मोरी लौ चरन लार, छिन छिन निरखत निहार ।
कीन्हा पद पूर पार, काल जाल मारा ॥
तुलसी ये जगत भ्रष्ट, देख मैं दिदारा ॥८॥
तुलसी ये अंड खंड, निरखा सगरा ब्रह्मंड ।
मारा मन काल डंड, छाँड़ छूट न्यारा ॥
धरती और चंद सूर, निरखा सगरा जहूर ।
लीन्हा रन खेत सूर, संतन मत सारा ॥
तुलसी दीदा निहार, भागो बटपारा[1] ॥९॥

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुन बात, जगत भूल बिधि योँ कही ।
राम रहै भौ खानि, जा की आसा जग महीँ ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सब बिधी बताई । जगत राम हम यहि बिधि गाई ॥
हम संतन मत अगम बखाना । हम तो इष्ट संत को जाना ॥
संत इष्ट लखि वार अरु पारा । उन चरनन सूझा सत सारा ॥
उन सम और इष्ट नहिँ भाई । राम करम सब भौ के माईँ ॥
संत अगम घर कीन्ह पयाना । सो घर राम न सुपने जाना ॥
राम करम बस भौ के माईँ । संत अगम घर नित प्रति जाई ॥

(१) ठग ।

संत जाइ निरगुन के पारा । राम रहै निरगुन भौ वारा ॥
संत जाइ निरगुन जहँ नाहीँ । सरगुन की कहौ कौन चलाई ॥
सरगुन निरगुन दोउ से न्यारा । वा घर संत करै दरबारा ॥
निरगुन राम भौ जग में आई । संत अगम घर अपने जाई ॥
राम रहा तिहुँ लोक समाई । कर्म भोग भौ खानि रहाई ॥
तीन लोक के चौथे पारा । वा से परे संत घर न्यारा ॥
राम काँच सम की मत जाना । संत गती हीरा परमाना ॥
वो पैसे में जग ले आवै । राम काँच मन जग को भावै ॥
संत अगम हीरा गति न्यारी । केहि बिधि पावै जगत भिखारी ॥
ये मत बिरले खोज कोउ कीन्हा । संत कृपा से हीरा चीन्हा ॥
जो जेहि संत लखावै भाई । जब वह हीरा हाथै आई ॥
वो हीरा पत्थर मत जानौ । हीरा नाम अगम घर मानौ ॥
वो हीरा चौथे पद पारा । राम जगत जौहरी निहारा ॥
राम जगत जौहरी पै नाहीँ । हीरा अगम संत पै पाई ॥
संत कृपा कोइ दास निहारा । संत चरन लागे सोइ लारा ॥
राम काँच चूरी जग माहीँ । तिरिया पहिरि हाथ में जाई ॥
फूटै बिनसै बहुरि बनाई । धक्का लगे फूट जिमि जाई ॥
टूक टूक चूरीगर लीन्हा । घरिया करम आँच पुनि दीन्हा ॥
घरिया करम माहिँ पुनि डारा । चूरी मनियाँ बहुरि सँवारा ॥
ले बजार गलियन के माईँ । करि खरीद ले तिरिया जाई ॥
पुनि कमनीगर कहत पुकारे । नीच बुद्धि तिरिया के लारे ॥
ऐसा नीच जगत मति जानी । राम काँच जेहि अगम बखानी ॥
राम राम विधि ऐसी जाना । चूरी फूट कमनीगर आना ॥
तोड़ फोड़ भट्टी औटाई । ये विधि राम कर्म भौ माहीँ ॥
तन भट्टी कमनीगर काला । ये जग खान राम बेहाला ॥
ता को जाय जगत मन लाई । ता की कहो कौन गति गाई ॥
राम आप कर्मन वस परिया । कहौ तासे जग कस कस तरिया ॥

राम राम मन बूझौ भाई । मन को राम संत गोहराई ॥
देखौ सब संतन की साखी । बूझि ज्ञान जब खुलिहै आँखी ॥
मन जो राम को जपै बनाई । मनहिँ राम को गारी लाई ॥
मन से कहत बहुत यह खोटा । राम जपे केहि बिधि है मोटा ॥
मुख से मन को खोट लगावै । वही राम मन इष्ट बतावै ॥
राम इष्ट मन गारी दइया । तुम्हरा ज्ञान आहि कस भइया ॥
राम राम जपिया दिन राती । मन कौ खोट कहौ केहि भाँती ॥
मन को खोट देउ तुम गारी । इष्ट राम पर परिहै सारी ॥
अपने मन में ज्ञान बिचारा । बूझ करौ सतसंगति लारा ॥
जग सब भूल भूल के माहीँ । बुद्धि कर्मबस बूझ न आई ॥
भेष पंथ सब झारि बिचारा । बहु पुनि परे राम की लारा ॥
राम राम पुनि आपुहि गावै । जो कोइ बूझि ताहि बतलावै ॥
उन से बूझ राम कहँ होई । कह सब माहीँ रहा समोई ॥
राम राम सब माहिँ बताई । चारि खानि चर अचर समाई ॥
येहि बिधि मुख से बोलै बाता । नर पशु पंछी सब के साथा ॥
पूछौ नर में राम बतावै । कंठी बाँधि चेला ठहरावै ॥
राम राम बिधि सब में गावै । पुनि चेला कस कस ठहरावै ॥
मुख से राम कहे सब माहीँ । पुनि पूछै सेवक बतलाई ॥
सेवक मन से ता को जानै । फिर कस राम को स्वामी मानै ॥
स्वामी सब के माहिँ समावा । पुनि सेवक कस कस बतलावा ॥
राम बसा सब जग के माहीँ । ये तो जग स्वामी भया भाई ॥
सब घट माहीँ राम बिराजा । घट मेँ रामहिँ करै अवाजा ॥
चेला करि तुम नाम पुकारी । बोलै को लख दृष्टि पसारी ॥
को अवाज चेला मेँ दीन्हा । को बोलै केहि चेला कीन्हा ॥
बोलनहार राम बतलावौ । सिष्य करौ सेवक ठहरावौ ॥
कस कस बुद्धि तुम्हारी भाई । बुद्धि गई मति ज्ञान हिराई ॥
राम राम करि मुक्ति तुम्हारी । बोलै चेला राम बिचारी ॥

बोल राम तुम चेला कीन्हा । चेला मुक्ति कौन बिधि दीन्हा ॥
बोल राम रित चेला थापा । बुद्धि गई तुम बूड़े आपा ॥
बूझौ खूब खूब कर देखौ । तुलसी बचन हृदय में पेखौ ॥
तुलसी बूझ अबूझ बिचारा । साँच झूठ परखौ निरधारा ॥
मन गुन ज्ञान बुद्धि सँग बूझो । तुलसी नहिँ कछु कही अबूझो ॥
निंदा भाव कीन्ह कछु नाहीँ । निंदा संत न करिहैँ भाई ॥
निंदा भाव नर्क की खानी । ता को संत न करैँ बखानी ॥
ये अबूझ अपने से जानौ । ता से निंदा कहि कर मानौ ॥
तुम निंदा कर बूझा भाई । संत मता सतसंग न पाई ॥
संत मता सतसंगति जानौ । सार असार सबै पहिचानौ ॥
बिन सतसंग बूझ नहिँ आवै । ता से निंदा करि ठहरावै ॥
संत सरन से उतरै पारा । सो तो तुम निंदा कर डारा ॥
मुख से कहौ संत मत न्यारा । संत बिना नहिं होइ उबारा ॥
संत गता न्यारी तुम भाखौ । न्यारी कहि पुनि ताहि न ताकौ ॥
संत का भेद वेद से न्यारा । अस अपने मुख कहौ बिचारा ॥
संत साध कहौ सब से न्यारा । पुनि सुनि कै नहिँ मानौ लबारा ॥
न्यारी कहै सच्च सत जाना । न्यारी सुनै देइ नहिँ काना ॥
न्यारी को न्यारी कर बूझै । न्यारी गुनै सुनै नहिँ सूझै ॥
कहै न्यारी मुख मीठा लागै । न्यारी सुनै तभी उठि भागै ॥
अपने मुख से न्यारी भाखै । न्यारी सुनि उठि कै कस भागै ॥
न्यारी सुनि बूझै नहिँ भाई । ता से कछु हाथ नहिँ आई ॥
ये अद्भुद सुनियौ अज्ञाना । न्यारी कहै सुनै नहिँ काना ॥
भेप जगत की ऐसी रीती । ज्योँ भेड़ी जग वहै अनीती ॥
या विधि से जग वेद भुलाना । संत मता ता से नहिँ जाना ॥
फूलदास ये येहि विधि लेखा । परघट नहीँ संत गति पेखा ॥
जो कोई परघट कहत बुझाई । तो झगरा करने को धाई ॥
गुप्त मता संतन ने भाखी । कागद में मिलिहै नहिँ साखी ॥

साखी सब्द ग्रंथ जो गावै । बिन सत संग समझ नहिं आवै ॥
ये झूठे कागद के माहीं । ढूँढ़ ढूँढ़ सब जनम सिराई ॥
ज्यों बाजीगर डंका मारा । ठगन जग्त इंद्रजाल पसारा ॥
ऐसी सब ग्रंथन की बानी । ता में ढूँढ़ै भेष अजानी ॥
या से इनके हाथ न आवै । गुप्त संत बिधि कैसे पावै ॥
फूलदास मति बूझौ भाई । अस जग अंध कहा कहौं गाई ॥
सब सब बिधि बिधि गाइ बताई । फूलदास बिधि भूल सुनाई ॥

सम्वाद साथ गुनुवाँ बेटा हिरदे अहीर के

॥ तुलसी साहिब । चौपाई ॥

इतने में हिरदे चलि आये । संगहिं सुत दरसन को लाये ॥
दोऊ दरस डंडवत कीन्हा । चरन धाइ पुनि हमरे लीन्हा ॥
हम पूछी हिरदे से बाता । आज को लाये अपने साथा ॥
हिरदे पुत्र सामने कीन्हा । हम पूछी केहि नाम से चीन्हा ॥
हिरदे कहै यह जगत बिधाना । गुनुवाँ नाम से पुत्र कहाना ॥
पूछी तुलसी कौन ठिकाना । कहँ से आये कहौ बिधाना ॥
हिरदे कहै सुनौ हो स्वामी । मोसे जुदा रहै यह जानी ॥
रहै लखनऊ मोर यह बेटा । बहुत दिनन पर मोसे भेंटा ॥
मोरे मिलन काज यह आवा । सो स्वामी के दरसन पावा ॥
स्वामी चरचा सुनी बिख्याता । फूलदास साध के साथा ॥
इन सब वह चरचा सुनि पावा । या के मन में भर्म समावा ॥
ये स्वामी जस ज्ञान बखाना । या की समझ बूझ नहिं माना ॥
राम राम तुम कछू न गाई । राम से और कोऊ बतलाई ॥
राम से और कोऊ नहिं दूजा । यह या के मन आई बूझा ॥
कह तुलसी गुनुवाँ सुनु बाता । रह दो चार रोज यहिं राता ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ । चौपाई ॥

माथ नवाइ जोरि जुग पानी । स्वामी से बूझौं इक बानी ॥
राम राम जग बिरत बिराजा । जिनने किये अनेकन काजा ॥

जक्त भेप सब साध बतावा । तुम ताको कछु नहिँ ठहरावा ॥
सब मिलिकै ये बिधी बखानी । महुँ पुनि सुनी कहैँ यह बानी ॥
राम ने सिंध पखान तरावा । जल पर सिला राखि उतरावा ॥
और पहलाद भक्त को तारा । ता कारन हरनाकुस मारा ॥
गुजरी एक बिन्द्रावन माहीँ । तिन पुनि कथा सुनी इक ठाहीँ ॥
कथा माहिँ इक सुना प्रसंगा । राम राम नौका चित चंगा ॥
उन सुनि साँच मान मन धारी । वो उतरी जमुना के पारी ॥
अजामील अस पातकि होई । ता सुत नाम नरायन सोई ॥
मरत बार सुत नाम पुकारा । सो पहुँचा मुक्ती के द्वारा ॥
गनिका सुवा पढ़ावत तारी । राम राम कहि उतरी पारी ॥
ध्रू ने अटल तपस्या कीन्हा । पदवी राम अटल तेहि दीन्हा ॥
और गज अर्ध नाम गोहरावा । ता को तुरत स्वर्ग पहुँचावा ॥

सब जग साखि तुम्हारी गावै । तुलसी राम राम समझावै ॥
या की स्वामी साखि सुनैये । मेरे मन का भर्म मिटैये ॥
सो स्वामी मो को समझावौ । मोरे मन का भर्म छुड़ावौ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी कहौ बुझाइ, भर्म आव मो को भयो ।
मन में संक समाई, राम राम कछु ना कह्यो ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ तो को समझाऊँ । आदि अंत या की बतलाऊँ ॥
सत्तलोक इक पुरुष अपारा । चौथे पद के पार बिचारा ॥
तासु अंत जिव पुरुष नियारा । जा का पद चौथे के पारा ॥
ता के पुत्र भये पुनि भाई । सोला निरगुन नित कर नाईं ॥
सो निरगुन जो पुरुष से भैया । जा में लघू निरंजन कहिया ॥
ता को संत काल गोहरावै । सोई राम रमतीत कहावै ॥
सोई निरंजन कहिये काला । आदहि जोति बिछाई जाला ॥
पुरुष निरंजन जोती नारी । ये दोऊ मिली सृष्टि रचा री ॥
तिन के पुत्र तीनि जो जाना । ब्रह्मा बिष्नु ताहि कर नामा ॥
तीजे संभू छोटे भाई । तीन पुत्र या बिधि उपजाई ॥
निरंजन पिता जोति है माता । ये तीनों इन से उतपाता ॥
रमतीता सोइ बूझौ काला । जोती काल रचा जंजाला ॥
ता के भये दसौ औतारा । काल अंस जग राम पसारा ॥
रमता राम कर्म के माहीं । रमतीत राम काल की छाहीं ॥
रमतीत काल ने जाल पसारा । रमता रहा राम भौ जारा ॥
राम कहौ सोइ मन है भाई । मनहिं राम जिन जक्त बुड़ाई ॥
राम काल सब संत पुकारा । जा को जपै यह जक्त लबारा ॥
ब्रह्मा बिष्नु महेसर जाना । बेद कहे सोइ झूठ पुराना ॥
ये तीनों ने जाल पसारा । राम काल ने सब जग मारा ॥
राम काल को जपै बनाई । चर और अचर सभी चर खाई ॥
राम काल को जपिहै भाई । जम बंधन भौ खान समाई ॥

रमतीत काल जोति है ठगनी । तीन पुत्र उपजाये अपनी ॥
सास्त्र बेद और दस औतारा । ये सब जानौ काल पसारा ॥
या के मत में परिहै प्रानी । काल जाल ये जम की खानी ॥
तीनि लोक जम जाल पसारा । वो दयाल पद इनसे न्यारा ॥
वो दयाल समरथ है दाता । सो पद को कोउ संत समाता ॥
वा की राह संत से जानै । भेष जक्त[1] दोउ नहिँ पहिचानै ॥
संत मता कोइ भेद न जाना । सूरति संत चढ़ै असमाना ॥
पहुँचे सूरति अगम ठिकाने । अपना आदि अंत घर जानै ॥
सूरति मिलै पुरुष को जाई । तिन को नाम संत है भाई ॥
संत राह सूरति को पावै । और सब भेष खानि में आवै ॥
आदि पुरुष को देखै नैना । तब अदृष्ट की बूझै सैना ॥
पतिवरता सो पुरुष पिछानै । वा को इष्ट संत सब मानै ॥
और इष्ट नहिँ जानै भाई । राम इष्ट ये काल कहाई ॥
जो कोइ राम पतिब्रत कीन्हा । सो सब परे कर्म आधीना ॥
जिन दयाल से सुरति लगाई । सो पहुँचे वा पद के माईं ॥
येहि विधि संत कहैं गोहराई । अस अस संत सभी समझाई ॥
राम काल जो जपै बनाई । संत वचन निंदा ठहराई ॥
संत वचन निंदा कर माना । ता ते परे नर्क की खाना ॥
या का कोई भर्म लै आवै । बार बार चौरासी पावै ॥
आप अबूझ बूझि नहिँ लावै । संतन को नास्तिक ठहरावै ॥
यह सब भेष अंध भये भाई । संतन को निन्दक ठहराई ॥
संतन की बूझै कोई बानी । तौ छूटै चौरासी खानी ॥
राम काल को दूर बहावै । निस दिन संत चरन लौ लावै ॥
वो दयाल कहुँ राह बतावैं । तब जिव अपने घर को जावै ॥
संत चरन पावै निरवारा । राम काल जग फाँसी डारा ॥
जो कोइ गहै राम की सरना । छूटै न जनम मरन का धरना ॥

(१) मु० ह० प्र० के पाठ में "भक्त" अशुद्ध है ।

कहै राम के होइ गये बेटा । ता को परिहै जम को सोँटा ॥
जो कोइ भये राम के प्यारे । खानि गये जम लातन मारे ॥
तुलसी सत सत यहि मत भाखा । या मेँ पच्छपात नहिँ राखा ॥
संतबचन जेहि सत्त न भासी । जा की होइ जनम की नासी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, गुनुवाँ बूझौ बात यह ।
राम भर्म भौ खानि, सब कहै संत पुकारि कै ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ । चौपाई ॥

पुनि स्वामी इक पूछौँ बाता । केहि बिधि ये जिव होइ सनाथा ॥
ध्रू प्रहलाद जोगनि का भइया । सेसनाग गज नामदेव कहिया ।
बालमीक अरु सबहि बखानी । अजामील सिव गुजरी जानी ॥
तुलसी पत्र राम लिखवाई । और पखान जल माहिँ तराई ॥
ये स्वामी कहौ कैसी भैया । कहै गुनुवाँ मो को समझैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाइ ॥

सुन गुनुवाँ मैँ बूझ बताई । मन ठहराइ सुनौ चित लाई ॥
राम अनादि चारि जुग भैया । ग्यारह जीव ताहि मेँ तरिया ॥
ता मेँ सात जीव की चरचा । और चारि बतलावौ परचा ॥
गिरे परे दस पाँच अरु होई । ये सब साखि बताओ सोई ॥
पोढ़ पोढ़ तौ सातै भैया । चारि बिधी परचे को कहिया ॥
चारो जुग जिव भये अनेका । सतजुग द्वापर त्रेता देखा ॥
कलजुग सुधाँ चार जुग पेखा । चार जुगन कौ पूछौँ लेखा ॥
ता मेँ सात जीव सब तरिया । और जीव गये कहाँ जो मरिया ॥
राम राम चारो जुग आवा । चारो जुग सबहिन मिलि गावा ॥
निरमल सतजुग जीव अनेका । राम राम जपि बाँधी टेका ॥
सो तरे जीव अनेकन होई । तुमने सात जीव कहे सोई ॥
और जीव का भाखौ लेखा । तरि गये होइहैँ जीव अनेका ॥
और नहीँ थोरे पुनि कहिये । सतजुग कोड़ जीव तो चहिये ॥
सतजुग उजली बुधि मन होई । राम जपा निस्चय से सोई ॥

ता में कोड़ जीव तौ चाही । ये तो सात नाम भये भाई ॥
और अनेक राम जपि जानी । सात तरे की हम नहिँ मानी ॥
कोड़ जीव का नाम बतावै । तब हमरे मन साँची आवै ॥
उजला सतजुग सात बखाना । मैला कलि का कौन ठिकाना ॥
सतजुग सात निष्ट से गैया । कलजुग एक तरे नहिँ भैया ॥
सतजुग में तुम सात बतावा । कलजुग कर्म नष्ट लपटावा ॥
जो कोइ कहै राम से तरिहै । झूठसमझिमनमें नहिँ धरिये ॥
राम रमा जुग चारो खानी । तरिहै या से कस कस मानी ॥
तुमको कहते सरम न आई । या को मन में बूझौ भाई ॥
येहिविधि तुम अपने मन बूझा । करि बिचार तब परिहै सूझा ॥
कोड़ौं ऋषि मुनि जपि पुनि होई । कोड़ौं तपसी जानौ सोई ॥
कोड़ौं इष्ठ नेम पुनि करिया । कइ इक राम पतिब्रत धरिया ॥
राम राम कहि सब जग तरते । भौसागर में कोइ न परते ॥
जो तुम कहौ करै परतीता । सतजुग में था सत की रीता ॥
सांचा जुग परतीत न आई । झूठै कलि की कौन चलाई ॥
काल राम मन उतपति माहीँ । राम न तारा होइहै भाई ॥
सतजुग राम कहे नहिँ तरिया । भौसागर में सब जिवपरिया ॥
तुम तो कहौ राम सब माहीँ । चार खान में रहा समाई ॥
राम खान में रहा बिराजा । कस कस भयौ तुम्हारो काजा ।
राम खान बस रहिया भाई । तुमको कस मुक्ती पठवाई ।
ये सब जानौं झूठा वाता । या में खैहौ जम की लाता ।
सत सत लोक राह चढ़ि जाई । तब यह जीव मुक्ति को पाई ।
राम राम की झूठी आसा । गये राम कहे जम की फाँसा ।

॥ प्रश्न गुनुवाँ । चौपाई ॥

तुम पुनि राम राम कस कहिया । सब ग्रंथन में साखि सुनैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

जग अबूझ कारन हम गाई । जो करै इष्ट राम से भाई ॥
जो हम न्यारा भेद सुनावैँ । तो जग माहिँ रहन नहिँ पावैँ ॥

ता से न्यारा भेद न भाखा । संत भेद हम गुप्ते राखा ॥
भेद ग्रंथ में गुप्त लखावा । पुनि काहू की दृष्टि न आवा ॥
हमने भाखा अगम अलेखा । जा को मरम न जानै भेषा ॥
हम सतपुरुष अलख लखवावा । बेद न भेद भेष नहिँ पावा ॥

॥ प्रश्न गुजुराँ । चौपाई ॥

स्वामी एक मोहिँ समझाई । गुजरी सिला को कहौ बुझाई ॥
सब भाखैँ जल मेँ जो तरिया । या बिधि कहौ मोर मन भरिया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

या की मैँ परतच्छ बताई । देखो जाइ नजर से भाई ॥
या की बिधि मैँ तुरत बताऊँ । ज्योँ बजार सौदा समझाऊँ ॥
जस बजार मेँ सौदा लीन्हा । परखा तोल दाम तेहिँ दीन्हा ॥
अपने मन मेँ साँची आई । पैसा दीन्ह गाँठि बँधवाई ॥
ऐसा परचा ततवर पेखो । अपने नैन नजर से देखो ॥
वोहि पानी वोहि पत्थर होई । वोहि पुनि राम लिखावो सोई ॥
राम लिखो पत्थर के माहीँ । पानी डारि देखि लो भाई ॥
जो पत्थर पानी नहिँ बूड़ा । तौ तुम जानो राम अगूढ़ा ॥
पत्थर डूबै राम लिखे से । तौ तुम बड़िहो राम कहे से ॥
ततवर करो नजर से पेखो । ये तो आज नजर से देखो ॥
संसय सोग सब झारि निकारो । ले पत्थर पानी मेँ डारो ॥
जो जल पत्थर रहि उतरानी । सिल गुजरी की साँची मानी ॥
बूड़ै पत्थर राम लिखाना । अपने बूड़न की अस जाना ॥
एक बिधी मैँ और बताई । ता से देखो सत्त बनाई ॥
राम राम जेहि तुमहि ढूँढ़ाओ । ले पत्थर वोहि हाथ लिखाओ ॥
सोइ पत्थर वोहि हाथ डरावै । जो बूड़ै झूठे कर गावै ॥
नहिँ तो और बिधी इक भाखौं । जैसी बिधी जुगत करि ताखो ॥
राम राम जग कहै अनेका । राम इष्ट जेहि जेहि करि देखा ॥
सोइ सोइ हाथ सभन लिखवावो । पत्थर लिखि पानी मांइ नावो ॥
एक एक बिधि बिधि से डारी । ये परचा सब देखै ॥

या मैं कोइ परतीती होई । सब का परचा भिन भिन जोई ॥
या मैं रहै भरम इक साथा । ये लिखि देखौ अपने हाथा ॥
तुलसी पत्र की बिधी बताई । सोई बृच्छ बहुत जग माई ।
पत्र तोड़कै परचा पेखौ । लिखि वोहि राम पत्र धरि देखौ ।
पत्र तोल में हलुक उठाना । तौ यहि बिधि झूठी करि जाना ।

॥ गुनुवाँ उवाच । चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सुनु बिख्याता । ये सब वाहि समय की बाता ।
वाहि समय में यह बिधि होती । आज कलू नहिं होइ यह भोती ।
रामराम जपि सिव अबिनासी । ये भी वाहि समय की बाती ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब । चौपाई ॥

रामराम कौन बिधि कहिया । जा से सिव अबिनासी भैया ॥
मुख से जप कीन्हा कछु औरी । ये गुनुवाँ बिधि कहो बहोरी ॥

॥ गुनुवाँ उवाच । चौपाई ॥

गुनुवाँ कहै सुनो हो स्वामी । मुख से जपि जपि राम बखानी ॥
महादेव ने मुख जप कीन्हा । ये भया वाहि समय का चीन्हा ॥

॥ वचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

या में राम वड़ा नहिं होई । ये तो समय वड़ा भया सोई ॥
राम कहे सिव नहिं अविनासी । वे भये समय भाव बिधि बासी ॥
ये तो समय वड़ा विधि भाखी । राम वड़ा कहो केहि बिधि राखी ॥
राम वड़ा जब जानै भाई । जल में पत्थर आज तराई ॥
उनको वड़ा जबै हम जानें । आज लिखै पत्थर उतराने ॥
समय भाव पत्थर उतराई । कहौ राम की कौन बड़ाई ॥
कहो राम से मुक्ति वताई । पुनि फिरि ले समया ठहराई ॥
कभी राम को वड़ा वतावो । कभी लेइ समया ठहरावो ॥
एकहि वात सत्त ठहरावे । तव सत हमरे मन में आवै ॥

॥ दोहा ॥

एक कहै दूजी कहै, दो दो कहै बनाय ।
ये दो मुख का बोलना, घने तमाचे खाइ ॥

---

(१) परिश्रम, काम ।

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुनुवाँ भाई । समय बड़ा के राम बड़ाई ॥
या में एक सत्त करि भाखौ । एक बात झूठी करि राखौ ॥
जो तुम कहो राम सब तारा । परचा देखि न कहै लबारा ॥
ऐसी बड़ी राम गति जेही । समया झूठ ताहि कर देई ॥
राम से समय बड़ा है भाई । कहो राम की कौन बड़ाई ॥
समया झूठ राम करि डारै । ऐसी कहो तो साँच बिचारै ॥
समय राम की कला उड़ाई । तुम जपि मुक्ति कौन बिधी पाई ॥
अपनी मुक्ति खोज नहिँ पावो । राम राम कहि जगत ढूढ़ावो ॥
जो सच्चा तुम राम सुनावो । तौ पत्थर पानी में नावो ॥
जब जानैं वोहि सच्चा रामा । पानी पत्थर आज तिराना ॥
अपनी देखी कहो न भाई । मुए गये की बिधी बताई ॥
साँचा सोई मिलै जो आजी । मूए मुक्ति बतावै पाजी ॥
जीवत मिलै सोई मत पूरा । मुए कहै समझ सोइ धूरा ॥
अब सुन आगे बिधी बताऊँ । महादेव की बिधि समझाऊँ ॥
महादेव राम नहिँ जपिया । ये साखी झूठी तुम कहिया ॥
महादेव तो जोग कमाया । राम राम जोगी नहिँ गाया ॥
उन अपनी इंद्री मन जीता । मुद्रा साधी पाँच पुनीता ॥
स्वाँसा साधि गगन मन धावा । उनमुनि साधि कै गगन लगावा
चाचरि भूचरि भावक जानी । खेचरि मिलियाँ पाँच बखानी ॥
आगे आगे चरि साखि सुनाऊँ । ऐसे जोगी जोग जनाऊँ ॥
जोग किया जब भये अबिनासी । राम राम कहे काल की फाँसी ॥
करि के जोग उन जोति समाने । जोति दृष्टि मुक्ती पद जाने ॥
मुक्त भोग भोग भया भाई । पुनि फिरि फिरि चौरासी पाई ॥
संत मते की राह न जानी । या से भरमे चारो खानी ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ । चौपाई ॥

हे स्वामी तुम सत्त बताई । ये सब मोरे मन में आई ॥
एक बिधी मोहिँ बरनि सुनावौ । बालमीक बिधि साखि बतावो ॥
अजामील गति कैसी भैया । सो बिधि मो को बरनि सुनैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुनुवाँ बाता । बालमीक की सुन बिख्याता ॥
बालमीक जप उलटा कहिया । उलटा जपत मुक्ति नहिँ भैया ॥
सूधा जपि जपि जन्म सिराना । मुक्ती को सुपने नहिँ जाना ॥
उलटा जपत मुक्ति जो होती । सुलटे मिलन जपा जप थोथी ॥
जीवत मुए मुक्ति नहिँ पाई । ये जग झूठी जाल बिछाई ॥
अजामील का भाखौँ लेखा । सुन गुनुवाँ अपने मन पेखा ॥
नारायन जेहि सुत का नामा । ता को मोहँ बंध बस जामा ॥
अपने सुत से मोह जो कीन्हा । मरते नाम नारायन लीन्हा ॥
मुक्ति भई अस कहैँ बुझाई । याकी बिधी कहूँ समझाई ॥
जग मेँ पुत्र सभन के होई । राम कृष्ण नारायन सोई ॥
गोविँद नाम गोपाल मुरारी । येहि बिधि पुत्र नाम जुग चारी ॥
मोह बंध बस नाम पुकारी । नाम पुत्र जग होत उबारी ॥
येहि बिधि मुक्ति होत जो भाई । तौ भौ मेँ जिव एक न जाई ॥
ये सब जानौ झूठी बाता । राम काल जिव कीन्ही घाता ॥
और तुम ने ध्रू मुक्ति बतावा । सो तै गगन दृष्टि मेँ आवा ।
ध्रू तारे की मुक्ति बतावौ । सब तारे की बिधि समझावौ ।
तारा गगन मुक्ति जो होती । तारा टूट गिरै भुँइ जोती ।
जो तुम ध्रू को अटल बताया । गगन फूटि ध्रू कहाँ समाया ।
पाँच तत्त का होइहै नासा । कहो ध्रू ने कहँ कीन्हा बासा ।

॥ दोहा ॥

चंद मरै सूरज मरै, मरिहैँ जिमीँ अकास ।
ध्रू पहलाद भभीपना, परे काल की फाँस ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ सब बिधी बताई । ये सब की तोहि भाखि लखाई ॥
अब पहलाद का भाखौँ लेखा । सो तुम सुन कर करो बिबेका ॥
दस औतार काल के भाई । तामेँ नरसिँघ है दस माहीँ ॥
हरनाकुस का उदर बिदारा । ये जानो सब काल पसारा ॥
वे दयाल एक सब माहीँ । वो कहो केहि का मारन जाई ॥

हरनाकुस को मारि बिदारा । पुनि पहलाद राज बैठारा ॥
राज भोग जिन कीन्हा भाई । सो तेहि पुत्र बिलोचन राई ॥
बे लोचन केवलि भयो साई । जा को बावन बाँधे जोई ॥
जो मुक्ती वा को होइ जाते । बली छुड़ावन केहि बिधि आते ॥
आवागवन मुक्ति नहिँ भाई । बली छुड़ावन कस कस आई ॥
भागवत में देखो यह साखी । बली काज आये अस भाखी ॥
जो पहलाद मुक्ति को जाता । आवागवन केहि कारन आता ॥
सहाय करी नरसिंघ बतावा । पिता मारि राज जिन पावा ॥
राज करै सो नरकै जाई । कस कस ता की मुक्ति बताइ ॥
जो नरसिंघ जिवत ले जाता । तौ ता की हम मानैँ बाता ॥
राज थापि तेहि भोग करावा । भोग भोग भौ खाने आवा ॥
ता की मुक्ति साखि बतलावो । कहि झूठी झूठी समझावो ॥
सुवा पढ़ावत गनिका तारी । यह बिधि भाखूँ कहूँ बिचारी ॥
सुवा पढ़त जो गनिका तरती । सहजै होत जक्त सब मुक्ती ॥
सुवा सुवा घर घर में होते । तौ मुक्ती का सोच न करते ॥
ध्रू तप की तुम साखि बताई । गोपीचंद भरथरी भाई ॥
पढ़ पढ़ सुवा मुक्ति जो होते । तौ पुनि राज काहे को तजते ॥
ध्रू को तप की बिधी बताया । राज छाँड़ि तन खाक मिलाया ॥
गनिका मुक्ति सहज बतलावो । ध्रू जी राज गये किमि गावो ॥
कभि सुवा पढ़ते सहज बतावा । कभि कभि कष्ट तपस्या गावा ॥
ये तो बिधी मिली नहिँ भाई । ये सब झूठ झूठ सी गाई ॥

॥ सोरठा ॥

सुन गुनुवाँ ये बात, राम काल जग में फँसा ।
बसा करम के माहिँ, लसा खानि चारो भरी ॥

॥ गुनुवाँ उवाच । चौपाई ॥

हे स्वामी सत सत तुम भाखी । समझि परा बूझी सब साखी ॥
ये सब काल जाल कर लेखा । अपने मन में किया बिबेका ॥
पुनि गुनुवाँ बोला अस बानी । महूँ आप चरनन लपटानी ॥
चरन दास जानो मोहिँ चेरा । किरपा दृष्टि मोहिँ तन हेरा ॥

मैं पुनि रहौं चरन के लारा । जीव काज मम करौ सुधारा ॥
अब मैं सरन आपु की लीन्हा । राम काल धोखा यह चीन्हा ॥

॥ वचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

अब तुलसी अस करी बखानो । हिरदे की संगत पहिचानो ॥
निस दिन हिरदे संग निहारो । हिरदे से होइहै निरबारो ॥
मन को थिर कर बूझौ बाता । मन थिर बिना न आवै हाथा ॥
इंद्री मन थिर सूरति हेरो । तब भौजल से होइ निबेरो ॥
ये हिरदे रहै हमरे पासा । तन मन बिधी रहो येहि दासा ॥
ये सत संगत सगरी जानी । या से प्रीति करौ पहिचानी ॥
हिरदे का तुम भेद न पाई । सूरति पाइ चरन चित लाई ॥
या से पिता भाव नहिं मानौ । सूरति सैल चरन में आनौ ॥

॥ हिरद उवच । चौपाइ ॥

तब हिरदे बोला अस बानी । अब चालन घर कहूँ बखानी ॥
ये गुनुवाँ परसाद कराऊँ । पुनि सिर नाइ चरन में धाऊँ ॥
अस कहि दीन डंडवत कीन्हा । चरन पाइ मारग को लीन्हा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ । चौपाई ॥

तुलसी स्वामी अरज हमारी । किरपा करौ कहौ निरवारी ॥
हिरदे की मोहिं बिधी बताई । हिरदे पार समझ मोहिं आई ॥
अस बिस्वास मोर मन आवा । या की गती कहौ परभावा ॥
मैं स्वामी निज दास तुम्हारा । ये कहिये बूझौं निज सारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

तब तुलसी बोले यहि भाँता । हिरदे भेद सुनाऊँ बाता ॥
इन सत संगति बहु बिधि कीन्हा । संत चरन में रहे अधीना ॥
दीन बिधी और गुरुमत लीन्हा । संत चरन घट अंतर चीन्हा ॥
सूरति लीन अधर रस माती । का पूछो हिरदे की बाती ॥
सत संगति बिधि सगरी जाना । सूरति सैल फोड़ि असमाना ॥
दस दिस पार सार सब जाना । नौलख कँवल पार पहिचाना ॥
मानसरोवर बेनी तीरा । जल प्रयाग बहै निरमल नीरा ॥
ता में न्हाइ चढ़े असमाना । सतगुरु चौथे पार ठिकाना ॥

निसि दिनि सैल सुरति से खेला । सुरति नाम करै निस दिन मेला ॥
अष्ट कँवल दल गगन समाई । सहस कँवल पर तेहि की राही ॥
ता के परे चार दल लीन्हा । द्वै दल जाइ दोइ मेँ कीन्हा ॥
यहि विधि रहै दिवस अरु राती । जानै कोइ न इनकी बाती ॥
कोउ न भेद जान घर माईँ । यह रहै सूरति अधर लगाई ॥
ऐसे कइ दिवस गये बीती । ता पाछे भइ ऐसी रीती ॥
चलि हिरदे पुनि घर को जाई । घर मेँ तिरिया पुत्र रहाई ॥
रात बास घर अपने कीन्हा । भोजन कर पुनि कीन्हा सैना ॥
पुनि पुनि निसा गई अधराती । चढ़ि गई सुरति सैल रसमाती ॥
ता समय तिरिया कीन्ह उपावा । रोग सोग अपना दुख गावा ॥
जब हिरदे मन कीन्ह बिचारा । ये गृह साल जाल है न्यारा ॥
अस मन मेँ कुछ भई उदासी । पुनि तब से रहे हमरे पासी ॥

॥ गुनुवाँ उवाच । चौपाई ॥

तुलसी स्वामी बिधी बताई । हिरदे की कछु अगम सुनाई ॥
हिरदे पार सार गति पाई । तुलसी स्वामी अगम लखाई ॥

हाल अभ्यास तीनोँ पंडितोँ का

॥ नैनू उवाच । चौपाई ॥

इतने मेँ पंडित चलि आई । करी डंडवत परसे पाँईँ ॥
स्यामा नैनू माना नामा । तीनोँ मिलि बैठे वोहि ठामा ॥
पुनि नैनू ने अरज बिचारी । स्वामी तुम चरनन बलिहारी ॥
बाम्हन जाति मानमद भारी । स्वामी तुम ने लीन्ह उबारी ॥
अब मैँ अपनी बिधी बताऊँ । स्वामी सुनिये चित कर भाऊ ॥
चमकै बीज अरु गगन दिखाई । अंदर स्वाबी फैलत जाई ॥
पाँच तत्त रँग भिन भिन देखा । कारा पीरा सुरख सपेदा ॥
और जंगाल रंग तेहि माईँ । तेहि बिधी पाँचौ तत दरसाई ॥
ता से सुरति भिन्न होइ खेली । तेहिँ के आगे चली अकेली ॥
सहस कँवल से न्यारी जाई । सेत दीप द्वारे के माईँ ॥
ता से चली निकर होइ न्यारी । देखा सब ब्रह्मंड पसारी ॥

नैनू यह बिधि बिधी बताई । तुलसी सन्मुख जाई सुनाई ॥
तुम्हरी कृपा और कछु पैहौं । पुनि चरनन में आनि सुनैहौं ॥
हम जड़ जीव बिद्या के माते । बाम्हन जाति बुद्धि में राते ॥
पढ़ि पढ़ि कै हम जनम गँवावा । संतन सन्मुख राखि दूरावा ॥
मैली बुद्धि ज्ञान मति छोटा । संतन से मन राखा मोटा ॥
ता से बिधी भेद नाहिं पाई । अब स्वामी तुम सब दरसाई ॥
तुम्हरी कृपा न जरि बिधि सारी । बिधि बिधि देख परी गति न्यारी ॥

॥स्यामा उवाच । चौपाई ॥

तब स्यामा बोला अति दीना । मन बुधि चित चरनन में लीना ॥
तुलसी स्वामी मैं बलिहारी । तुम्हरे चरनन मेँ सुख भारी ॥
जिन जिन तुम्हरे चरन निहारा । सो सो उतरे औजल पारा ॥
जो जो चरन और कोउ धरिहै । भौ के माहिं कधी नहिं परिहै ॥
ये मोरे मन सत कर भासा । तुम्हरे चरन छूटि जम फाँसा ॥
हे दयाल तुम किरपा कीन्हा । मेरी सुरति करी लौलीना ॥
होत उजास जोति हिये माईं । छिन छिन सुरति ताहि में लाई ॥
जोति फाड़ सूरति गइ आगे । मानो सुरति द्वार पर लागे ॥
द्वार बैठि देखा हिये माईं । चंद और सुरज गगन सम ठाईं ॥
घट में देखा अगम बिलासा । सो सब भाखूँ तुम्हरे पासा ॥
अब आगे जो परचा पाऊँ । पुनि चरनन में आनि सुनाऊँ ॥
स्वामी हमें दया नित कीजे । निस दिन चरन सरन रखि लीजे ॥
स्वामी हमने अपति बिचारी । तुम दयाल कछु मन नहिं धारी ॥
हमने टहल कछू नहिं कीन्ही । तुम ने वस्तु अमोलक दीन्ही ॥
सास्तर नाहिं न वेद न माहीं । और पुरान येहि जानत नाहीं ॥
ब्रह्मा याको अंक न चीन्हा । येहि विधि औतारन से भिन्ना ॥
आत न ब्रह्म से यह गति न्यारी । चीन्है कोइ कोइ संत सँचारी ॥
संत चरन जाई जिव जाना । ता का आवागवन नसाना ॥
संत चरन जो चीन्हे नाईं । पुनि पुनि चौरासी भरमाई ॥
अगम अगम मम भ्कि परा यह स्वामी । सो दयाल किरपा से जानी ॥
संतन की गति अगम अपारा । हम पंडित लघु पावैं न पारा ॥

॥ माना उवाच । चौपाई ॥

माना कहै जोर दोउ हाथा । चरनन माहिँ डारि कै माथा ॥
स्वामी हम कीन्ही अजगूती । मारन काज कीन्ह मजबूती ॥
तुम दयाल कछु स्वाल न भाखा । मन से द्रोह कछू नहिँ राखा ॥
हम औगुन कहि कर कर भाखा । तुम स्वामी चित कछू न राखा ॥
लड़का कपूत बाप देइ गारी । पितु औगुन तेहि नाहिँ बिचारी ॥
तेहि समझाइ मिठाई दीन्हा । पुनि पुनि ताहि बोध कर लीन्हा ॥
येहि बिधि भाँति भई गति मोरी । स्वामी से कीन्ही बरजोरी ॥

॥ वचन तुलसी साहिब चौपाइ ॥

तुलसी माना मनहिँ बिचारी । ये बिधि होति आइ जुग चारी ॥
संत जगत दोऊ के माइँ । येहि बिधि आदि अंत चलि आई ॥
अब या का बरतंत सुनाऊँ । बिधि दृष्टांत बहुरि दरसाऊँ ॥
संत जगत-तारन बतलावैँ । जग पुनि उनको मारन धावै ॥
परमारथ की राह बतावैँ । सब जग उनकी निंदा लावै ॥
साधू जीव करैं उपकारा । जिव मत-हीन उन्हीँ को मारा ॥
जस बालक फुड़िया दुख माईँ । माता चहै नीक होइ जाई ॥
पकि फुड़िया बालक दुख पावै । माता फोड़न ता को चावै ॥
बालक माता मारन धाई । वो जाने मो को दुखदाई ॥
माता कहै नीक होइ जावै । तब मोर हिरदा माहिँ जुड़ावै ॥
माता सुख उपकार बतावै । बालक के मन मेँ नहिँ आवै ॥
बालक बुधि लग रीती जाना । माता अस मत संत बखाना ॥
ये दुख का उपकार बतावैँ । वे पुनि उनको मारन धावैँ ॥
ऐसी संत जगत की रीती । या मेँ तुम का करी अनीती ॥
ता का इक दृष्टांत बताऊँ । हाथी ऊपर नकल दिखाऊँ ॥
हाथी की बिधि बरनि सुनाई । माना सुनियो मन चित लाई ॥
हाथी का इक बन रहै भाई । तहँवाँ हथिनी अनेक रहाई ॥
ता मेँ गज मकरंद रहाई । ताकी बिधी सुनौ तुम भाइ ॥
गज मकरंद की बिधी बताई । सब हथिनी सँग रहै बनाई ॥

दूजा हाथी रहै न लारै । दूजा देखि प्रान से मारै ॥
सब हथिनी सँग आप रहाई । दूजा बन में रहन न पाई ॥
हथिनी ब्याई तेहि को देखै । नर बचा होइ मारै जे कै ॥
बचा नारी जो कोट होई । [illegible] नहिँ मारै पुनि सोई ॥

वे दयाल विधि दया बिचारा । कोइ कोइ जीव होइ उपकारा ॥
सब जग जीव काल मुख माईं । कोइ कोइ जीव निकस पुनि जाईं ॥
सुनु माना जग का ब्यौहारा । आदि अंत अस रचा पसारा ॥
या में तुम को दोस न भाई । आदि अंत ऐसे चलि आई ॥

॥ माना उवाच । चौपाइ ॥

तुम दयाल पूरे हो स्वामी । जीव काल बस तुम्हें न जानी ॥
तुम परमारथ राह बताई । जग कर्मी स्वारथ को धाई ॥
अब स्वामी इक अरज बिचारी । मैं तुम चरनन की बलिहारी ॥
जो कछु बस्तु आप ने दीन्हा । ता बिधि भाखि सुनाऊँ चीन्हा ॥
नील सिखर होइ सूरति जाई । स्याम सिखर के पार समाई ॥
सातों दीप सेत के पारा । जहँ होइ पहुँचे गगन अधारा ॥
तहँ पुनि सैल सुरति से कीन्हा । आतम निरखि भिन्न लखि लीन्हा ॥
घट घट देखा सब्द पसारा । सूरति चढ़ी सब्द की लारा ॥
सूरति सब्द में जाइ समानी । जस जस भई सो भाखि बखानी ॥
जब स्वामी तुम दाया कीन्हा । बस्तु अगम की हाथै दीन्हा ॥
अनेक जन्म ये देह सिराती । पुनि मरते कहुं हाथ न आती ॥
मैं पुनि सतगुरु तुम को जाना । तुलसी सत सतगुरु कर माना ॥
जस जस सतगुरु की जस रीती । तस तस मोरे भइ परतीती ॥

॥ श्लोक ॥

सूकं करोति बाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत् कृपालमहं बंदे, परमानंद माधवः ॥१॥
द्वै द्वै लोचन सर्बानां, बिद्या त्रय लोचनं ।
सत लोचन ज्ञानीनं, भगवान अनंत लोचनं ॥२॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी परम दयाल, काल कँवल स्रुति भिनि भये ।
माना मरम निहाल, को कृपाल तुलसी बिना ॥

॥ चौ इ ॥

माना के मन होस निकारी । तुलसी चरन सरन गति सारी ॥
स्वामी तुलसी सतगुरु दाता । अगम निगम का किया बिख्याता ॥

दूजा हाथी रहै न लारै । दूजा देखि प्रान से मारै ॥
सब हथिनी सँग आप रहाई । दूजा बन में रहन न पाई ॥
हथिनी व्याई तेहि को देखै । नर बच्चा होइ मारै जे कै ॥
बच्चा नारी जो कोइ होई । ता को नहिँ मारै पुनि सोई ॥
नर को देखि प्रान हरि लेई । मादी देखि बोल नहिं तेही ॥
नर बच्चा जहँ रहन न पाई । यह बिधि आपु रहै बन माई ॥
सब हथिनो में आप रहाई । दूजा हाथी रहन न पाई ॥
सब हथिनी मिल कीन्ह बिचारा । ये तौ बूढ़ भया तन सारा ॥
हाथी बच्चा रहन न पावै । जो उपजै तेहि मारि गिरावै ॥
बूढ़ भया येहि छूटै प्राना । पुनि फिर अपना कौन ठिकाना ॥
सब हथिनी मिल कीन्ह बिचारा । ये बिधि बच्चा होइ उबारा ॥
वा बन में इक साध रहाई । बच्चा ले राखौ तहँ जाई ॥
साधू दयाहीन नहिँ होई । वो पालै पुनि वा कौ सोई ॥
यह कहि हथिनी कीन्ही आसा । बच्चा डारि कुटी के पासा ॥
साधू देखि दया अति आई । बच्चा लीन्ह कुटी के माई ॥
दया जानि तेहि पालन कीन्हा । मोटा भया जाति को चीन्हा ॥
चल्यौ जहाँ सब हथिनी ठाहीँ । गज मकरंद देखि तेहि भाई ॥
सनमुख जुद्ध भया तेहि जाई । ये जवान वो बूढ़ा भाई ॥
गज मकरंद को मारि गिराई । पुनि हथिनी में आप रहाई ॥
पुनि बच्चा ये कीन्ह बिचारा । वाहि साधू ने मोहि उबारा ॥
साधू मारि मिटाऊँ ख्यालै । मो सरिखा दूजा नहिँ पालै ॥
सा पुनि मोरा बैरी होई । ता से साधू मारौं सोई ॥
यह बिचारि साधू को मारा । ये बिधि माना यह संसारा ॥
वो साधू बच्चा को पाला । सो पुनि भया ताहि का काला ॥
दया जानि उन किया उबारा । वे बच्चा साधू का मारा ॥
साधू जग का ये बिधि जाना । येहि बिधि चारौं जुग परमाना ॥
काल बुद्धि सब जग के माहाँ । संत दया बिधि मानै नाहीँ ॥

ऐसे दयाल बिधि दया बिचारा । कोइ कोइ जीव होइ उपकारा ॥
सब जग जीव काल मुख माईं । कोइ कोइ जीव निकस पुनि जाई ॥
सुनु माना जग का ब्यौहारा । आदि अंत अस रचा पसारा ॥
या में तुम को दोस न भाई । आदि अंत ऐसे चलि आई ॥

॥ माना उवाच । चौपाइ ॥

तुम दयाल पूरे हौ स्वामी । जीव काल बस तुम्हैं न जानी ॥
तुम परमारथ राह बताई । जग कर्मी स्वारथ को धाई ॥
अब स्वामी इक अरज बिचारी । मैं तुम चरनन की बलिहारी ॥
जो कछु बस्तु आप ने दीन्हा । ता बिधि भाखि सुनाऊँ चीन्हा ॥
नील सिखर होइ सूरति जाई । स्याम सिखर के पार समाई ॥
सातौ दीप सेत के पारा । जहँ होइ पहुँचे गगन अधारा ॥
तहँ पुनि सैल सुरति से कीन्हा । आतम निरखि भिन्न लखि लीन्हा ॥
घट घट देखा सब्द पसारा । सूरति चढ़ी सब्द की लारा ॥
सूरति सब्द में जाइ समानी । जस जस भई सो भाखि बखानी ॥
जब स्वामी तुम दाया कीन्हा । बस्तु अगम की हाथै दीन्हा ॥
अनेक जन्म ये देह सिराती । पुनि मरते कहुं हाथ न आती ॥
मैं पुनि सतगुरु तुम को जाना । तुलसी सत सतगुरु कर माना ॥
जस जस सतगुरु की जस रीती । तस तस मोरे भइ परतीती ॥

॥ श्लोक ॥

मूकं करोति बाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत् कृपालमहं बंदे, परमानंद माधवः ॥१॥
द्वै द्वै लोचन सर्बानां, बिद्या त्रय लोचनं ।
सत लोचन ज्ञानीनं, भगवान अनंत लोचनं ॥२॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी परम दयाल, काल कँवल सुति भिनि भये ।
माना मरम निहाल, को कृपाल तुलसी विना ॥

॥ चौपाइ ॥

माना के मन होस निकारी । तुलसी चरन सरन गति सारी ॥
स्वामी तुलसी सतगुरु दाता । अगम निगम का किया विख्याता ॥

सतगुरु सत्त सच्च हम जाना । सतगुरु बिना न मिलै ठिकाना ॥
बिन सतगुरु पावै नहिं कोई । बिन सतगुरु सब गये डुबोई ॥
तुम सतगुरु मोहिं राह लखाई । आदि रु अंत नजर में आई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी परम दयाल, तुम स्वामी दाया करी ।
छूटा भ्रम दुख जाल, कहि दयाल बिधि सब लखी ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि माना सीख जो मंगी । नैनू स्यामा तीनौं संगी ॥
सीस टेक डंडवत कीन्हा । चरन छुए पुनि मारग लीन्हा ॥
तीनों पंडित मारग जाही । कीन्हा गवन भवन की राही ॥
पुनि गुनुवाँ आया तेहि बारा । किया प्रनाम डंडवत सारा ॥

॥ गुनवाँ उवाच । चौपाई ॥

गुनुवाँ पूछै तुलसी स्वामी । एक बिधी मैं कहूँ बखानी ॥
जीव राह की जुगत बताही । ता से छूटै जम की राही ॥
तुम दयाल सतगुरु हो स्वामी । जा से होइ जीव कल्यानी ॥
ये भौजाल जगत व्यौहारा । ता में जीव कर्म बस डारा ॥

॥ वचन तुलसी साहब । चौपाई ॥

सुनु गुनुवाँ यह जम की बाजी । जग संसार यही में राजी ॥
पंडित और समझै नहिं काजी । ये सब झूठ काल से राजी ॥
इनकी बात न चित पर दीजे । ये सब पाप पुन्य में भीजे ॥
संत चरन की आसा कीजे । संत सरन मुक्ती करि लीजे ॥
ये जग में कछु नाहिन भाई । सुभ्र जगत जिव भौ भरमाई ॥
राम कृष्न दोऊ बटमारा । सिव ब्रह्मा मिलि फाँसी डारा ॥
या से सत राह धरि लीजे । उन कि कहनि चित से नहिं दीजे ॥

॥ गुनुवाँ उवाच । चौपाई ॥

चरन बंद तुम्हरी सरनाई । ये सब झूठ समझ में आई ॥
मोरे चित का भर्म उठावा । जब से चरन सरन में आवा ॥
हिरदे मोहिं बिर्धा समझावा । भर्म भाव विधि सबहि बतावा ॥
अब प्रभु कृपा दृष्टि मोहिं कीजे । जीव सरन अपना करि लीजे ॥

मैं तो स्वामी तुम को पाये । तुम्हरे चरन सरन चित लाये ॥
अब कोउ बात विधी नहिं भावै । सूरति तुलसी चरन समावै ॥
अब कछु राह मोहिं को दीजै । यह गुनुवाँ अपना करि लीजै ॥

॥ बचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

जब वहि को कछु राह बताई । गुनुवाँ सीस चरन तर नाई ॥
सुनु गुनुवाँ यह बिधी बताई । मन थिर करो गुनौ[1] मत भाई ॥
सूरति सोध कँवल में राखौ । नित प्रति सुरति दृष्टि होइ ताकौ ॥
येहिबिधि रहो दिवस और राती । गुनुवाँ गुनन करो मन भाँती ॥

॥ सोरठा ॥

सुनु गुनुवाँ यह बात, बिधि बिचार गुप्तै रहो ।
कहो न काहू साथ, येहि बिधि मन में बसि रहो ॥

॥ चौपाई ॥

चरन लाग मारग को लीन्हा । घर को सुरति गवन जिन कीन्हा ॥

॥ फूलदास उवाच । चौपाई ॥

स्वामी हमको नाहिँ बिसारी । नेक सुरति हमहूँ पर डारी ॥
हम को अपना दास बिचारो । अस जानि मोरी ओर निहारो ॥

। बचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

फूलदास बिधि करो बिचारा । बिन चौके नाहीं निरबारा ॥
चौके की विधि करो बनाई । जब सूरति अपना घर पाई ॥
सूरति से नरियर को मोड़ो । हाथै से नरियर नहिँ फोड़ो ॥
सुरति पान पर बीरा खावो । बरई बीरा दूरि बहावौ ॥
तीनि गुनन का तिनुका तोड़ौ । बासन पाँच इंद्री को मोड़ौ ॥
और कहाँ लगि बिधी बताऊँ । ये चौका बिधि औरै गाऊँ ॥
जग चौके को दूरि बहावौ । सत चौका हिरदे में लावौ ॥
जग चौके की झूठी बाता । सत चौका संतन रस माता ॥
जो चौका संतन ने जाना । सोइ कबीरदास पहिचाना ॥
सो चौका तुमको बतलैहौं । ता से राह अगम की पैहौ ॥
जो कबीर ने राह बताई । सो चौके की कहौं बुझाई ॥
जो कबीर राह बिधि गाई । सोई राह संत बतलाई ॥
संत कबीर ये अंतर नाईं । या बिधि से कोइ भर्म न लाई ॥

---

(१) मन में गुनावन न उठने देव ।

सूरति चढ़ै संध जो पावै । सो कबीर सम चित में लावै ॥
वा में भिन्न भाव कोइ लैहै । कर्म भाव बिधि नरकै जैहै ॥
कहै कबीर ने अगम सुनाया । और संत नहिं वहँ से आया ॥
कहै कबीर अविगति से आये । और संत वो घर नहिँ पाये ॥
ऐसी बिधि कोइ मन में आनै । तौ पुनि परै नर्क की खानै ॥
भेषो पंथ संत ये नाईं । आदि अंत सो संत कहाई ॥
आदि संत सब वहिँ से आये । भेष पंथ में वे नहिँ पाये ॥
भेष पंथ में ढूँढ़ो भाई । या से तुमको नज़र न आई ॥
अंदर की आँखी से देखो । तब पुनि संत नजर से पेखो ॥
तुम को नजर कहाँ से आई । चोका पंथ माहिँ उरझाई ॥
चोका पंथ को दूरि बहावै । तब वो राह नज़र में आवै ॥
चोका पट्टा हाट बजारा । या से परै कर्म को लारा ॥
संतन का चोका बिधि न्यारा । ये सब जानो हाट बजारा ॥
संतन का चोका बिधि गाऊँ । संत कृपा से समझ बताऊँ ॥
सुरति मोड़ नरियर को फोड़ो । अगम पान चढ़ि धनुवाँ तोड़ो ॥
राह विधी कोइ संत बतावै । जीवत अगम बस्तु को पावै ॥
तुलसी कहि इक सब्द लखाऊँ । ता में सब चोका बिधि गाऊँ ॥
फूलदास तुम सुनियो काना । विधि चौका का सब्द बखाना ॥

॥ जैजैवन्ती ॥

एरी लें आज तो अधर घर आई, तुलसी चढ़ि देखिया ॥टेक॥
सूरत द्रग दोड़ अटारी, हिये हेर लखा पिउ प्यारी ।
सारी नौ लै हेरि निहारी, प्यारा लै सँग पेखिया ॥१॥
नरियर को मोड़ा जाई, प्रिये वास सुगंध उड़ाई ।
बीरा पान पाये आई, सुगंधी महकाइया ॥२॥
मेवा आठ पुरुप लखि जानी, सुति हेर हिये उड़ानी ।
सब्दारस भई रंग रानी, हरखानी पिउ पाइ कै ॥३॥
पल्नगा पर जाइ पौढ़ी, धन धन सुख की घड़ी ।
अटारी महल्ला चढ़ी, प्यारा पिउ लेखिया ॥४॥

फूलदास द्रग पर चौका, परवाना छाँड़ौ धोखा।
नरियर सुरति से मोड़ौ, तोड़ौ असमान को ॥५॥
तुलसी लसि सूरति जाई, चौका परवाना थाही।
बसि तिल हिरदे बिच आई, चढ़ी द्वारा पाइ के ॥६॥
रेवतीदास को समझावा, फूलदास दोऊ लख पावा।
कँवला में सुरति लखाई, तुलसी बिधि पाइ कै ॥७॥
इंद्री पाँच बासन मोड़ा, गुन तीनि तिनुका तोड़ा।
पोढ़े तिनुका बासन छूटै, झूठे जग लूटिया ॥८॥
तुलसी कबीर बखाना, सो चौका बिधि हम जाना।
पूछै कोइ चित ब्रत आई, ता को दरसाइया ॥९॥
पत्र कदली छेदा जाई, जहँ सेत चदरवा तनाई।
तुलसी बिधि कहि समझाई, संत जनाइया ॥१०॥

॥ दोहा ॥

फूलदास चौका बिधी, सुरति नारियर मोड़।
पान अमर बीरा लखौ, चखौ अधर रस और ॥
रेवतीदास तुमहूँ लखै, नरियर निरत निहार।
निज अकास पर पान है, बीरा है निज सार ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस सुरति लगाई। नरियर माहिँ पंथ सोइ राही ॥
येही पंथ की राह जो पावै। पंथ कबीर ताहि कर नावै ॥
येही पंथ सुरति से लावै। अगम अगोचर घर को पावै ॥
सूरति सैल करै असमाना। निज घर पहुँचे जाइ ठिकाना ॥
या विधि पंथ संत दरसावै। तब सत सुरति समझ घर आवै ॥
आद रु अंत पंथ पद जाना। भाखै सतगुरु संत बखाना ॥
सतसँग करै बूझ जब आवै। सूझै मत सतसंगत पावै ॥
जिन जिन चरन विधी विधि जाना। सो गुरु मत जानौ परमाना ॥
पंथी राह रीत सब छूटै। मन की मान मनी सब टूटै ॥
दीन होइ कर सेवै संता। जब लखि परै अगम पद पंथा ॥

जस कबीर ने भाखा चौका। सो बिधि करौ मिटै जम धोका॥
उन कहि बिधि जो बूझ बिचारै। सो घर पुनि पद पार निहारै॥
संत गूढ़ मत गुप्त पुकारै। बूझै सतगुरु सब्द सुधारै॥
जो कछु कही उलट बिधि बानी। सो बिन समझ बूझ ना जानी॥
सब्द साखि सो भाखि सुनावै। बिन सतगुरु कछु हाथ न आवै॥
सतगुरु मिलैँ बतावैँ भेदा। जब जम जाल मिटे मन खेदा॥
संत बाग बन अंड पुकारा। सोइ ब्रह्मंड बाग बन सारा॥
तन मन बृच्छ देखि दृग अंडा। चढ़ कर सुरति निरखि नौ खंडा॥
जो अंडे बिच बाग बखाना। देखा सुरति समझि असमाना॥
बाग बृच्छ बेली पर अंडा। सतगुरु सुरति बतावै डंडा॥
ये मन खलक खान बिच डारा। पाँच पचीस तीनि तेहि लारा॥
अब या का सुन सब्द लखाऊँ। बृच्छ बेलि अंडा अरथाऊँ॥
उलटाबसी जो कही कबीरा। रमज रेखता में मत धीरा॥

॥ रेखता ॥

अली इक बाग बन खंडा। लगे बृछ बेलि पर अंडा॥१॥
अजब इक फूल पचरंगा। भँवर बसै बास के संगा॥२॥
अगर सब लोग फल खावैँ। स्वाद बस रैन रहि जावै॥३॥
फले फल दाख के पेड़ा। रहत जेहि भूमि पर भेड़ा॥४॥
भेड़ा रहै बाग में अली जा। काढ़ि नित खात कलेजा॥५॥
वोही मन बीच में राजै। गरज सब सूरमा भाजै॥६॥
कहूँ कोइ रहन नहिँ पावै। सकल बन जीव चरि जावै॥७॥
कहूँ उनमान बल केरा। बनी बिच जीव सब घेरा॥८॥
सुनौ अब तोल तन केरा। नहीँ त्रय लोक में हेरा॥९॥
अली एक बात अनतोली। सुनी सब संत की बोली॥१०॥
कहे दस सीस वोहि केरा। पाँउ पचबीस तन हेरा॥११॥
अली मुख तीनि से खावै। अजब येहि बात में आवै॥१२॥
तरँग तन बीच में भावै। समझ दस सीस पर लावै॥१३॥
अरी थिर थोब नहिँ जाना। रहे भ्रम भाव रस खाना॥१४॥

अली जिन अंड को फोड़ा । सुरति निज नैन से जोड़ा ॥१५॥
मुवा मन भाव का भेड़ा । चले सत नाम चढ़ि बेड़ा ॥१६॥
तुलसी तब बूझ में आई । अगम सब समझ दरसाई ॥१७॥
लिए सत संत के चरना । बिधी बरतंत सब बरना ॥१८॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास दिल समझ बिचारो । अस अस भेद कबीर पुकारो ॥
मन पचबीस पाँच सँग भूला । गुन तन बृच्छ बसै सहि सूला ॥
बेली सुरति अंड पर लागी । दिल दुरबीन चीन्ह सोइ भागी ॥
मन कर भर्म भूल थिर थावै । थिर कर सुरति निरति तत तावै॥
नित नित ऐनक आँखि दिखावै । लिखि कागद पर अच्छर पावै ॥
निःअच्छर निरनै गति न्यारा । निरखि संत सो करै बिचारा ॥
रेवतीदास रमज रस बूझा । जिनजिन को संनन मत सूझा ॥
ये मन काल बड़ा बल भूता । पाँच पचीस संग मजबूता ॥
तीनि गुनन तन मन बिच राजै । चल कर स्रुति मन बिषरससाजै॥
ता से थिर करि सुरति लगावै । कंज कँवल बिधि बिच ठहरावै॥
पल पल सूरति सिखर निहारै । लील गिरी पर समझि सिधारै ॥
रबि रज किरनिगगन के पारा । सूरति सतगुरु ऐन निहारा ॥
सिखर निकर नभ द्वारे माईं । सेता सहर अटारी जाईं ॥
स्याम कँज स्रुति दूर बहाई । द्वै दल कँवल केल हिये आई ॥
सरवर गिरजा गुरुपद माईं । कंज कँवल तज पदम सुहाई ॥
लघु दीरघ दल चारि बिराजै । सतगुरु सूरति मीन जहँ राजै ॥
फूलदास ये लखि लखि बैना । सूरति द्वार पार की सैना ॥
या से परे आदि घर न्यारा । या से अंत संत दरबारा ॥
जिन सतगुरु की सैन बिचारी । सो गति बूझै अगम अपारी ॥
ये मत संत पंत नहिं भेषा । खोज खोज पचि मुए अनेका ॥
सुरतवंत गुरु सैन लखावै । सो चेला सतगुरु से पावै ॥
पदम मध्य सत सतगुरु धामी । सूरति सिमटि सब्द अलगानी ॥

जिमि सागर आगर भया सिंधा । सरिता समुँद मिलै जिमि बुंदा ॥
अस सुरति सिष सतगुरु पासा । सब्द गुरु मिलि किया निवासा ॥
गुरु सिष सार धार इक जानी । ज्यों जल मिलि जलधार समानी ॥
अस अस खोज करै कोई भाई । नित हित संत चरन लौ लाई ॥
तन मन धन संतन पर वारै । नित नित सतसंगति की लारै ॥
दास भाव सतसंगति लीना । दीन हीन मन होइ अधीना ॥
चित्तभाव दिल मारग चावै । सब साधन की टहल सुहावै ॥
ये बिधि भाँति रहै रस लाई । तब सतगुरु सत दया लखाई ॥
द्वारा दृग दूरबीन लखावै । कंज स्याम ता समझ सुनावै ॥
ता में समुन्दर सोत अपारा । ता में लील पील सम द्वारा ॥
सुरति समझि बूझि जहँ आवै । गज बिरजा तहँ आसन लावै ॥
नित दिन रहै सुरति लौ लाई । पल पल राखै तिल ठहराई ॥
या में सुरति नेक नहिँ बिसरै । छिन छिन मन से न्यारी पसरै ॥
येहि बिधि जतन करै कोइ लाई । सुरति रहै द्वार पर छाइ ॥

॥ फूलदास उवाच । चौपाई ॥

फूलदास कहै अन्तरजामी । अगम बस्तु दीन्ही सहदानी ॥
सुनी न भेप पंथ के माईं । अजर पंथ मो को सरसाई ॥
मो को कीन्ह सनाथी स्वामी । आदि अलख की दीन्ह निसानी ॥
अब तौ रहौँ चरन लौ लाई । जो कबीर सो तुलसि गुसाँई ॥
जो कबीर बिधि भाखि बताई । सो सो सब तुलसी पै पाई ॥
तुलसि कबीर एक कर जाना । दूजा भाव न मन में आना ॥

॥ दोहा ॥

तुलसि कबीर ये एक गति, दूजा कहे अचेत ।
दोनों स्वामी एक रस, मोर चरन से हेत ॥

॥ बचन तुलसी साहिब । दोहा ॥

तुलसी बिधि पहिचानि कै, दीन्हा पंथ लखाइ ।
सुरति बाँधि असमान पर, निज घर पहुँचे जाइ ॥

॥ छंद ॥

तुलसी बिधि गाई अगम लखाई । फूलदास बिधि राह लई ॥१॥
[illegible]दासा सुरति निवासा । तिल में बासा जुगति सही ॥२॥

राति और दिवसा छिन छिनबासा। सुरति अकासा निरति रही ॥३
मन सूरति लागी नेक न भागी । निसदिन जागी ठहर तहीं ॥४॥
रेवती और फूजा स्वामी अनकूला । सूल बंध सब काटि दई ॥५॥
मनहीं बुधि पाई भूल नसाई । स्वामि सहाई बाँह गही ॥६॥
मन के भ्रम भागे थिर होई लागे । कछु अभिलाषा नाहिँ रही ॥७॥
मन की बृत चेती छाँड़ि अचेती । केत द्वार पर लागि रही ॥८॥
तुलसी कहि काहिया अगम लखैया । चरन पाइ स्रुति पागि रही ॥९॥

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुनु बात, संत चरन अति अगम गति ।
संत मत गति पद सार, ये अगार गति को लखै ॥१॥
कोइ जानै स्त्रुति सार, सब्द लार लै पार रहि ।
सिंध बुंद स्त्रुति धार, मिलि अगार अद्भुद भई ॥२॥

सम्बाद प्रियेलाल गुसाँईं के साथ

॥ चौपाइ ॥

नाम जाति इक अग्गरवाला । कहैं नाम तेहि सुरति गुपाला ॥
जिन के गुरु गुसाँईं आये । प्रियेलाल अस नाम रहाये ॥
उन उनके घर किया निवासा । सुन सोइ बात दरस अभिलासा॥
जिन पुनि सुनी हमारी बाता । दोऊ चले दरस को साथा ॥
प्रियेलाल और सुरति गुपाला । आये लिये हाथ में माला ॥
आये कीन्ह डंडवत बैठे । प्रीति उठी तुम दरसन भेंटे ॥
कहै तुलसी किरपा तुम कीन्हा । दास जानि प्रभु दरसन दीन्हा ॥
अपन जानि प्रभु भयउ दयाला । स्वामी बिन किरपा को पाला॥

॥ प्रियेलाल उवाच । चौपाई ॥

प्रियेलाल कह भये प्रसन्ना । भीतर प्रेम मगन प्रिये मन्ना ॥
स्वामी दुरलभ दरस तुम्हारे । संत दरस बड़ भाग हमारे ॥
नगर नारि सब यों बिधि भाखा । सो बिधि तौ हम एक न ताका ॥
सब मिलि कहैं नगर के माइँ । उन दरसन नहिँ जावो भाई ॥
वेद पुरान एक नहिँ जानै । राधा कृष्न राम नहिँ मानै ॥

गंगा जमुना कछू न राखै । कछु नहिँ आदि अंत को भाखै ॥
सब जग मिलि ये कहत बनाई । सो बिधि सुनि हमहूँ चलि आई ॥

॥ वचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

कहि तुलसी उन सत सत कहिया । मैं मति-हीन बुद्धि नहिँ रहिया ॥
मैं तौ सब चरनन कौ दासा । मैली बुद्धि नीच मोरी आसा ॥
तुम्हरे चरन मोर निरबारा । पकरि हाथ करिहौ निस्तारा ॥
मैं औगुन की खानि अपारा । सूरति संत चरन की लारा ॥
मोर निबाह तुम्हारे हाथा । अब तौ लगौ चरन के साथा ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल । चौपाई ॥

हे स्वामी अस अस कस भाखौ । हम जग जीव चरन में राखौ ॥
काम अरु क्रोध लोभ के माते । बिष रस भोग फिरै सँग साथे ।
ये जग जाल काल दिन राती । कर्म भाव भरमै सँग साथी ॥
हम चहले के जीव अनीती । छूटे तुम चरनन की प्रीती ॥
श्रीभगवान जी कहत पुकारा । मैं तौ सदा संत की लारा ॥
गीता में अरजुन से भाखा । मो से बड़ा संत को राखा ॥
श्रीमुख ऐसे आप बखान्यो । मो से अधिक संत के जानो ॥
मो को संत भाव रस नीका । जगत भाव रस लागै फीका ॥
श्रीमत में अस कहत बखानी । भागवत में ऊधो से बानी ॥
स्वामी तुम सा संत सुजानी । हम निस्तार चरन में मानी ॥
संतन की गति वेद पुकारा । नेतहि नेत न पावै पारा ॥
महातम सब सब मिलि भाखा । सब से बड़ा संत को राखा ॥
मैं स्वामी इक पूछौँ बानी । किरपा करि भाखौ सहदानी ॥
दास भाव पूछौँ मैं स्वामी । या में भेद भाव नहिँ जानी ॥
पहिले जग कै वेद बनावा । यह रचना कौने बिधि आवा ॥
जीव कहाँ से आया कहिये । केहि बिधि कर्म माहिँ भौ रहिये ॥
जीव मुक्ति कैसे करि पावै । अपने घर को केहि बिधि जावै ॥
माया मोह जगत अँधियारा । और अज्ञान काम की लारा ॥
ऐसे जीव छुटन नहिँ पावै । अपने घर को केहि बिधि जावै ॥

अपना ज्ञान न सतसँग मानै । गुरु बिन राह कौन बिधि जानै ॥
सतगुरु मिलै तो बाट बतावै । जब कोइ जीव मुक्ति को पावै ॥
गुरु सम बड़ा और नहिँ कोई । ये भगवान कही मुख सोई ॥
गुरु द्रोही पातक का मारा । कधी न उतरै भौ के पारा ॥
गुरु बिन कर्मनास को करई । भर्म माहिँ भौजल मैं परई ॥
गुरु से बड़ा और नहिँ रहिया । बेद पुरान संत अस कहिया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

तुलसी कहै ये सत्त बखाना । अस अस बेद पुरान न जाना ॥
ये तुम भाखा सत्त प्रभावा । बेद पुरान येही बिधि गावा ॥
पुनि संतन कछु और बखाना । सतगुरु मता भिन्न करि जाना ॥
जगत गुरू कंठी गहि बाँधा । ता को गुरू कहौ पुनि साधा ॥
यह ब्योहार गुरू जग सोई । मुक्ति गुरू कोइ औरै होई ॥
ये तो गुरू जगत ब्योहारी । इनसे मुक्ति न होइ बिचारी ॥
कर्म जाति देँही गुरु करई । कर्म भोग इनसे नहिँ टरई ॥
गुरु है आप कमर के माईँ । चेला को कैसी मुक्ताई ॥
गुरु की करनी गरु सोइ पावै । चेला आप कर्म भुगतावै ॥
जगत गुरू जिव पार न पावै । वो गुरु संत और गोहरावै ॥
कनफूका गुरु नहीँ कहाई । गुरु दयाल की औरै राही ॥
वे दयाल गुरु समरथ दाता । जग भौजाल पार के करता ॥
गुरु है शब्द सुरति है चेला । चीन्है गुरु चेला सोइ मेला ॥
वे गुरु स्वामी अगम अपारा । पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा ॥
ता के रूप रेख नहिँ काया । वे गुरु मिलैँ तो मुक्ति लखाया ॥
ये तो गुरू कर्म की लारी । आप न तरे और कहा तारी ॥
ये जानो ब्योहारी नाता । लेन देन पैसे के साथा ॥
खान पान चेला से माँगै । गर्भ बास कर देने लागै ॥
चेला जानि जाहि सों लेई । पुनि पुनि ताहि भोग करि देई ॥
पुत्र बैल घोड़ा होइ ऊँटा । सो बिन दिये कोऊ नहिँ छूटा ॥
ये गुरु लेन देन ब्योहारा । गुरु चेला भौ कर्म पसारा ॥

कंठी बाँध गुरू सोइ भइया । जग ब्यौहार नात यहि कहिया ।
जग में कन्या कारी ब्याही । करे ब्याह तेहि कहै जमाई ।
ब्याह किये का नाता लागा । येहि बिधि गुरु चेला मत जागा ।
सतगुरु मत पद अगम अपारा । ता को चीन्ह जीव होइ पारा ।
वो गुरु पंथ संतही जानै । जग गुरुवा नाहीँ पहिचानै ।
चेला बने जीव नहिँ हाना । गुरु सोइ बनै कर्म की खाना ।
ता से संतन भक्ति दृढ़ाई । बिना भक्ति उबरै नहिँ भाई ।
भक्ति बिना जिव जम करै हाना । बिना भक्ति चौरासी खाना ।
बिना भक्ति कोइ पार न जाई । ता से भक्ति संत ठहराई ।
गुरु सेवा स्वामी को चिन्हो । ता से सदा काल आधीनो ।
स्वामी कठिन खोज करि पैहै । सतगुरु भेद संत समझैहै ।
स्वामी संत बिना नहिँ पावै । बिना संत गुरु को दरसावै ।
जग के गुरू न जानौ भाई । वे सतगुरू कठिन से पाई ।
दास बने सतगुरु को पावे । दास बिना गुरु नहिँ दरसावै ।

॥ प्रश्नप्रियं लाल । चौपाइ ॥

तुलसी स्वामी कहौ बुझाइ । कौन बिधी सतगुरु को पाई ।
कौन विधी स्वामी दरसावा । कौन भक्ति से सतगुरु पावा ।
वे गुरु कहाँ कहाँ है बासा । स्वामी का कहौ कौन निवासा ।
कौन विधी जो नजर में आवै । चेला कौन बिधी से पावै ।
सो विधि भिन्न भिन्न दरसाई । जा से चित की संसय जाई ।

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

तुमने गुरु अपने को जाना । आदि गुरू मत मर्म भुलाना ।
कंठी बाँधि ज्ञान बतलावै । भक्त भये सतगुरु नहिँ पावै ।
उन सतगुरु की राह नियारी । पावै संत चरन की लारी ।
सतगुरु आप पुरुष हैं स्वामी । गगन कंज मद्ध अस्थानी ।
पिरथम अष्ट कँवल को बूझै । सहसदल कँवल पार होइ सूझै ।
ता के परे चार दल भाई । ता से भिन्न दोइ दरसाई ।
ता के आगे सतगुरु धामा । चौका मिलै गुरू परमाना ।

पारब्रह्म जो कहिये ऐसा। ता के आगे सतगुरु देसा ॥
पारब्रह्म जेहि कहि गोहराई। ता ने सतगुरु भेद न पाई ॥
निरगुन सरगुन दोउ से न्यारा। भिन इनसे सतगुरु दरबारा ॥
यह चेला वो सतगुरु पावै। वो सतगुरु सोइ कर्म नसावै ॥
जहँ लगि वो सतगुरु नहिँ पावै। तहँ लगि चेला निगुर कहावै ॥
वो सतगुरु चौथे पद स्वामी। ता की भक्ति संत सब ठानी ॥
सतगुरु फोड़ै गगन अकासा। तब पहुँचै सतगुरु के पासा ॥
सो घर मिलि पहुँचै उन पासा। सो चेला सतगुरु का दासा ॥
सोई घर से सब जिव आये। निरगुन सरगुन उनहिँ बनाये ॥
वा के पास जीव चलि जावै। सो जिव जाइ परम पद पावै ॥
जहँ लगि वो गुरु नाहीँ पावै। जगत गुरू सोइ निगुर कहावै ॥
जगत गुरू सब निगुरा भाई। जब लगि गुरु नहिँ गगन समाई ॥
गुरु ने अपना गुरु नहिँ पाया। चेला हाथ कहाँ से आया ॥
खाना द्रव्य टका के माहैँ। सो गुरु चेला घर घर जाई ॥
ज्योँ व्योपारी हाट लगावा। ऐसे ये गुरु जग रस भावा ॥
पेट काज दूकान लगाई। आप तरन की खबरि न पाई ॥
कहै चेला को गुरू तरावै। अपनी तरन बिधी नहिँ पावै ॥
ये व्योहार तुम्हारा भाई। सतगुरु की तुम सुधि बिसराई ॥
जिन ने तन का ठाट सँवारा। जीव अंस का किया पसारा ॥
किया पिंड तन रचा बनाई। सात दीप नौखंड रचाई ॥
सो स्वामी है घट के माईँ। ता से जीव सकल चलि आई ॥
सो स्वामी घट माहिँ समाना। सबहि संत ये कहत बखाना ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से दूरा। बसै पास रहै सदा हजूरा ॥
वा का भेद संत से पावै। चढ़ै सुरति छिन छिन मेँ जावै ॥
दास होइ ढूँढ़ै सतसंगा। चरन संग के बाँधै चंगा ॥
जाति पाँति मोटा मन त्यागै। संत चरन मेँ सत करि लागै ॥
गोसाँईँ स्वामी पद डारै। बाम्हन ज़ाति पाँति मनमारै ॥

नीचा होइ दीन पद धारै । मान और मनी करै सब छारै ॥
अस अस समझ संत के चीन्हा । संत चरन में होइ अधीना ॥
तब उन से मारग कछु पावै । सतगुरु संत सोई दरसावै ॥
वे कृपाल कहुँ राह बतावैं । पलक माहिँ अगमन घर पावै ॥
जीवत पावैं घर में स्वामी । मुए गये की बात न मानी ॥
जीवत मिलै सोई है लेखा । मूए भाखैं अंध अचेता ॥
वा को वेद नेत गोहराई । ब्रह्मा बिष्नु राह नहिँ पाई ॥
ऋषी मुनी पुनि कहैं पुराना । सिव जोगी कोइ मरम न जाना ॥
दस औतार जगत जिव माया । निरंकार जोती से आया ॥
निरंकार हैं सोल्हा भाई । पुरुष निरंजन जोति लुगाई ॥
निरगुन निराकार निरबानी । चारो नाम काल अभिमानी ॥
चारो जुगन काल जिव चारा । सोइ जग जाल निरंजन डारा ॥
जोति निरंजन किया बिचारा । ता से उतपन दस औतारा ॥
दस औतार काल के जाना । जा में सगरा जगत भुलाना ॥
निरंकार काल है भाई । जा ने तीनि पुत्र उपजाई ॥
ता ने कीन्हा वेद विधाना । सास्तर कीन्हे वेद पुराना ॥
या में ऋषी मुनी सब बूड़ा । जग अज्ञान जीव भया मूढ़ा ॥
देवल देव पषान पुजावै । तीर्थ बर्त सँग जनम गँवावै ॥
ऊँचे मन की राह बतावै । चारो जुग जिव खानि समावै ॥
निरंकार काल अरु जोती । डारै मारि जीव बिन मौती ॥
दस औतार काल ठग केरे । ब्रह्मा विष्नु पुत्र जम चेरे ॥
ठग ठग मिलि सब जाल पसारा । अस नहिँ होइ जीव निरवारा ॥
निरंकार काल अन्याई । जोती ठगनी सब जग खाई ॥
इनसे न्यारा पुरुष दयाला । जहँ नहिँ पहुँचै जोत अरु काला ॥
वो स्वामी संतन का प्यारा । वा घर सत करैं दरबार ॥
निरंकार से पुरुष नियारा । सो साहिब संतन का प्यारा ॥
लोक तीन नहिँ चौथे माहीँ । जा घर संत करैं पाछाई[1] ॥

---

(१) बादशाहत ।

निरगुन सरगुन उहाँ न जावै । जोति न ब्रह्मा बिष्नु समावै ॥
दस औतार का कौन चलाई । वा घर संतन सुरति लगाई ॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल सुनु बात, संत गती न्यारी अगम ।
गुन निरगुन नहिँ जोति, तिरदेवा औतार नहिँ ।

॥ चौपाई ॥

जहाँ संत तहँ निरगुन नाईँ । निरंकार जहँ जोति न भाई ॥
दस औतार जान नहिँ पावै । ब्रह्मा बिष्नु महेस न जावै ॥
जहँ नहिँ बेद जहाँ नहिँ बानी । इस से पारै पुरुष अनामी ॥
जहँ संतन की सुरति समानी । वो घर अगम संत सो जानी ॥
दीन होइ संतन सरनाई । तब कछु राह संत से पाई ॥
फोड़ै गगन अगम को जाई । स्वामी सतगुरु भेँटै भाई ॥
प्रियेलाल अस बूझि बिचारा । सब बिधि भाखि सोई निरवारा ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल । चौपाई ॥

तुम तो कहा बेद से न्यारा । अरु पुनि भाखा अगम अपारा ॥
तुम्हरी कहन कोऊ नहिँ ठहरा । भाखा तुम ये अगमपुर डेरा ॥
राधा कृष्न प्रिय इष्ट हमारा । तुम भाखा प्रभु और पसारा ॥
सुनकर भर्म बहुत मोहिँ आवा । तुमने कछु कछु और सुनावा ॥
येहि बिधि बेद कहत है नाईँ । सो प्रभु मुख से भाखि सुनाई ॥
हम करैँ संध्या नेम अचारा । पूजा सेवा ठाकुरद्वारा ॥
और सनातन धर्म हमारा । ठाकुर भोग अछूता सारा ॥
मंदिर मेँ कोइ जान न पावै । बरतन कपड़ा छुवा न जावै ॥
भोजन ठाकुर करै अछूता । करते बल हाथन के बूता ॥
और अनेक अनेक बिचारा । कहँ लगि कहौँ सुचा निरवारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

ये सब बात अनीती भाखी । सुनी कान देखी नहिँ आँखी ॥
ये तो बहुत निष्ट[1] कहि भाई । कहे सुने से मन रिसियाई ॥
ब्रह्म बिभाव कर्म तुम कीन्हा । ये तो निष्ट अनीती लीन्हा ॥
जनम अनेक न परिहौ खाना । ब्रह्म बिभाव संत नहिँ माना ॥

(१) निकृष्ट ।

सब में आतम ब्रह्म बतावौ । चेतन ब्रह्म बिभाव लगावौ ॥
तुम्हरे बेद पुरान बतावे । गीता भागवत सब मिलि गावे ॥
सो तुम अपने मुख से गाई । आतम ब्रह्म एक बतलाई ।
चर अरु अचर सब माहिं समाना । तुम्हरा सास्तर करै बखाना ।
कोउ कोउ संतन कही बुझाई । एकै ब्रह्म सबन के माईं ।
कहिकै एक बिभाव बिचारौ । कौन बिधी ये ज्ञान तुम्हारौ ।
पाँच तत्त नर आतम देही । एक तत्त पाहन को सेई ।
जड़वत देख दोऊ के संगा । चेतन देख दोऊ में रँगा ।
या में लघु दीरघ को देखा । मन अपने में करौ बिबेका ।
इक चेतन की पूजा थापौ । चेतन एक निष्ट करि राखौ ।
आतम चेतन निष्ट जो भइया । पाहन जड़ सुध केहि बिधि रहिया ।
पाहन को तुम सुद्ध बतावौ । चेतन को धरि दोष लगावौ
बिन चेतन सुध कैसे भइया । चेतन को तुम दोष लगइया
चेतन देही तुम्हरी कीन्हा । के पाहन तुम को रचि लीन्हा
नादहि बिंद देह को साजा । पूजौ पाहन को केहि काजा
पाहन मूरति येही बनाई । गढ़ी सिलावट छाती पाँई ।
ता को मंदिर ठाकुर थापी । चेतन ठाकुर मंदिर आपी ।
चेतन मंदिर बोलै माहीं । तुम्हरी आँखिन सूझै नाहीं ।
पाहन प्रेम जाइ सिर फोड़ौ । मंदिर बोलै आतम तोड़ौ
ऊपर न्हाइ अचार जो कीन्हा । अंदर मन मैला नहिं चीन्हा ।
न्हाइ जो धोइ रसोइ कीन्हा । सुचि भोजन ठाकुर को दीन्हा ।
सुचि ठाकुर को भोग लगाई । माखी ता पर बैठी आई ।
माखी का कछु कीन्ह विचारा । उठि बैठे भिष्टा की लारा ।
यही अचार करो तुम भाई । माखी की चौकस नहिं लाई ।
दस औतार भये सब भाई । ता में तीन प्रतच्छ दिखाई ।
मच्छ कच्छ कहि और वराही । ये प्रतच्छ पूजो नहिं भाई ॥
मुख से दस को भाखि सुनावो । छाँड़ि प्रतच्छ तुम जड़ को ध्यावो ॥

यह अपने मन बूझौ ज्ञाना । सत अरु असत करौ पहिचाना ॥
या में भाव अभाव न जानी । सत असत्त लखि पद पहिचानी ॥
या में निंदा भाव न भाखी । सब संतन की देखौ साखी ॥
निंदा आहि नरक की खाना । मिथ्या संत न करैं बखाना ॥
प्रियेलाल कछु बूझि बिचारी । ये तुमने कछु समझ सिहारी ॥
पाँच तत्त बैराट बनाई । ता में सब ब्रह्मंड समाई ॥
पाँच तत्त सरीर बिधाना । सोइ बेराट कहै भगवाना ॥
पिंड ब्रह्मंड एक करि राखौ । पुनि निंदा करि कस कस भाखौ ॥
जो ब्रह्मंड में बिधी बताई । सो सब भाखौ पिंड के माइँ ॥
रजगुन तमगुन सतगुन भाई । ये सब ब्रह्मा बिष्नु कहाई ॥
गो इंद्री गोपिन कर नामा । मन को मोहन सभी बखाना ॥
राधे रकार नाम समझाऊँ । पिंड पाँच पंडो बतलाऊँ ॥
मन द्वै द्रष्टि लीन यहि माईँ । सोइ दो दृष्टी भाखि सुनाई ॥
अरजुन बिधी बात समझाई । इंद्री अड़ी जो बन मन माईँ ॥
भौ में सैन मन करै बुझाऊँ । ता को भीमसेन बतलाऊँ ॥
भौ में असल नकल होइ गइया । ता कर नाम नकुल हम कहिया ॥
सादेह दीसै सनमुख भाई । नाद बिंद त्रिधि देह बनाई ॥
बिंद से बना बिंद्राबन होई । जग के माहीँ रहा समोई ॥
बसै देव इंद्री के माईँ । मन बस देवन में रहा जाई ॥
बिषय भोग रस देव किये सारी । मन देवकी ये भौ रस डारी ॥
जो सोधै मन घर को जाई । मनहिँ जसोधा नाम कहाई ॥
मन डूबा भय बल के माईँ । सो बलभद्र नाम है भाई ॥
उदै कर्म मन दुख सुख माईँ । कर्म उदै मन मित्र कहाई ॥
जमुना सुरति करै असनाना । सूरति चढ़ै फोड़ि असमाना ॥
जहँ जमुना जमना अस्थाना । इंद्री गोरस कालहि जाना ॥
गोरस गोकुल जानौ भाई । येहि बिधि पिंड ब्रह्मंड समाई ॥
ये नर देह मानुष के माईँ । देव ऋषी मुनि ताहि समाई ॥
अरसठ तीरथ सकल पसारा । गद्दी गंडा भारि अठारा ॥

सातौ दीप पृथी नौखंडा । तुम कहौ मनुष देह येहि पिंडा ॥
कहँ लगि कहौं अनेक पसारा । यह ब्रह्मंड पिंड माहिँ सँवारा ॥
संत सुरति फोड़ै असमाना । पिंड में देखा सकल बिधाना ॥
निरखा अनुभौ मुख से भाखा । पिंड राम कृष्न की साखा ॥
पिंड में राम कृष्न लखवाया । वा अहीर पर नकल दिखाया ॥
नकल की नकल सिलावट कीन्हा । ऐसी भूल भटक तुल लीन्हा ॥
पाहन को थापौं भगवाना । यहि बिधि बुधि मति ज्ञान हिराना ॥
येहि बिधि पिंड ब्रह्मंड समाना । ताको तुम छुतिया करि जाना ॥
संतन भाखा दृष्टि हिये आँखी । ताको बिधि भिनि भिनि करि भाखी ।
संतन की तुम साखि मिटाओ । अँधरी आँखि भाखि समझावौ ॥
अपना पिंड न खोजौ भाई । तुम पत्थर में ढूढ़ौ जाई ॥
खोज राह तुम दूर बहाई । सुरति पाहन माहिँ लगाई ॥
सूरति पाहन कीन्ही आसा । आसा अंत ताहि में बासा ॥
सब मिलि टेरि टेरि गोहरावै । ढूढ़ै मिलै पिंड में पावै ॥
वेद पुरान माहिँ बतलावै । बेद कहै तुहि तुहि समुझावै ॥
भागवत कहि तुहि तुहि बतलावै । सास्तर कहै तुही तुहि गावै ॥
संत कहै तुहि तुहो सुनावै । सब कहि तुही तुही करि गावै ॥
ते बुधि हीन सूझ नहिँ पावै । ता से पाहन में मन लावै ॥
है परतच्छ ब्रह्म तुहि आगे । जा को छुतिया करि करि भागे ॥
भागवत शब्द ब्रह्म तुहि बोलै । बिना संत को पट्टी खोलै ॥

॥ दोहा ॥

बिना सतसँग पावै नहीं, पढ़ि पढ़ि भर्म भुलान ।
वेद भागवत पढ़न में, नहिँ पावै सत सार ॥

॥ सोरठ ॥

संस्क्रित वेदन माहिँ, खेद खेद खानै चलै ।
संत भेद नहिँ पाइ, इन सब से न्यारी कहैं ॥

॥ छंद ॥

तुलसी बिधि भाखो संतन साखी । देखो आँखी आप तुही ॥
तुहि वेद बतावैं तुहि तुहि गावैं । तुहि पुरान तुहि तुही कही ॥

तुहि तुहि सब गाई तुही सुनाई । तुहि तुहि भौ में भर्मि रही ॥
तुहि आपा कीन्हा संत न चीन्हा । मान मनी सब दूर नहीँ ॥
सूरति त्रित जानी फोड़ि निसानी । ले ले निसानी अगम लई ॥
ये अगम ठिकाने सतगुरु जाने । चौथे पद गति गवन गई ॥
छूटै जम काला भौ जंजाला । लखि दयाल घर गवन भई ॥
पाहन अरु पानी झूठ बखानी । जानी जिन जिन मान लई ॥
चेतन घट माहीँ घट घट वाही । बूझ सुनाई समझ सही ॥
सब झूठ अचारा घट घट प्यारा । देखा न्यारा नेक नहीँ ॥
जिन बूझा लेखा अगम अलेखा । सत व्रत देखा द्वार महीँ ॥
कोइ बूझै ज्ञाना संत बखाना । अगम ठिकाना ठौर कही ॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल सुन बात, सत सुमति गति ना लखी ।
रहे बेद के माहिँ, बहे खोज आचार में ॥

॥ चौपाई ॥

सतसंगति तुम करो बनाई । तब तुम्हरी बुधि में लखि आई ॥
बेद बिधी बुधि रही समाई । नित पुरान पढ़ि पार न पाई ॥
अब तुमको सत बिधि समझावा । अभी तुम्हरी सो दृष्टि न आवा ॥
सतसंग करौ दीन मन लाई । इष्ट जो पाहन दूर बहाई ॥
कृष्न राम दोउ जम की जारा । करि करि इष्ट जगत सब मारा ॥
जा को कहो नंद को लाला । सो तो है सबहिन कर काला ॥
छल बल करि कौरौ संघारे । पंडौ भगत हिवारे गारे ॥
ता से कहो कहा तुम पैहो । खोजत खोजत जनम गँवैहो ॥

॥ दोहा ॥

कृष्न समीपी पंडवा, गरे हिवारे जाइ ।
लोहे को पारस मिलै, तौ काहे काई खाइ ॥१॥
जो कृष्न पारस हुते, लोहा पंडो मान ।
कृष्न दरस मुक्ती मिलत, गरे हिवार केहि काज ॥२॥
पंडौ चारौ नर्क को, गये युधिष्ठिर धाम ।
मित्र प्रीति भगवान की, आई कोने काम ॥३॥

कृष्न मित्र ऊधो हुते, कही एकादस माहिँ।
कृष्न दरस मुक्ती हुती, तप कीन्हा क्यों ताँहि ।।७।।

।। गज़ल ।।

बिंद्राबन बिंद कीन्ह सोई साँचा।
गुसाँई गोपी के साथ बन बन नाचा ।।१।।
गो में मन बिँधा सोई गोबिँद भाई।
मनुवाँ गोपाल मूढ़ इन्द्री माहीँ ।।२।।
इन्द्री बसुदेव भेव सेवै मन को।
नाद सोई नंद फंद जानै तन को ।।३।।
जिनने तन सोधि लिया सोई जसोधा।
पंडो तत पाँच औ झूठा सौदा ।।४।।

।। चौपाई ।।

ऊधो कृष्न मुक्ति जो देता। कीन्हौ तप केहि कारन हेता
कृष्न मुक्ति नहिँ दीन्ही भाई। तब ऊधो तप कीन्ही जाई
अपने मित्र जो कष्ट बतावा। तप करि के मुक्ती धौं पावा
ऊधो मुक्ती मिली धौं नाहीँ। तप की बिधी पुरान बताई।
तन छूटे पुनि कहाँ समाने। ये पुरान नहिँ साखि बखाने।
तन छूटे की खबर न पावे। नर्क स्वर्ग धौं कहाँ समावै।
तन छूटे की खबर बतावे। तौ मन को परतीती आवै।
मुए गये की खबर न पावा। तप और कष्ट करा सोइ गावा।
सत्त सत्त पावा की नाहीँ। ऐसी बूझ सूझ नहिँ पाई।
जीवत करतब सभी बतावैं। मुए मिलन कोउ ना दरसावें।
मुए मिलन विधि भाखे भाई। जीवत मिलन कोऊ न बताई।
जीवत मिलन विधि भाखि सुनावे। तब तुलसी के मन में आवे।
जीवत इत से जाइ न भाई। मूए उत से आवत नाहीँ।
ये पुरान कस कस ठहरावा। मुए गये की खबर न पावा।
नेक भेद उत का नहिँ गावें। इत की करनी विधि बतलावें।।
बिन देखे जग अँधरा मानै। पूछे पंडित पढ़े पुरानै।।

ये सब पोल पाल कर लेखा । मिथ्या पद कहै बिन देखा ॥
देखे की हम साखी मानैं । बिन देखी कहै झूठ समानै ॥
नर्क बिधो पंडौ जो गइया । नर्क भोग पुनि कस कस भइया ॥
आगे खबर न उनकी पाई । नर्क भोग पुनि कहाँ सिधाई ॥
नर्क भोग कहौ मुक्ति सिधावा । ये पुनि खबर कौन बतलावा ॥
ऊधो तप पैश्रम[1] बतलावा । तन छूटे की खबर न पावा ॥
तन छूटे जोइ होइ सो होई । याको भेद न पावा कोई ॥
बिना कृष्ट[1] मुक्ति नहिँ भाई । यहि बिधि कृष्न ऊधो समझाई ॥
कर तप कृष्ट इष्ट में नाहीं । बिन तप मित्र मुक्ति नहिँ पाई ॥
तुम मुक्ती उन से कस पाई । मित्र मुक्ति दीन्हो नहिँ भाई ॥
उनको साफ कहो गोहराई । ये पुरान में देखौ जाई ॥
ततवर मित्र कृष्न तेहि आगे । ऊधो रोइ जप तप को लागे ॥
पूजा इष्ट तुम्हारा लेखा । कृष्न मिले नहिँ सन्मुख देखा ॥
तुम मुक्ती कस कस करि लयऊ । ऊधो सन्मुख तप को गयऊ ॥
सन्मुख कृष्न मुक्ति नहिँ पाई । तब ऊधो तप को मन लाई ॥
पाहन नकल इष्ट को मानौ । यासे मुक्ति कौन बिधि जानौ ॥
याकी बिधि इक साखि सुनाई । प्रियेलाल चित से सुनु भाई ॥
जेहि बिधि करज साह से लावै । साह मिलै तबही कछु पावै ॥
ता की बिधी बताऊँ गाई । सुनियो नकल इष्ट को भाई ॥
दिवस एक साह चले गाँई[2] । अरज असामी कीन्ह बनाई ॥
तुम तो चले गाँव को भाई । गरज हमारी कौन चलाई ॥
सेठ नकल अपनो लिख दीन्हा । कागद मूरत अपनी चीन्हा ॥
मूरत नकल से कारज कीजौ । चाहो सोई नकल से लीजौ ॥
या से माँगि काज सब कीजौ । दाम माँगि या से पुनि लीजौ ॥
यहि कहि साह गाँव को गइया । तब भइ गरज नकल से कहिया ॥
नकल साह कछु कारज कीजे । दीजै दाम काम मोरा छीजे ॥

---

(१) परिश्रम । मुं० दे० प्र० के पाठ में पैश्रम की जगह "आश्रम" और दो कड़ी आगे "कष्ट" की जगह कृष्न अशुद्ध है । (२) गाँव को ।

पुनि वो नकल नहीँ कछु दीन्हा । बहु बहु भाँति बिनय उन कीन्हा॥
सेठ नकल मूरत नहिँ बोले । पुनि पुनि माँगै गाँठि न खोलै ॥
बहुत बहुत बिनती उन कीन्हा । मूरत गाँठि से कछू न दीन्हा॥
नकल सेठ से हाथ न अइया । माँग माँग उन जनम गँवैया ॥
असल सेठ बिन दाम न पाया । नकल सेठ से हाथ न आया ॥
येहि बिधि असल कृष्न नहिँ भाई । तुमने ता की नकल बनाई ॥
नकल कृष्न से कछु नहिँ पाई । काहे बिरथा जनम गँवाई ॥
येहि बिधि बूझि बूझि मन लीजै । समझ बिचार से कारज कीजे ॥
नकल भाव तेहिँ हाथ न आवा । ये बिधि बूझौ नकल प्रभावा ॥
साहष्ट कृष्न ऊधो सँग रहिया । मुक्ति न पाई तप को गइया ॥
असल कृष्न की ये बिधि कहिये । मुक्ति नकल से कस कस पइये ॥
एकादस में कही बखाना । देखौ अपना जाइ पुराना ॥
असल कृष्न की बिधी बताई । नकल कृष्न की कौन चलाई ॥
जिन्ह गोपिन सँग कीन्ह बिलासा । समझ भाव मन बूझौ आसा[1] ॥
विषय उपाव हाथ से कीन्हा । दौड़ दौड़ पाँवन से लीन्हा ॥
छूटि देहि जगन्नाथ कहाये । कर्म भोग पाँव हाथ कटाये ॥
अपना भोग आपने पाया । तुम ने ब्रह्म कौन बिधि गाया ॥
असल कृष्न विधि ऐसी जोई । नकल कृष्न की कैसी होई ॥
असल कृष्न जो मुक्ति न पाई । कर्म भोगि कै पैर कटाई ॥
कहैं पुरान कृष्न गये धामा । जगन्नाथ भये कहौ प्रमाना ॥
कभि कभि गये धाम वतलावौ । भागवत कृष्न धाम समझावो ॥
वोही कृष्न जगन्नाथ वतावौ । वोहि जगन्नाथ कृष्न करि गावौ ॥
धाम गये की संध न पाई । यहाँ रहे की झूठ जनाई ।
कौन प्रमान दोऊ में कीजे । सत्त असत्त कौन को लीजे ।
या में सत्त कौन को बूझा । कहि समझावौ तुलसि अबूझा ।
नानक संत साखि वतलाई । कृष्न काल तिन साखि सुनाई ।

---

(१) आशय—मतलब ।

॥ सवइया ॥

कालै खाइ गयौ भगवान, सो जाग्रत या जुग जा की कला है १
कालै खाइ गयौ ब्रह्मा सिव, सो कालै खाइ गयौ जुगिया है २
इंद्र मुनिन्द्र सुरासुर गंधर्व, जच्छ भुजंग दिसा बेदिसा है ३
ये तौ भये सबही बस काल के, नानक संत अकाल सदा है ४

॥ चौपाई ॥

अब कबीर की साखि बताऊँ । कहि कबीर बिधि भाखि सुनाऊँ ॥
दस औतार कबीरा गावा । ता की शब्द बिधी समझावा ॥
वोहू कही काल बस गइया । दस औतार काल के कहिया ॥

॥ शब्द ॥

आवै जाइ सो माया साधो, आवै जाइ सो माया ।
है प्रतिपाल काल नहिँ वा को, ना कहुँ गया न आया ॥१॥
क्या मकसूद मच्छ कछ होता, संखासुर न सँघारा ।
है दयाल द्रोह नहिँ वा के, कहौ कौन को मारा ॥२॥
वे करता न बराह कहाये, धरती धरा न भारा ।
ये सब काम साहिब के नाहीँ, झूठ कहै संसारा ॥३॥
वे करता नहिँ भये कलंकी, नहीँ कलिंजै मारा ।
है दयाल सबहिन को साहिब, कहौ कौन को मारा ॥४॥
खंभ फाड़ि कै बाहर होई, तेहि पतीजे सब कोई ।
हरनाकुस नख उदर बिदारा, सो करता नहिँ होई ॥५॥
परसराम छत्री नहिँ मारे, ये छल माया कीन्हा ।
सतगुरु भक्ति भेद नहिँ पाये, जीव अमिथ्या दीन्हा ॥६॥
सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पषान नहिँ बंधा ।
वै रघुनाथ एक करि सुमरै, सो नर कहिये अंधा ॥७॥
गोपी ग्वाल न गोकुल आया, मामा कंस न मारा ।
वो दयाल सबहिन को साहिब, ना जीता ना हारा ॥८॥
वै करता नहिँ बोध कहाये, नहिँ असुरन को मारा ।
ज्ञान हीन करता नहिँ होई, माया जग भरमाया ॥९॥

दस औतार ईसुरी माया, करता करि जिन्ह पूजा।
कहै कबीर सुनो हो साधो, उपजै खपै सो दूजा ॥१०॥

॥ चौपाइ ॥

सूर सब्द या बिधि कहि भाखी। उनहुँ कही कर्मन में साखी॥

॥ शब्द ॥

कर्म गति टारैउ नाहिँ टरै।
कहँ वै राहु कहाँ वै रबि ससि आनि सँजोग परै ॥टेक॥
गुरु बसिष्ठ पंडित मुनि ज्ञानी, रुचि रुचि लगन धरै।
तात मरन सिया हरन राम बन, बिपति में बिपति परै ॥१॥
पंडो के प्रभु बड़े सारथी, सोऊ बन निकरै।
दुरबासा से स्राप दिवायौ, जदु कुल नास करै ॥२॥
रावन अस तैंतीस कोटि सब, एकछत राज करै।
मिरतक बाँधि कूप में डारै, भाभी सोच मरै ॥३॥
हरीचंद ऐसे भये राजा, डोम घर पानि भरै।
भारथ में भरुही के अंडा, घंटा टूटि परै ॥४॥
तीनि लोक करमन के बस में, जो जो जनम धरै।
दस औतार भाभी के बस में, सूर सुरति उबरै ॥५॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल विख्यात, औतारी कर्मन कहे।
वहे भोग भो माहिँ, सब सब संत पुकारिया॥

॥ चौपाई ॥

राम कृष्न औतारी आहीँ। भोगे कर्म जाइ तन माहीँ।
दस औतार निरंजन धरिया। सोऊ काल बस भौ में परिया।
सोई निरंजन सोई निरंकारा। सोई काल धरे औतारा।
कर्म भाव तिन देही पाई। करै भोग भौ में भरमाई।
सारा जग वेदन भरमैया। औतारी साँचे गोहरैया।
दीनदयाल पुरुष है न्यारा। निरंकार काल के पारा।
निरंकार तक काल न जावै। वहँ की गम जोती नहिँ पावै।
वो स्वामी है अगम अगाही। जहँ संतन ने सुरति समाई।

सुरति समाइ पुरुष को देखा। मिला पुरुष गम अगम अलेखा॥
उनका लेखा बेद न पावै। नेति नेति चारो गोहरावै॥
पंचम बेद सुषम नहिँ जाना। षष्टम प्रसंग बेद कहैं नाना॥
चारि बेद पुनि गुप्त रहाई। ता मेँ कागद लगै न स्याही॥
तुम पुनि पुरुष भेद नहिँ जाना। दसो बेद कहे नहिँ पहिचाना॥
दसो बेद से भेद नियारा। पुरुष भेद नहिँ पावै पारा॥
निरंकार जोती नहिँ जाना। जहँ पहुँचे कोइ संत सुजाना॥
तुलसी सैल सुरति से कीन्हा। पाया अगम गम्म का चीन्हा॥
पत्थर पानी दूर बहावा। तब घर अगम राह को पावा॥
बेद कितेब पुरान उठाये। तब लखि सुरति अगम को धाये॥
नेम अचार चार नहिँ माना। बोलै सब घट माहिँ दिखाना॥
बोल अबोल दोऊ के पारा। तहँ वाँ तुलसी सुरति सँवारा॥
छर अच्छर निःअच्छर पारा। देखा तुलसी निरखि निहारा॥
अगम अगाध पुरुष दरबारा। तुलसी मिलै सुरति की लारा॥
तन मेँ देखि ब्रह्मंड पसारा। सो हिये हेर सुरति की लारा॥
हिये मेँ हेर फोड़ ब्रह्मंडा। हिये की लार सार नौखंडा॥
अंतर हेर हिये के माईँ। अंड फोड़ ब्रह्मंड दिखाई॥
अंतर खोज कीन्ह हिये माईँ। अंतर हिये माहिँ दरसाई॥
तन मेँ तोड़ फोड़ हिये कीन्हा। अंतर सार हिये मेँ चीन्हा॥
अब या का बरतंत बताऊँ। बारहमासा बरनि सुनाऊँ॥
द्वादस सन संवत का चीन्हा। मास मास सुनि गहौ यकीना॥
हिये बिच सुरति समझि घर आई। बारहमासा बरनि सुनाई॥

॥ दोहा ॥

हिये हेरा स्रुत सैल से, बारह मास बयान।
जानि सूर कोइ संत जन, सुनै सो सज्जन कान॥१॥
गुइयाँ गोह गुमान गुन, गिरि बानी बिच बास।
फाँस कटी कटि सुरति की, कीन्हा अगम निवास॥२॥

॥ सोरठा ॥

बारह मास मिलाप, सुरति आप अपनी कही ॥
लही जो तुलसीदास, बारह मास समझाय के ॥

॥ बारहमासा ॥ (सवैया)

गुइयाँ री गुन गोह गिरा बिच मैं न रहौंगी ॥ टेक ॥
आली असाढ़ के मास बिलास, सो बास पिया बिन मोहिं न भावै ॥
गरजि अकास की भास रवी, छबि बादर की कही बात न जावै ॥
बिजली चमकै घन घोर घटा, घर घाट पिया कोऊ नेक न पावै ॥
गोह गुना गिरि बीच बसी, सो फँसी तुलसी चित चेत न आवै ॥

(कड़ी)

अगमन आयो असाढ़हि मास । गरजत गगन रवी तजि भास ॥
भान घटा नभ नैन निहार । सूरति समझि चली नभ पार ॥
पिया पद साज गहौंगी ॥ १ ॥

(सवैया)

सावन सोर करै बन मोर, सो दादुर प्यास पपीहा पुकारी ॥
ताल मही हरी भूमि भई, सो नहीं कोइ पंछिन चोंच चुकारी ॥
मैं मन में सुनि कै बिगसी, जस ताल रवी बिच कंज सुखारी ॥
जो तुलसी गुन माहिं रही, सो भई जम साथ के संग दुखारी ॥

(कड़ी)

सावन सरवर नीर अपार । बरसत गगन अखंडित धार ॥
गैल गली सब हरियल भूमि । नील सिखर चढ़ि सूरति घूमि ॥
चमक बिजली की सहौंगी ॥ २ ॥

(सवैया)

भादों का भेद कहौं जो निखेद, सो खेद करम्म को काढ़ि निकारी ॥
सूरति सूर भई मति पूर, सो नागिनि नारि डसी जस कारी ॥
चेत चली जो अकास अली, सो गली गुन गोह से होत नियारी ॥
जो तुलसी सुख नारि भई, सो गई ले लार लगन्न के पारी ॥

(कड़ी)

भादों भर्म भेद सब छूटि । काया कर्म कलस गये फूटि ॥
नागिनि बिरह मूल डसि खाई । येहि बिधि सूरति गगन समाई ॥
लगन सँग लार लरौंगी ॥ ३ ॥

(सवैया)

कूर कुवार कुमति को जार, सो बारि बनी सब खाक मिलाई ॥
कूकर काम भये जो निकाम, सो ठामहिँ ठाम जो भूमि भुलाई ॥
सुन सूरति भाल सो ताल मई, गइ मान सरोवर पैठि अन्हाई ॥
तुलसी सोइ संत के संग अड़ी, सो खड़ी सुन सब्द में जाइ समाई ॥

(कड़ी)

कुमति कुवार जारि जस फूस । कूकर काम रहे सब भूसि ॥
मानसरोवर सरस अन्हाई । सूरति समझ चली रस पाई ॥
सब्द सुनि सार भरौंगी ॥ ४ ॥

(सवैया)

कातिक किरनि भई ससि सूर, सो दूर भये जल बादल सारे ॥
भूमि में थीर भये जल नीर, सो नार नदी स्रुत सिंध सम्हारे ॥
सिंधहिँ बुंद मिले चढ़ चाल, सो काल कला जम दूर निकारे ॥
तुलसी जिन चाँप धनू पे धरी, सो करी सम सूरति संत पुकारे ॥

(कड़ी)

कातिक किरनि भास भये सूर । सलितहिँ समुंद मिलै जस मूर ॥
बुंद सिंध बिन फिरत बेहाल । मिलि गया सब्द कटे जम जाल ॥
सुरति घर चाप चहौँगी ॥ ५ ॥

(सवैया)

अगहन मास अनंद अली, सो चली पिया पास पलंग बिछाई ॥
पयौ पलक के पार पती, सो सती सत सूरति सार लखाई ॥
सेज मिलाप भये पति आप, सो जीवत जनम सुफल्ल कहाई ॥
तुलसी मन में सुख चैन भई, सो गई बर आदि सो साध समाई ॥

(कड़ी)

अगहन अली पिया पलँग बिछाव । जीवत जनम मिलौ अस दाँव ॥
पिया की सेज सुख सज स्रुति सार । नित प्रति केल करौं पति लार ॥
अली बर आदि बरौं गी ॥६॥

(सवैया)

पूस पुरुष की होस भई, सो गई सतलोक में सोक सिहारी ॥
प्यारी सखी गुरु गैल गई, सो कही पद प्यारे की चौज चिन्हारी ॥

छाइ रही सुन मंदिर में, घर घाट पिया लखि बाट बिचारी ॥
पिय रस रीत की जीत भई, सो कही तुलसी जिन नैन निहारी ॥

(कड़ी)

पूस परम पद पुरुष निवास । सुति सत लोक करै नित बास ॥
सिष गुरु गवन मिले मत पाइ । प्यारी पुरुष रही घर छाइ ॥
सखी सुख जानि कहौंगी ॥७॥

(सवैया)

माह[1] मनोहर महल चढ़ी, सो खड़ी खिरकी तक तोल बखानी ॥
जानि कही सोइ साध सुजान, सो मानी जिन्ही सोइ पास समानी ॥
पानी दूध की छान करी, सो भरी लखि सूरति सब्द ठिकानी ॥
जीवत ही मरि जात सही, सो कही तुलसी जिन जानि निसानी ॥

(कड़ी)

माह महल झँझरी चढ़ि ताक । पिया की सेज सुख सत सत भाख ॥
कोइ कोइ सज्जन साध बिलास । पहुँचे अगम पिया घर बास ॥
कही जिन जिवत मरौंगी ॥८॥

(सवैया)

फागुन फहम करौरी सखी, लख जात बह्यो संसार असारा ॥
सूरति सार के पार लखै, सो थकै मन मारग मौज अपारा ॥
संत सिरोमनि सैल कही, सो गई गुरु मारग साँझ सवारा ॥
प्यारे पिया की पकड़ गही, सो जकड़ हिये जंजीर सी डारा ॥

(कड़ी)

फागुन फरक भयो संसार । जिन जिन सुरति करी तन जार ॥
सतगुरु मूल गता सुख बैन । जब लखि लखी संत की सैन ॥
समझ सोइ पकड़ धरौंगी ॥९॥

(सवैया)

चैत चली सो सुनौरी अली, गइ गैल गली सुन रीति निहारी ॥
सेत सरासर भेद लखी, सो पकी त्रिधि वेनी के घाट विचारी ॥
सारी सरोवरि ताल तकी, पकि प्यारी अन्हाइ के काज सँवारी ॥
जो तुलसी चढ़ि के जो चली, सो अली खिरकी विधि आनि पुकारी॥

---

[1] माघ ।

(कड़ी)

चैत चली जिन चरन निहार । सो उतरी भौसागर पार ॥
आद अरु अंत पंथ घर बाट । सो पद परसि त्रिबेनी घाट ॥
चीन्ह खिरकी को चहौंगी ॥१०॥

(सवैया)

बैन बिधी बैसाख बिलास, सो पास पिया नित सैल सँवारे ॥
पार के सार बिहार करै, सो बिचार बिधी सुत तार निहारे ॥
प्रीतम मेल भया रस केल, सो केल किवार के पार पुकारे ॥
तुलसी तन में जिन जान लखे, सो भखे पिया पास के भास निकारे ॥

(कड़ी)

करि बस बास बैसाख बिलास । छूटि गई तनमन की आस ॥
प्रीतम प्यारी मिले मन खोल । रँग रस रीति सने सब बोल ॥
पिया सँग केल करौंगी ॥११॥

(सवैया)

जेठ की रीत करी मन जीत, सो प्रीत की बात की सैन सुनाई ॥
चेत चली तजि काल बली, सोइ जाल जली दूख दूरि नसाई ॥
जिमिधाइ जोधीरगँभीरनदो, सुत सार सँवारि जो सब्द समाई ॥
ये मुख बैन कहै तुलसी, सो लसी सत द्वार जो सब्द को पाई ॥

(कड़ी)

जेठ जबर तन मन सुत रीत । सुरख सबज चली अगमन जीत
सेत जरद रँग स्याम भुलान । पाँचोइ तत्त करी नहिँ कानि
सखी सुनि पार फिरौंगी ॥१२॥

केवल ज्ञान निरबान निवास । ता से परे कहै तुलसीदास ॥
संत चरन धरि धारो धूरि । अगम बरन बरनौ पद मूर ॥
निडर घर सुरति भरौंगी ॥१३॥

(सोरठा)

बारह मास बयान, हिये हेरि कोई पद लखै ।
चखै चरन रस रीति, प्रीति पार पुर्षहिँ मिलै ॥

॥ चौपाई ॥

जिन जिन हेर हिये बिच पावा । बारह मास समझि चित लावा ॥
समझि समझि कोइ बूझै साधू । सरति सहर घर बरन अगाधू ॥

चित दे गुनै लखै सुनि काना। संत सतसंग करै परमाना॥
बिन सतसंग साँच नहिँ आवै। धर धर धोखे जन्म गँवावै॥
जिन सतसंग रंग रस पाई। हिरदे सिर कपाट खुलाई॥
तन मन सुरति फोड़ असमाना। मद्ध हिये तन तिमर नसाना॥
मोड़ी सुरति पोढ़[1] पद लारी। तेज मास लखि सुरति निहारी॥
हियेदृग नैन निरखि जस देखा। संत सैन कोई करै बिबेका॥
जिन जिन सुख दुख दूरि बहाये। कर्म काल कृत धोय नसाये॥
तन बिच तोड़ा सुरति निसाना। सुन्न सब्द स्रुति गगन समाना॥

॥ दोहा ॥

सुन्न सब्द तन तोड़ि कै, मोड़ि गगन की गैल॥
मूल बिलावल में कहूँ, बूझै सज्जन सैल॥

॥ बिलावल ॥

तुलसी तन तोड़ फोड़ मोड़ पोढ़ पाई॥ टेक॥
देखो नृत नैन सैन बूझो सतगुरु के बैन।
छाँड़ो दुख सुक्ख सैन संतन मत चाही॥
अंदर में आदि खोज उतरै औजाल बोझ।
मारो जम काल फौज चौज चार माहीँ॥
देखो हिये हेर खोज अंत कहूँ नाहीँ।
सूरति नृत सैल खेल तोड़ै असमान पेल॥
सब्दा रस सुरति मेल मार दे चढ़ाई।
येहि विधि चित चेत हेत मारो मन सूर खेत॥
छाँड़ो सगरी अचेत हेत सेत माईँ।
ता से मन चेत बूझि देखि दृष्टि जाई॥ २॥
बाहर सब झूट लूट ऐसा मन टूट फूट।
तन में मन आतम मोट भूला भल साईँ॥
ये तो सब काल जाल राम कृष्न निरख हाल।
या के सँग चलो न चाल छोड़ि भेद भाई॥

(१) मु० द० प्र० की पुस्तक में "फोढ" अशुद्ध है।

या से सतसँग सार खोजु मौज माहीँ ॥३॥
साँची कहै पूर अदूर बूझै कोई संत सूर।
जानै अगमन अपूर मन तन रत राही ॥
का से कहौँ बात चौज सूरति मन मार मौज।
छूटै दिल दरज दौज खोज आप माहीँ ॥
रोज पार सार देख अंतर बिच पाहीँ ॥४॥
बूझौ मन सीख लीक चाखौ रस अगम चीख।
छूटै भौ भर्म भीख पी के पार साईँ ॥
देखौ अज अमर हेर कीजे ब्रह्मंड सैर।
लीजै पिउ पार हेर फेरि मेहर पाई ॥
जा की गम घोर सोर कँवलन के माईँ ॥५॥
सुन्न धुन्न सुन्न माहिँ सूरति से निरख जाइ।
हिये माहिँ हरष पाइ लै से लै पाई ॥
बूझै कोई सब्द बुंद पहुँचै पार अगम सिंध।
सूरति से लखौ संध फंद फाड़ जाई ॥
सब्दा रस सुरति चीन्ह लीन पार पाई ॥६॥
पाया सतगुरु दयाल मारा मन डंड काल।
पाया पद पदम हाल साल जाल नाहीँ ॥
कीन्हा बहु प्यार यार लेखा अगमन अपार।
हर दम हिये लौ की लार कर्म को छुड़ाही ॥
ये तौ तत मत्त सार तेरे तिल राही ॥७॥
तुलसीदास पास आस सूरति नित चढ़ि अकास।
सोहत अगमन बिलास बुंद सिंध आई ॥
ऐसी दिन दिवस रैन पौँढ़ी पलँगा पै सैन।
चीन्हा घर आदि ऐन प्यारा गुरू पाई ॥
न्यारा नित नित निहार प्यारे के माईँ ॥८॥
याही विधि कहत सूर सतगुरु की चरन धूर।
जाना सगरा जहूर जल जल ज्यौँ जाई ॥
मो को प्रिये प्रिये लाग छिन छिन उठि निरख भाग।

मन से जग सुरति त्याग खग ज्यौं उड़ जाई ॥
छिन छिन नित करै सैल घृत ज्यौं दधि माईं ॥६॥
तुलसी तन निरख सार सूरति पेखा बिहार ।
देखा पद चटक चार दीदा दरसाई ॥
सुखमनि मन मन्न लार आगे सूरति सँवारि ।
पाये पिया आग पार पूरा मद माईं ॥
तुलसी तुलसी निहार बोले घट माईं ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल लखि बात, ये अनंत न्यारी कही ।
सूझि बूझि हिये सोय, जब अरूप गति को लखै ॥

॥ चौपाई ॥

ये घर अगम भेद है भाई । सतसँग करै लखै तब जाई ॥
ये अगाध की बात अनूपा । बूझै संत मिलै कोइ भूपा ॥
अगम पंथ सतगुरु से पावै । सतगुरु मिलै तो राह बतावै ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल । चौपाई ॥

स्वामी से बूझौं इक बाता । ताकी विधी कहौ बिख्याता ।
जग निस्तार वेद से होई । कै कोइ और राह मति सोई ॥
सब मिलि कहै वेद निस्तारा । वेद बिना नहिं उतरै पारा ॥
आदि वेद चारो जुग माहीं । जिव भौ पार उतरिके जाई ॥
ऐसे सबी सबी मिलि गावे । सतगुरु मिलैं भेद बतलावे ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

सतगुरु मिलैं कहैं दरसाई । विना संत नहिं बूझ बुझाई ॥
वेद भेद विधि नाहीं जानै । वाम्हन पंडित एक न मानै ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल । चौपाई ॥

स्वामी दया भाव करि दीजे । दास जानि प्रभु किरपा कीजे ॥
हे दयाल या की विधि भाखो । मो पर दया दृष्टि सोइ राखो ॥
मोहिं प्रभु दास भाव करि जानो । किरपा करि सोइ करो बखानो ॥
मैं चेरा तुम चरन विचारा । भाखो आदि अंत निरवारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

अब भाखूँ सुन आदि अपारी । बेद अन्त भाखूँ सब झारी ॥
सत्त पुरुष इक रहै अकाया । अंस तासु सोइ निरगुन आया ॥
गुन तीनों से सरगुन भइया । सोइ भगवान बैराटी कहिया ॥
सोइ बैराट से ब्रह्मा भइया । तुम कहौ ता ने बनइया ॥
पुनि उन निरगुन बेद बुझाई । सोइ निरगुन ने नेति सुनाई ॥
सत्त पुरुष निरगुन से न्यारा । निरगुन काल न पावै पारा ॥
पुरुष अंश से सब जिव आये । निरगुन से सरगुन में नाये ॥
पाँच तत्त गुन तीनि समाई । भये बैराट कर्म बिधि जाई ॥
जा को जगत कहे भगवाना । कर्म भाव चर अचर समाना ॥
रजोगुन ब्रह्मा ता से भइया । पहिले नाद बेद पुनि कहिया ॥
पाँच तत्त बिन नाद न सोई । सो बिन नाद बेद कस होई ॥
पुरुष नाम निरगुन से न्यारा । सोई अंस जिव जुग जुग सारा ॥
आदि पुरुष को जीव भुलाना । निरगुन काल माहिँ उरझाना ॥
निरगुन नेति सरगुन बतलावै । यह बैराट बेद बिधि गावै ॥
सत्त पुरुष को मरम न पावै । निरगुन सरगुन को गोहरावै ॥
आदि पुरुष को संत बखाना । वो घर पहुँचे सुरति निसाना ॥
अब या का दृष्टांत बताऊँ । प्रियेलाल सुनियौ सत भाऊ ॥
प्रथमहिँ जीव पुरुष से आया । निरमल ज्ञान संग सब लाया ॥
परथम जुग जिव निरमल होई । तारन उजला होत न सोई ॥
जिव उजला जुग उजला भाई । जबहि बेद तारन कस गाई ॥
कहै वेद तारन की बाता । तरन कहा कर कीन्ह बिधाता ॥
उजला जुग उजला जिव आवा । ताजा पुरुष पास अस गावा ॥
तब तारन कस बेद बतावा । मैला जिव होइ तरन लखावा ॥
मैल तौ जब हता न भाई । जब यह कस निस्तार बताई ॥
उजला कपड़ा धोवन कहिया । सो धोबी के कस कस दैया ॥
मैले को धोबी समझावै । उजले को कस धोइ बतावै ॥

या की बिधी बतावौ भाई । कस उजला धोवन बिधि गाई ॥
उजला जीव वेद सँग साथा । मैला होत न पकरै हाथा ॥
मैला करन बेद समझावा । जब जोइ उजला ज्ञान हिरावा ॥
उजला कर निस्तारै बेदा । जीव जो आदि खानि बस खेदा ॥
कर्म काल सँग कीन्ह समाधा । अस अस बेदन करी उपाधा ॥
वेद तो लिखा आदि से भाई । निरमल कोमल कर्म लखाई ॥
जैसे बनिया करै दुकानै । बेचि खरीदि न टोटा जानै ॥
लेन न देन दुकान न जागा । टोटा करज ताहि कस लागा ॥
बेद नाद दोउ संगहि आवा । तुम्हरे सास्तर अस अस गावा ॥
बेदहि निरमल मैला कीन्हा । निरमल जब कछु लेन न देना ॥
पुरुष पास जिव निरमल आवा । जुग निरमल जिव निरमल गावा ॥
धोवन वेद भाख कस भाई । जब उजला उजले की राही ॥
झूठा सौदा बेद लखावा । उजला मैला करन को चावा ॥
मैला रहै जगत भौ भावै । उजला रहै तो घर को जावै ॥
मैला रहै खानि में आवै । येहि कारन किया बेद उपावै ॥
तीरथ व्रत और चारो धामा । जप तप इष्ट नेम बहु कामा ॥
ये सब पाप पुन्य बतलावा । येहि बिधि मैला बेद करावा ॥
कर्म धर्म सब जीव फँदाई । उजले घर की राह भुलाई ॥
घर की राह का धोका दीन्हा । करे कर्म फिरि भयो मलीना ॥
आदि अंत घर सुधि नहिँ पावै । कर्म भर्म बिधि वेद बतावै ॥
या की साखि बतावौ भाई । जग जिव झारि खानि में जाई ॥
वेद निस्तार करन को आवा । उजला था तब नहिँ समझावा ॥
उजले में नहिँ समझा भाई । मैले को कस पार लगाई ॥
जस सहुकार चोर घर लीन्हा । घेरा ताहि कैद में कीन्हा ॥
चोर ज्ञान संग छूटै नाहीं । साह ज्ञान सँग घर को जाई ॥
साह संग सुध जब ही पाता । तो अपने घर को चलि जाता ॥
यों अपना घर भूल न चीन्हा । ता से वेदन फाँसी दीन्हा ॥

|ह संत से उतरै पारा। चोरइ बेद कैद में डारा॥
|र सँग ने फाँसी डारा। फाँस डारि कर कहै उबारा॥
जन जुगन सँगहि चलि आवा। देखौ सब जग खानि समावा॥
|इ उबरन की खबर न लावा। मरि मरि गये खबर नहिँ पावा॥
ए मुक्ति सभी मिलि गावा। जीवत मुक्ति न कोउ बतलावा॥
हि बिधि बेद रीति है भाई। मुए मुक्ति की बेद बताई॥
|ीवत मुक्ति देखिये आँखी। ता का मता कहनि सब भाखी॥
|ीवत जीव मुक्ति को पावै। तहु नहिँ आदि अंत घर जावै॥
र की राह मुक्ति से न्यारी। सो सोइ जानै संत बिचारी॥

॥ प्रियेलाल उवाच। चौपाई॥

|ियेलाल कहै बूझा स्वामी। बेद बिधी सब झूठी जानी॥
ध्या तरपन नेम अचारा। ये भी जाना झूठ पसारा॥
नसे मुक्ति बिधी है न्यारी। ऐसी मन में समझ सिहारी॥
|क्ति बिधी से पुरुष नियारा। सो पावै संतन की तारा॥
|सी खूब खूब मन आई। तब पुनि गिरे चरन पर धाई॥
वामी करो मोर निरबारा। मैं अब लागेउ चरन तुम्हारा॥
|ो कछु कही सत्त मन भाई। जेहि बिधि तारा कूँची लाई॥
|सी पोढ़ पोढ़ मन मानी। जो जो भाखा मनहिँ समानी॥
अब अस दया करो हो स्वामी। मन रहै चरन माहिँ लपटानी॥
|ोरे मन बिधि ऐसी आई। तुम बिन राह कहूँ नहिँ पाई॥
अस कहि माल डारि जिन दीन्हा। रात रहन मन में अस कीन्हा॥
सुरत गुपाल सुनो तुम भाई। तुम अपने घर जाउ बनाई॥
हम तो रहैं चरन के तीरा। जब मन आवै मौज सरीरा॥
सुरत गुपाल गये घर अपने। ये तो चरचा सुनो न सुपने॥
येहि बिधि कहि अपने घर आये। प्रीयेलाल रहन मन भाये॥
ज्ञान उठा बैराग समाना। देखा जग झूठा संधाना॥
तिरिया पुत्र और धन धामा। तन छूटे कोई आवै न कामा॥

नन पानी जस ओस समाना । फूटै बिनसै नित नित जाना ॥
येहि बिधि समझि परा मन लेखा । ये जग ज्यों सुपने सम देखा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

प्रियेलाल मन बिरह समानी । झरि झरि परै नैन से पानी ॥
उठा ज्ञान जस सिंध समाना । उठी तरंग पुनि लहर प्रमाना ॥
मुख से स्वाल बात नहीं आवै । बिरह लहर जस भुवँग सतावै ॥
भुवँग डसे जस मन लहराई । मन में जहर लहर सी आई ॥
जग देखा तन कछू न भावै । जला जंत जग बूड़ समावै ॥

॥ प्रियेलाल उवाच । चौपाई ॥

अब स्वामी मोहिँ सरनै लीजे । दया भाव मोहिँ पर कीजे ॥
कपड़ा नीके फेँकि किनारा । तोड़ जनेऊ कंठी डारा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

पुनि तेहि ज्ञान भेद समझावा । ताके मन कछु धीर न आवा ॥
पुनि तेहि बोधज्ञान गति गाई । डारि जनेऊ गले में लाई ॥
कपरा कंठी गहि पहिरावा । बूझा ज्ञान बोध मन आवा ॥
कपरा में विधि सिद्ध न होई । संत की राह और बिधि सोई ॥
प्रियेलाल सुन चित दे काना । संत रीति इस करौँ बखाना ॥
त्यागन संग्रह संत न जाना । ये मन कर्म भर्म भरमाना ॥
त्यागन करै सोई पुनि पावै । फिरि फिरि भोग भाव जग आवै ॥
संग्रह बंधन जगत बँधाना । ये दोउ भर्म भेद जग माना ॥
संत मता दोऊ से न्यारा । संग्रह त्यागन झूठ पसारा ॥
संतन सुरति निरति ठहराई । मन थिर करि करि गगन चढ़ाई ॥
सूरति सूर बीर भइ द्वारे । नभ भीतर चढ़ि गगन निहारे ॥
सुरति सुहागिन सूर सिधारी । नित नित गगन गिरा से न्यारी ॥
ता की मैं अब सब्द सुनाऊँ । संत मते की राह लखाऊँ ॥

॥ होली १ ॥

सुरति सुहागिन सूर भई री । गगन गिरा नभ गवन गई री ॥टेक॥
अधर हिये चढ़ि चमम चलीरी । पिय को परस घर आई अलीरी ॥

अरध उरधबिच सुरति समानी । निरखा सब्द निरत अलगानी १
महलन जब जब पिय को निहारी । प्रीत पुरातम प्रेम पियारी ।
अगम अधर घर निरखि निसानी । पिय को परसि पद रही लपटानी २
सुख सागर मिलि सिंध समावा । बुंदा समुंद साध घर आवा ।
ज्योँ पपिहा पिउ प्यास पुकारी । स्वाँति बुंद पिउ पास मिलारी ३
तुलसी तन मन सुरति लगाई । लैकी लगन पिय पलँग बिछाई ।
सेज सम्हारत हिये हुलसानी । ज्योँ जल मिलि जल धार समानी ४

॥ होली २ ॥

अजब अली एक गगन गली री । सुरति चमक चढ़ि चटक चलीरी । टेक।
बिधि बिधि पुहुप बाग बन देखा । कहा कहैँ अली अगम अलेखा ।
ता बिच कंज कँवल मधु राजै । बिटप बरत तरु बिहँग बिराजै १
सोभा भूमि अधिक छबि छाई । सुन री सखी लख सुरति समाई ।
तहँ सत सरवर ताल अनूपा । हंस भवन तन आतम भूपा ।२।
हिये के नैन दुरबीन लगाई । सिंध बुंद परमातम पाई ।
खिरकी अजर अली चढ़ि देखा । जहँ इक साहिब रूप न रेखा ॥
तुलसी सतगुरु अगम लखाई । लै की लगन लखि लोक सिधाई ।
दुख सुख दोष सोक सब छूटा । कलसा कुंभ करम का फूटा ॥४॥

॥ दोहा ॥

प्रियेलाल मत मूर, सूर सुरति अस बिधि भई ।
गई गगन के पार, सार समझि संतन कही ॥

॥ चौपाई ॥

अस अस सुरति लोक लखि देखा । संत रीति रस अगम अलेखा ॥
बिधि बैराग त्याग तन केरी । ये सब खानि जगत भौ बेरी ॥
जोगी जोग करत भरमाने । स्वाँसा पवन चढ़ावा जाने ॥
इड़ा पिंगला सुखमनि माईँ । पवन भवन में जाइ समाई ॥
गगन बिनसि सुनि स्वाँस नसाई । मनमत जोगी जुगति न पाई ॥
ज्ञानी गुनि मन आतम जानी । वा मन को पुनि ब्रह्म बखानी ॥
आदि अंत का भेद न जानै । संत मता कैसे पहिचानै ॥

संत मता कछु रीति नियारी। बूझै साधू समझ बिचारी ॥
अस सुनि इष्ट भाव औतारा। ये सब जानौ काल पसारा ॥
गढ़ि मूरति मंदिर में धारा। ये सब जानौ झूठ पसारा ॥
पानी पाहन में मन लावै। अगिनि तत्त जल तत्त समावै ॥
नकल कृष्न कहौ किन को तारा। अस असुरन जिव आतम मारा ॥
नकल कृष्न पाहन की आसा। पाहन मुक्ति काल की फाँसा ॥
या से जिव उबरै नहिँ खाना। जुग जुग बंधन माहिँ बँधाना ॥
कृष्न राम जो संत बताया। ये औतार कोउ नहिँ गाया ॥
गो इंद्री गोबिंद कहाई। मनहिँ कृष्न गोपिन के माईँ ॥
गुन ही तीनों ग्वाल कहावै। बिंद बीच बिंद्रावन आवै ॥
गो गोपी बिच कान्ह कहाई। ये मन बस रस इंद्री माई ॥
अब या की सुन साखि बताऊँ। संध सब्द बिच भाखि सुनाऊँ ॥

॥ धमार ॥

अहो बस कान्हा गो माहीँ हो ॥ टेक ॥
गो की गोप करम कहि ऊधौ, गुन सँग गैल गुवाल।
नित नित चालि चले मधुबन की, इंद्री रस खानि बसाई ॥१॥
अच्छर रमत राह भइ राधे, नंद नाद सुत कान्ह।
खेलन खेल मेल फरफंदी, बूँदी तन रुचिर सुहाई ॥२॥
सबबृज वनिता विन्द्रावन कीन्हा, जसुमति सोमति जान
जो जस बुन्द सिंध से आये, ता की कर खोज लगाई ॥३॥
अरी अरजुन भौ खानि भीम बस, नकुल भये जग आई।
साधे देह देख आपन को, दो द्रष्ट दो द्रष्ट लखाई ॥४॥
सूरत सुधार पार तुहि कान्हा, सुनि विधि बात विचार।
छूटै मान खान चौरासी, सूरति सत द्वार लगाई ॥५॥
तुलसी तोल बोल मन मूला, भूल मरम नहिँ जान।
मन गुन ग्वाल गोप गोपी सम, नित नित विधि भवन समाई ॥६॥

॥ होली ॥

ाहो आली होरी लख बौरी हो ॥ टेक ॥
रति रंग रंगौ मन केसरि, ले पच पाँच निकारि ।
खियाँ पचीस पकरि पिचुकारी, मारौ मन को मुख मोरी ॥१॥
रम अबीर गुलाल गुनन को, करि सतसंग उड़ाई ।
ान को छान छरी भरि सूरति, सनमुख नैना नित जोरी ॥२॥
ोया चित्त अरगजा आसा, कुमकुम कुमति बिसार ।
र धर धूर कूर सब काढ़ौ, करमन कर कीचर धो री ॥३॥
र तन नगर बिंद बिन्द्राबन, तन मन चीन्ह बिहार ।
ारी अंग भंग कर जानो, तुलसी सज साज मिलौ री ॥४॥

॥ सोरठा ॥

ये मन तनहिँ बिचारि, गो गोपिन मेँ रमि रहा ।
गही न सतगुरु बाँहि , थाह मिलत लखि ब्रह्म सम ॥

॥ चौपाई ॥

मन ज्ञान ध्यान बिधि ठानी । ता से अपनी आदि न जानी ॥
ातगुरु से कछु बूझ न पाई । बिष रस राह फिरै भौ माईँ ॥
ान थिर होइ सुरति घर पावै । तन बिच गगन गैलचढ़ि आवै ॥
ुन गफलत को दूर बहावै । आँख खोल अपना घर पावै ॥
ाब मेँ ब्यापक ब्रह्म समाना । दरसै गगन फोड़ि असमाना ॥
ांत कृपा सुत सैल लखावै । मन चढ़ि गगन ब्रह्म को पावै ॥
ुन्न सहर बिच ब्रह्म समाना । चढ़ि चढ़ि देखैँ संत सुजाना ॥
ज्ञानी ब्रह्म ज्ञान से भाखै । ये सब झूठे ब्राह्मन ताकै ॥
ब्रह्म ज्ञान मन देखि न पावै । मनसँग गुन गिरि गाँठि बँधावै ॥
सतसँग करै ब्रह्म जब जानै । बिन सतगुरु सुति नहिँ पहिचानै ॥
हिये द्दग दरपन को नित माँजे । सुरमा सुरति नैन प्रति आँजे ॥
निरख परै दरसन की रेखा । नित निज नैन ब्रह्म को देखा ॥
गुन गफलत निज दूर निकारा । आँख खोल कर ब्रह्म निहारा ॥
विधि बसंत बिच गाइ सुनाऊँ । प्रियेलाल लख लखन लखाऊँ ॥

॥ बसंत ॥

मत भरमैरे घर में दीदार । टुक आँख खोल गफलत बिसार ।टेव
व्यापक सब में अखंड ब्रह्म । छाँड़ भटक दुनिया के भर्म ।
जुग जुग भरमत करि बिचार । सुरति नैन नित सत सुधार ॥१॥
बन भुलान घर बिसरी बाट । ठग सँग कीन्हौ घर न घाट ।
दिना चारि तन की चिन्हार । छूटत तन भुगतत होनहार ॥२।
बूझ समझ घर खोज रोज । अंदर में मन मार मौज ।
सँग सतगुरु करि ले निरधार । भटक भूल सब दे निकार ॥३॥
जिन जिन सरन सतगुरु लीन्ह । तिन तिन पायो अगम चीन्ह ।
अगम गली इक बिधि बिचार । तुहि तुहि तुलसी वार पार ॥४।

॥ दोहा ॥

वार पार तुलसी लखौ, पकौ चरन के ठाहिँ ।
चखौ अगम रस ब्रह्म को, थकौ थीर मन माहिँ ॥

॥ चौपाई ॥

ये तन पाइ बीत नहिँ चीन्हा । कल्प कल्प रहे काल अधीना ॥
जब से सुरति आइ जग माईँ । बन्धन काल भई भौ आइ ॥
आई सुलझ लेन अस जानी । लाभ न भयो बिच बिषम बिकानी
इंद्री बस गुन गैरत माईँ । फँसी फाँस कछु कही न जाई ॥
सब मिलि घेर घार बस कीन्हा । घर चीन्हे बिन भई अधीना ॥
अब सुनु गाइ बसंत सुनाऊँ । ता में सुत साखी समझाऊँ ॥

॥ बसंत॥

आई आई सखी सुति सुलझ लेन । भौ सागर भई अति बेचैन ॥टेक॥
पाँच पचीस मिलि ठाटो है ठाट । रोक रही सब घाट घाट ॥
पाँच तत्त गुन तीन सैन । तन भीतर रहे दिवस रैन ॥१॥
आदि अंत गइ बिसरि बाद । सतसंग बिसरी संत साध ॥
ज्ञान गली बिधि भूली बैन । दुख सुख लागे करम देन ॥२॥
है कोई सतगुरु बूझै सार । भौ सागर कोइ करत पार ॥
पिय की पीर तन तलफै नैन । लखि पाऊँ पद सुख से चैन ॥३॥

आये बहुत भये दिवस काल। फँसि गइ रही माया मोह जाल ॥
रबि दुख पावत परत गहन। तुलसी रहनि बिन झूठी कहनि॥४॥

॥ दोहा ॥

बहुत काल भये पिउ तजे, माया मोह भूलान।
नर तन पाइ न पिउ लखा, कस घर परै पिछान॥

॥ चौपाई ॥

ता से अब ये नर तन पाइ। अब तुम समझि चलौ घर माईं ॥
काया बन ब्रह्मंड समाना। बन बन फूल भास उरझाना ॥
ये औसर सूरति समझावा। मन मलीन तजि सुरति समावा ॥
ये दुरलभ तन देइ पुकारा। सो तन पाइ करौ निरबारा ॥

॥ दोहा ॥

ये दुरलभ तन पाइ कै, किया न पिउ परसंग।
मगन मिलन मन भीख भौ, ज्यों मुठि मरकट रंग॥

॥ सोरठा ॥

सुनि बसंत में सीख, सब सब संतन भाखिया।
लखौ आदि बिख्यात, मन सूरति सम थिर करौ॥

॥ बसंत ॥

आई आई कंथ बसंत लाग। काया बन फूले भँवर बाग॥टेक॥
तन भीतर नैना निहार। सुरति निरति ले कर गुंजार।
नौ पल्लव बेली भँवर जाग। ले सुगंध तन बिषय त्याग ॥१॥
अमर लोग इक अजर दूब। हद अनहद के पार खूब।
चढ़ि कर देखौ सुरति साग। जो कोइ निरखै बड़े भाग ॥२॥
कोइ खेलै संत बसंत बूझ। जिन आदि अंत की राह सूझ ॥
ये अदेख अंदर में फाग। जहँ बिबिधि तरंग रँग उठत राग ३
सत्त पुरुष पद पुहुप पास। जहँ भूमि भँवर मन कर निवास ॥
तुलसीदास भौ भरम आग। कोइ जरत न जागै बड़ अभाग[1]॥४

॥ चौपाई ॥

सत्त पुरुस पद पार सुनाऊँ। पदम पार वर आदि लखाऊँ ॥
मन जेहि बूझ समझ सुत संगा। ये तन बिनस जात छिन भंगा ॥

---

(१) मु० १८ प्र० के पाठ में "कोइ नर तन जोग बड़े भाग" है जो ठीक नहीं मालूम होता।

निरति सुरति सँग कहत बुझाई । भौ सागर बिच रही फँसाई ॥
मनमत मोट खोट सँग लागी । बन रस फूल भयौ अनुरागी ॥
देखि देखि तन अजर तमासा । सूरति मन मिल करै बिलासा ॥
आदि अंत घर सुरति बिसारी । मन सँग फिर फिर फहम बिचारी ॥

॥ दोहा ॥

सुरति आदि घर छाँड़ि कै । फिरै मन गुन की लार ।
जगत जाल बिच फँसि रही । क्यौं कर उतरै पार ॥

॥ बसत ॥

देखौ देखौ सखी इक अजर खेल । चहुँदिस फूली अमर बेल॥टेक॥
बन बन फूले बिबिधि भाँति । कहँ लग बरनौं पुहुप जाति ।
भिनि भिनि भौंरा करत केल । बिधि अपने घर छाँड़ि मेल ॥१॥
आदि अंत सूरति बिसार । चार लाख चौरासी धार ।
कहँ लगि बरनौं ब्रह्मंड सैल । पिंड ब्रह्मंड रच्यौ भूमि भेल ॥२॥
वेद पुकारत नेति नेति । बेदांत बरनि ताहि ब्रह्म कहेत ।
संत ताहि कहै काल गैल । वे दयाल गति भिनि अपेल ॥३॥
पिंड ब्रह्मंड रचना के पार । वे साहिब दोऊ से न्यार ।
रुम रुम ब्रह्मंड खेल । इन सब से वे भिनि अकेल ॥४॥
संत सदा वहँ आवैं जाइँ । वै जानैं सब भेद पाइ ।
तन तिल्ली तुलसी जो तेल । मथि काढ़े तब भया फुलेल ॥५॥

॥ सोरठा ॥

जस तिल्ली तन तेल, भा फुलेल फूलै मिलै ।
तन भीतर अस खेल, खिलै कँवल मिलि पुरुष में ॥

ज्यौं तिल्ली बिच तेल निकारा । मिलि गया फूल फुलेल पुकारा ॥
ऐसे संग पुरुस तन माईं । सतगुरु जानि भेद बतलाई ॥
प्रियेलाल अस बूझ विचारा । संग्रह त्यागन झूठ पसारा ॥
सतगुरु सूरति संध लखावे । तजि सब बंध जीव घर आवै ॥
अस सुनि ज्ञान समझ बिच बैठा । दिल बिच प्रियेलाल के पैठा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहैं बुझाइ, प्रियेलाल लखि बूझि बिधि ।
सूरति सिंध समाइ, जब लखि पावै भेद यह ।

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल यह बूझ बिचारी । राति रहे तुलसी के लारी ॥
प्रात होत अस्थानै जाऊँ । अब तौ तुलसी सरन समाऊँ ॥
रहे राति पुनि सतसंग कीन्हा । भाव भेद ता को हम दीन्हा ॥
कालिंद्री मग सुरति लखाई । जमुना धार को धमक चढ़ाई ॥
नौलख कँवल द्वार में लाई । गोकुल फाड़ि गगन को जाई ॥
स्याम सेत खिरकी बतलाई । छिन छिन सूरति सिखर लगाई ॥
तिल के आगे पहाड़ छिपाना । मुकर बीच खिरकी में जाना ॥
भोरै होत डंडवत कीन्हा । चरनन सीस प्रीति से दीन्हा ॥
पुनि अस्थान जान हम कहिया । सीस टेकि मारग को गहिया ॥
पहुँचे कासी नगर मंझारा । सुरत गुपाल चले तेहि द्वारा ॥

बरनन अभ्यास फूलदास रेवतीदास और गुनुवाँ

॥ चौपाई ॥

फूलदास रेवती पुनि आये । अरज भाव बिनती सोइ लाये ॥
हिरदे गुनुवाँ चरन को लीन्हा । दास भाव बिनती जो कीन्हा ॥

॥ फूलदास चौपाई ॥

फूलदास अस अरज बिचारी । स्वामी द्रष्टि दास पर डारी ॥
दयासिंध इक अरज बखाना । सो साहिब सुनियौ दै काना ॥
सूरति से नरियर को मोड़ा । कदली पत्र भाव लख फोड़ा ॥
चौका पार चँदरवा ताना । सूरति से फोड़ा असमाना ॥
अष्ट कँवल बिच पवन सुपारी । पहुँचे जाइ सुरति की लारी ॥
उदित मुदित दोउ दीप मँझारा । चिढ़े जाइ खिरकी के पारा ॥
चौथा हाथ पान पर जाई । पान परवाना अगम चढ़ाई ॥
अठमेवा पूरुष को देखा । भाखौं कस कस अगम अलेखा ॥
ता के रुप रेख नहिं काया । अगम अगाध अनाम अमाया ॥
देखा कँवल नैन नभ न्यारा । धरती गगन और सकल पसारा ॥
चर और अचर दीप नौखंडा । बिधि बिधि से देखा ब्रह्मंडा ॥
सुरति सैल नित करै अकासा । फूलदास बिधि अगम तमासा ॥

फूलदास पार को जाई। पुरुष सुरति से भेंटि समाई॥
फूलदास गति सब बिधि गाई। सो तुलसी को आनि सुनाई॥
तुलसी ग्रंथ बिधि सकल बखाना। संत सुजन जन सुनिहैं काना॥

॥ रेवतीदास। चौपाई॥

पुनि रेवतीदास चलि आये। सीस टेक चरनन पर धाये॥
तिन पुनि भेद सकल दरसावा। बिधि बिधि भाखा दरस प्रभावा॥
स्वामी तुलसी अरज हमारी। कहूँ बिधी चित दीजे सारी॥
स्वामी चौका दीन्ह बताई। सो बिधि चौका कीन्ह बनाई॥
पुरइनि पात नभ समुँदर माईं। सुरति सैल ठहरी तेहि ठाईं॥
बैठी जाइ कँवल के माईं। ज्यों दुरबीन मुकर नभ राही॥
कदली पत्र फोड़ि चलि आई। सेत चँदरवा फोड़ेउ जाई॥
नरियर तोड़ चली असमाना। सेत दीप पुरइनि नियराना॥
पँखड़ी अष्ट कँवल के माईं। चार कँवल अंदर दरसाई॥
ता में देखा सकल पसारा। बिधि ब्रह्मंड जो जगत सँवारा॥
ता से परे सुरति भइ न्यारी। द्वै दल कँवल पैठि भई रीस
जहँवाँ पुरुप रहै इक न्यारा। तहँवाँ सूरति सजी अपारा॥
सुरति निरति निस दिन वहँ खेला। नित नित करै अगम की सैला॥
मन और सुरति निरति नित धावै। मन थिर होइ सुरति पर आवै॥
येहि बिधि देखा सकल पसारा। स्वामी सो बिधि आन सँवारा॥
फूलदास और रेवती दासा। भाखा दोउ मिलि अगम तमासा॥
निर निरख दोउ लख लख जोई। तुलसी जस जस रस तस होई॥
येहि विधि दोऊ करै बिलासा। और सकल छूटी जग आसा॥
चेला गुरु जगत बिधि नाता। छूटा विधि रस एकै साथा॥
चेला गुरू बिधी नहिं मानै। दोनों मिलि रस एकै जानै॥
छूटा पान सुपारी चौका। छूटा गगन सुन्न भया सूखा॥
छूटा पिंड छूट ब्रह्मंडा। तीनि लोक छूटा सब अंडा॥
सात दीप पृथ्वी नौखंडा। चौथा पद जहँ पुरुप अखंडा॥

ता के परे सैल हम कीन्हा । ता को जानै संत यकीना ॥
यह चौका बिधि संतन केरी । तुलसी द्रष्टि सुरति से फेरी ॥
और चौका सब झूठ पसारा । तुलसी चौका सत्त सँवारा ॥
नित तुलसी तुलसी गोहरावा । दीनबिधी बिधिसुरति लगावा ॥
फूलदास रेवती रत दासा । बस्तु पाइ नित अगम निवासा ॥

॥ गुनुवाँ चौपाई ॥

गुनुवाँ सुत हिरदे का आवा । सीस टेक चरनन लौ लावा ॥
अंतर भाव अरु चाव बखानी । सब बिधि अपनी कही कहानी ॥
जस जस स्वामी बिधी बताई । तस तस सूरति गगन लगाई ॥
चक्र फोड़ि सूरति भई पारा । चाँद सुरज तजि गई अगारा ॥
सुखमनि छेकी सरवर आई । मान सरोवर पैठि अन्हाई ॥
अगमद्धार खिरकी पहिचानी । गंगा जमुना सरसुती जानी ॥
सूरति चली अगम रस माती । जहाँ प्रयाग कंज रस राती ॥
जहँ सतगुरु बैठे सत बासा । अगम पुरुष घर कीन्ह निवासा ॥
सूरति ठहरि द्वार के माईं । रस रस धीर धीर चढ़ि जाई ॥
चढ़ै उतरै पुनि पुनि चढ़ि जावै । मकरी धागा तार लगावै ॥
येहि विधि रहै दिवस और राती । सूरति लगन और नहिं भाती ॥
येहि विधि लोक नाम किया बासा । चौथा पद सतनाम निवासा ॥
जहँ से आई तहाँ समानी । यहि बिधि आदि अंत हम जानी ॥
जनम मरन दुख सुख सब छूटा । कर्म बँध बिधि सगरी टूटा ॥
स्वामी तुम चरनन बलिहारी । अगम बस्तु तुम दया बिचारी ॥
हिरदे प्रीति द्रष्टि दरसाई । नैन चरन बिधि भाव बताई ॥
मैं कहा जानूँ जीव अबूझा । हिरदे तत मत से सब सूझा ॥
लखनऊ मन अब नेक न भावै । अब तो तुलसी तुलसी चावै ॥
हिरदे की जाऊँ बलिहारी । इन बिधि सगरी मोर सँवारी ॥
पिना दरस बिधि ऐसी कहिया । चरनलाइ बिधि अगम लखइया ॥
हिरदे प्रीति हम तुमको पावा । हिरदे रीति अगम दरसावा ॥
तब स्वामी के चरन सँवारे । स्वामी कृपा से उतरे पारे ॥

सीस टेकि पुनि अज्ञा लीन्हा । सीस डारि चरनन पर दीन्हा ॥
स्वामी मो को अज्ञा दीजै । अस कहि नीर नैन से छीजै ॥
अज्ञा स्वामी दीन्ह बनाई । तब गुनुवाँ मारग को जाई ॥
हिरदे हरष हिये में लावा । गुनुवाँ काज भयौ बिधि भावा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

(वैरागी)

तुलसी हिरदे कहै बखानी । ये सत रीति संत कोउ जानी ॥
भेस भेस बिधि देखि निहारी । येगतिमति बिधिसब से न्यारी ॥
वैरागी विधि इष्ट भुलाने । काल जाल में जाइ समाने ॥

(जोगी)

जोगी जोग ध्यान रस भूला । स्वाँसा संध कीन्ह अनुकूला ॥
मुद्रा पाँच तुरी मत भूला । ये पुनि ज्ञान जोग मत फूला ॥
इद्री बस रस कीन्हो घूला । वोऊ न पायौ सार रस मूला ॥

(परमहंस)

परमहंस पुनि ब्रह्म बखानै । ब्रह्म विधी बिधि वोहू जानै ॥
जड़ तन मन में गाँठ बंधाना । ता को ब्रह्म कहै हैवाना ॥
कहै सब में सब हमीं समाना । आदि अंत नहिं चीन्ह ठिकाना ॥
वेद विधी वेदांत बतावै । वा के आगे भेद न पावै ॥
मुख से कहै नाद को गावै । भूला बेद ताहि ठहरावै ॥
वेदउ नेत नेत कर गावै । पुनि ता की वह साखि बतावै ॥
संत मता उनहूँ नहिं पाया । ब्रह्म ब्रह्म बन जनम नसाया ॥

(सन्यासी)

सन्यासी कहै हम भगवाना । आदि अंत उनहूँ नहिं जाना ॥
कहै भगवान आप को जानै । आतम कहि कहि सुद्ध बखानै ॥
चेतन जड़ सँग गाँठि न जानी । सास्तर राह विधी रस ठानी ॥
वेदउ सास्तर नेत पुकारा । इतनी बूझ न पाय गँवारा ॥
सास्तर वेद नाद से भइया । नाद अगम घर कहँ से अइया ॥
नाद की आदि सुन्न से न्यारी । सुन्नी सुन्न सुन्न के पारी ॥
वोही घर से नाद पुनि आया । ता पीछे ब्रह्मंड बनाया ॥

पाँच तत्त मन माया भाई । ता से रचि बैराट बनाई ॥
जड़ चेतन की गाँठि बँधानो । ता को नाम आतमा जानी ॥
गाँठि बँधे पर भूल समानी । आतम बुध मन बेद बखानी ॥
आतम बँधा गाँठि के माईं । पुनि ता ने यह बेद बनाई ॥
सोई बेद आतम बिधि गाई । बेद की आदि सुनौ तुम भाई ॥
आतम कर्म भाव गठियाना । बंधन आतम बेद बखाना ॥
ता की साखि बतावौ भाई । बेदउ नेति नेति करि गाई ॥
जब नहिँ बेद बेद का करता । जब नहिँ रूप रेख कछु धरता ॥
तत्त पाँच नहिँ थे बैराटा । नहिँ जो जब ब्रह्मंड न ठाटा ॥
निरंकार जोती नहिँ भाई । परमातम आतम जब नाहीँ ॥
सोहँग नहिँ जब ओअंकारा । तबकी कहूँ बिधी बिधि सारा ॥
नहिँ काया नहिँ बोलनहारा । तबकी कहूँ बिधि भाखि सँवारा ॥
बेद नाद दोउ पीछे भइया । को पहिले जो बरनि सुनइया ॥
पहिले नाद कहाँ से आया । सुन्न न गगन हती नहिँ माया ॥
वा घर की कोउ आदि बतावै । जब जोइ संत मते को पावै ॥
हिरदे की बिधि कोइ नहिँ जाना । संत मिलैँ तौ करैँ बखाना ॥
सन्यासी भूले अस भाई । पंडित बाम्हन कहा बताई ॥

(पंडित)

पंडित कहै हमीँ पुनि स्याना । सास्तर पढ़ि पढ़ि बेद पुराना ॥
पढ़ि पढ़ि पढ़ने माहिँ भुलाने । जा को पढ़े सोई नहिँ जाने ॥
जा की ये सब साखि बतावै । वोऊ नेत नेत गोहरावै ॥
निरंकार को नेत बखाना । निरंकार के परे न जाना ॥
तीरथ बरत नेम के माईँ । करम धरम पुनि जज्ञ बताई ॥
धरि धरि देहीँ भोग करावा । भूले आप अरु जगहि भुलावा ॥
बाम्हन को बिद्या मन माना । ऐसे संत मता नहिँ जाना ॥

(ब्रह्मचारी)

ब्रम्हचारी ब्रम्हचार बखाने । ब्रह्म पार का भेद न जाने ॥
वार पार का भेद बिधाना । यह बिधि वोहू राह भुलाना ॥

(डंडी)

डंडी डंड कमंडल लीन्हा। लकरी बाँधि जनेऊ कीन्हा॥
बाम्हन हाथ प्रसादी पावै। और जाति का छुवा न खावै॥
द्वैत बुद्धि बसी हिये माहीँ। मुख से आतम एक बताई॥
ऐसी बुद्धि द्वैत मन राती। पूजैं बाम्हन की पुनि जाती॥
अंध अंध दोउ संग मिलाना। संत मते की राह न जाना॥

(वैष्नव)

वैष्नव बिस्नु धर्म को पालै। पूजा इष्ट भाव बिधि चालै॥
विष्नू तीन गुनन के माईँ। रजगुन तमगुन सतगुन भाई॥
रज ब्रम्हा तम संकर भाई। सतगुन बिष्नू तिन के माईँ॥
तन वैराट से उपजे भाई। सो पुनि ब्रम्हा बिष्नु कहाई॥
सतोगुन विष्नू तिन के माईँ। तेहि को छाँड़ि पाहन मन लाई॥
चार धाम तीरथ को धावै। बिष्नू पास खोज नहिँ पावै॥
पूजै जग खैराती खावै। करम भोगि फिर भव में आवै
संत मते की राह न जानै। बिष्नू पूजि जगत सब मानै

(मुसलमान)

मुसलमान खुद खुदा बतावै। सब में खुदा खुदा करि गावै
खुदा एक कहै सब में भाई। बकरी मुरगी मारै खाई
येहि विधि भूत है उनके माईँ। खुद खुदाइ की राह न पाई
मुसलमान है हक्क इमाना। जिन कोइ भिस्त राह पहिचाना

(स्रावग)

स्रावग आदि धर्म बतलावा। आदि राह का मरम न पावा
ऋषभ देव चौबीसौ भइया। ता को कहै मुक्ति को गइया
मुक्ति मुक्ति सब भाखि सुनावे। वोहू मुए मुक्ति गोहरावै।
जीवत देखी कहैं न बाता। चौथा काल कहै बिख्याता।

(कबीर पथी)

पंथ कबीर का भाखि सुनाइ। पंथ राह उनहूँ नहिँ पाई।
सत कबीर मुख भाखेउ बैना। उन सब कही अगम की सैना।
पंथी सैन लखी नहिँ भाई। पंथ राह की जाति चलाई।

(नानक पंथी)

नानक संत जो भये अगाधू । चौथा पद पाये उन आदू ॥
उन भाखा कढ़िया परसादी । इन कढ़ाव हलुवे की बाँधी ॥
पंथ कहा सो मरम न जाना । पंथ राह उन अगम बखाना ॥
ता की बूझ समझ नहिँ आई । पंथी जाति जाति भइ भाई ॥

(दादू पंथी)

दादू संत जो भये अनामी । वे कहि गये अगम की बानी ॥
उन भाखा कोइ पंथ नियारा । अगम निगम का कुंजी तारा ॥
ऐसे संत जो भये अनामी । उनकी बिधि पंथी नहिँ जानी ॥
पंथ चलाइ बढ़ाई साखा । सास्तर बेद मते में राखा ॥
पंथी मत उनका नहिँ जानी । राम रमा सब कहत बखानी ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की कहिया । सब बिधि पंथ धरम में रहिया ॥
कोइ पंथी कोइ धर्म चलावा । संत मते को कोइ नहिँ पावा ॥
सुन हिरदे यह ऐसी रीती । धर्म पंथ ने करी अनीती ॥
संतन पंथ सुरति का गाया । पंथ सुरति की राह बताया ॥
सूरति मिलै सब्द में जाई । ये सब संतन पंथ बताई ॥
सुरति पंथ नहिँ खोजा भाई । जाति पंथ का बोझ उठाइ ॥
जो कोइ सुरति पंथ बतलावै । उन के मन में एक न आवै ॥
जो कोइ कहै सत्त की बाता । ता से करैं बहुत उतपाता ॥
निंदक ता को करि ठहरावैं । नास्तिक मता ताहि बतलावैं ॥
संत मते की रीति न जानैं । कहै जा की पुनि एक न मानैं ॥
कैसे होय जीव निरवारा । या में बढ़ि गया जाल पसारा ॥
पंथा पंथी टेक बँधानी । अपने अपने मति की ठानी ॥
संत पंथ जो राह बखानी । सो पंथी कोइ खबर न जानी ॥
सुन हिरदे यह ऐसी रीती । सत भाखै तेहि कहैं अनीती ॥
तब संतन ने बस्तु छिपाई । कहो जिव राह कहाँ से पाई ॥
साखी सब्दी ग्रंथ बनाई । गुप्त बस्तु नकल में गाई ॥
नकल बस्तु ग्रंथन में जानो । साखी सब्द नकल करि मानो ॥
या में खोजि खोज नहिँ पावै । सतगुरु मिलै तो भेद बतावै ॥

नकल माहिँ से असल दिखावै । सो चेला सतगुरु से पावै ॥
जाकी खुली अगम की आँखी । साँचे सतगुरु ता को भाखी ॥
सुन हिरदे सतगुरु सहदानी । सतगुरु सत्त पुरुष को जानी ॥
चौथे पद में करैं निवासा । मिलै जाइ सतगुरु का दासा ॥
सतगुरु भेदे अगम दरसावैं । तब चढ़ि जाइ अगमपुर पावैं ॥
हिरदे या को कोइ न जानै । जा से कहूँ सोई नहिँ मानै ॥

॥ हाल प्रियेलाल के अभ्यास का । चौपाई ॥

इतने में प्रियेलाल जो आये । करि परनाम छुए तिन पाँये ॥
प्रियेलाल अस वचन उचारा । स्वामी से कहिहौँ कछु सारा ॥
जो कछु कृपा सिंध अनुकूला । सो बिधि निरखि बताऊँ मूला ॥
प्रियेलाल भाखे रस माते । कालिंद्री नित सुरति समाते ॥
कालिंद्री पर नित नित जाई । पुनि तेहि पार पार होइ राही ॥
नौलख कँवल निरखि पुनि भागे । सहस कँवल के चलि गये आगे ॥
सागर खिरकी समुँदर माईं । द्वार पैठि के सुरति चलाई ॥
देखा जाइ वहँ अजब तमासा । सुरति लीन कोइ पहुँचै दासा ॥
अरध उरध मध माहीँ बाटा । अंड फोड़ तहँ चढ़ि गये घाटा ॥
सूरति नित नित बढ़ै बढ़ाई । ठहरै नहीं बहुत ठहराई ॥
छिन छिन पदमें पदम निहारी । कंज बास छूटै नहिँ तारी ॥
येहि विधि दिवस रात लौ लागा । निरखा सुरति उठै अनुरागा ॥
स्याम सेत भिनि न्यारी सैला । निकसा दूर अजर अस खेला ॥
हमको स्वामी कीन्ह सनाथा । काल जाल से छूटेउ हाथा ॥
मुखसे कस कस वरनि सुनावा । तुम्हरी कृपा अगम दरसावा ॥
मै मतिमंद वस्तु कहँ पाऊँ । मन मोटा जग गुरू कहाऊँ ॥
मान मई वाम्हन भी जाती । ऊँचा चारि वरन मैं पाँती ॥
अंध घोर जग का जंजाला । नित नित मीच करै जमी काला ॥
तुम दयाल विधि ऐसी कीन्हा । काल जाल तजि सारहिँ लीन्हा ॥
तम नहिँ कृपा करत येहि भाँता । तो करमन भौ माहिँ समाता ॥
पद वंधन विधि भाव छुटावा । जहँ का जीव तहाँ पहुँचावा ॥

जग भूल अंध जिव खाना । मन अपने का ज्ञान बखाना ॥
। होइ संतन की लारा । तब पावै सत मत का द्वारा ॥
वेद में नाहीं स्वामी । समझि परी यह अकथ कहानी ॥
ाहिं बूझ द्रष्टि में आवै । पूरा सतगुरु मिलै लखावै ॥
। सतगुरु जिव भरमै खाना । मूए पढ़ि पढ़ि ग्रंथ पुराना ॥
सुने कोइ भेद न पावै । सतगुरु मिलै तो भेद बतावै ॥
पुरान की झूठी राही । या में जीव काल उरझाही ॥
ाल हाथ दै मारा । झूठी बिधी अचार बिचारा ॥
मी समझ माहिँ अब आई । नित नित घोर कँवल के माईं ॥
। तब मोर मन पतियाई । बिन देखे परतीत न लाई ॥
। पूर मन साँची भाई । सुन्नी सुरति माहिँ रहि छाई ॥
ुली कड़क कड़क उँजियारा । बरसै पानी नैन निहारा ॥
ति निरति के मंझ मँझारा । धसि भीतर लखि अगम पसारा ॥
ी गगन चंद और सूरा । देखा सब में सब बसि पूरा ॥
ति रहै अगम रस पागी । नित नित रहै रंग अनुरागी ॥
। स्वामी कोइ दृष्टि न आवै । अब कछु और और बिधि भावै ॥
। पुरान बंधन के माहीं । सास्तर जाल काल सब राही ॥
राह कोइ चीन्हि न पावै । भरमै भर्म जीव भरमावै ॥
। स्वामी ये कहूँ बिचारा । देखि न परै जीव निरवारा ॥
चरनन बिन कछू न कोई । तुम्हरी कृपा होइ सो होई ॥
ने प्रभू दया अस कीन्हा । औघट बहे घाट लखि दीन्हा ॥
। स्वामी किरपा अस कीजे । अज्ञा भाव दरस मोहि दीजे ॥
न हुए पुनि अरज बिचारी । अब चलने की विधी निहारी ॥
चरन गहि अज्ञा लीन्हा । कासी राह गवन तब कीन्हा ॥
त गुपाल द्वार तब आये । भीतर आसन बैठे पाये ॥

॥ सोरठा ॥

कहैं तुलसी सुन बाता, हिदे हरष सत मत कहूँ ।
प्रियेलाल मुसक्यात, राह अगम गति पाई कै ॥

॥ बचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

कासी नगर भरा सब झारी । तेरह उतरे भौजल पारी ॥
तेरह गये अगमपुर धामा । तिन की काल न करिहै हाना ॥
काल जाल जम पास न आवै । जनम मरन बिधि एक न पावै ॥
अमर अजर घर जाइ समाना । जहाँ रहै सतनाम अनामा ॥
ये तेरह पर काल न आई । नित नित रहैं अजर घर छाई ॥
तेरह नाम बिधी बतलाऊँ । भाखि बिधी भिनि भिनि दरसाऊँ ॥
करिया नाम रहै इक नारी । सैनी दूजी नाम बिचारी ॥
कर्मा धर्मा स्रावग जैनी । ये उतरे भौजल की सैनी ॥
अगम द्वार चलि गये अगाधा । सूरति गई अगमपुर साधा ॥
सेख तकी तकि भये नियारे । खुद खुदाइ रब लाह के द्वारे ॥
चूँ वेचूँ बेज्वाबी साईं । ता घर रूह राह तिन पाई ॥
पंडित तीनों नाम बखानौं । दो तौ नैनू स्यामा जानौं ॥
तीजा माना पंडित होई । अगम राह घर पावै सोई ॥
गुनुवाँ हिरदे दोउ निज जाना । ये तौ गये अगमपुर धामा ॥
फूलदास और रेवतीदासा । इनका भया अगमपुर बासा ॥
प्रियेलाल इक जाति गुसाईं । सूरति सैल अगम घर जाई ॥
ये तेरह उतरे भौ पारा । काल जाल से होइ नियारा ॥
काल रहै उन से सिर नाई । मिलि गई सुरति अगमपुर धाई ॥

॥ सोरठा ॥

तेरह तोल अपार, लखा सार सतगुरु मिले ।
तुलसी कहै निहार, उतरि पार पद को मिले ॥

॥ छंद ॥

तेरह भये पारा अगम निहारा । सत मत सारा लार लये ॥१॥
पहुँचे वोहि धामा अगम अनामा । पार सार रस जाइ पिये ॥२॥
सतगुरु मत भावा अगम लखावा । पावा पदम निवास किये ॥३॥
चौथे पद माईं सतगुरु पाई । कंज माहिँ रत भास भये ॥४॥
चैनी परियागा घट अनुरागा । पाइ न्हाइ अज अमर भये ॥५॥
सूरति सत सानी अगम समानी । जाइ निरानी राह लये ॥६॥

लूटा जंजाला जम और काला । साला हाला दूर बहे ॥७॥
अपना घर पाई सत्त सामई । सत्त लोक गई सब्द मई ॥८॥
नहिं आना जाना कर्म नसाना । तुलसी सतगुरु राह दई ॥९॥
यह बिधि अस पाई सो सब गाई । अगम सुनाई गाइ कही ॥१०॥
सतगुरु रस माते नित नित जाते । सो वे सतगरु सुरति लई ॥११॥
सत सत मत भाखी देखा आँखी । राखन भाखी सत्त गही ॥१२॥
तुलसी तस गाई जस जस पाई । सुरति समाई राह लई ॥१३॥

॥ राग बिलावल ॥

तुलसी अंदर अलेख, देख लेख जाई ॥टेक॥
तुलसी सतसंग जाइ, कासी प्रति होइ हाइ ।
बासी रस वार पाइ, बूझै सत साइँ ॥
पारी पद अगम बास, हिरदे हित चरन खास ।
निरखा सगरा अकास, चेता तन माईं ॥
फूलदास आस पास, देखा हित लाई ॥१॥
पंडित बाम्हन तरन्न, नैनू स्यामा अमन्न ।
कीन्हा सतसंग आनि, दीन्हा ब्रत वाही ॥
कर्मा और धर्मा आइ, सैनी और करिया जाइ ।
पाया रस अगम खाइ, हरख हिये माहीँ ॥
देखा रस अगम पाइ, दीदा रस राही ॥२॥
गुनवाँ और रेवतीदास, सतगुरु रस पूर प्यास ।
सूरति अगमन निवास, फोड़ पार जाई ॥
मियाँ एक तकी सेख, मन का बड़ पोढ़ देख ।
सूरति सत सूर लेख, पेखा अपनाई ॥
पाया पद मूर सार, खुदा की खुदाइ ॥३॥
आया इक प्रियेलाल, देखा मत बर्त चाल ।
कीन्हा सतसंग हाल, जाति के गुसाईं ॥
देखा सब वेद असार, संतन मत बूझ सार ।
सूझा मन हिये हार, तरके तक चाही ॥

विपति कहुँ क्या सुनौ उसकी । भये दुख रोग और खुसकी ।
निकरि कहुँ गैल ना पावै । कहौ घर कौन बिधि जावै ॥१०॥
बिसरि घर आदि और अंता । खबर कहै को बिना संता ।
कमर बस राह रस खाना । बिना सतसंग भरमाना ॥११॥
मिलै सतसंग मन टूटै । अरी तब बंद से छूटै ।
अली भौ भील ने पकरा । जबर जंजीर में जकरा ॥१२॥
अली बिधि बेद से बाँधा । करम की साधना साधा ।
तिरथ और बर्त आचारा । करत नित नेम बिधि सारा ॥१३॥
लिये फल भोग करमन के । फिरे भौ भाव भरमन के ।
भया भौ काल का चारा । निकर नहिँ होत निरवारा ॥१४॥
याद गइ भूलि सब घर की । मिली नर देह सुन अबकी ।
करो मन दीनता लावो । संत से राह तब पावो ॥१५॥
मिटै कर्म काल चौरासी । होइ तब लोक का बासी ।
अली यहि बात से आवै । और बिधि राह नहिँ पावै ॥१६॥
तुलसी जब बूझ में आवै । अधर घर आदि अपनावै ।
फटै जब करम कागद के । लखै दुरबीन मन मँज के ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

सुनौ सेठ संबाद, साध समझ कोइ बूझि है ।
सूझै समझ बिचार, ये अपार मन अगम है ॥

॥ चौपाई ॥

मन की अगम चौज गति गाऊँ । गुन गोविन्द बरनि येहि नाऊँ ॥
बिन सतगुरु येहि धीर न आवै । बिना संत को पीर बुझावै ॥
गुन की गैल गवन नित भागै । सोवत नित सतगुरू सँग जागै ॥
सतगुरू पदम पार बलिहारी । सुरति लखाइ दीन दिल न्यारी ॥
नित नित सैल सुरति चढ़ि चीन्हा । तब मन सूरति भया यकीना ॥
लख लख परा पदम पद न्यारा । तब भाखी भिनि सूरति पारा ॥
जग बैराट बना बिधि सारा । अंध सिंध से आनि सँवारा ॥
उठे बैराट बैराट बिधाना । मन तन साथ बँधा सोइ जाना ॥

सुर नर मुनि गंधर्व अरु देवा, ब्रह्मा बिष्नु करत मन सेवा ॥
बिन, घट भेद न जानै भेवा, नारद व्यास न पावै छेवा ॥
बेद पुकारत नेतो रे ॥२॥
ये तन तोर तलैया सूखै, काँच महल कूकर कृत भूसै ॥
आसा आस पास पद चूकै, बार बार बिष घर घर ढूकै ॥
भटक भटक भ्रम लेखो रे ॥३॥
तुलसी मगर मीन मुख माईं, चर और अचर चराचर खाई ॥
साईं सब्द सुरति के माईं, ये बिधि लार लार लौ लाई ॥
मन ब्रत तत सत सेतो रे ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

अरीपियापरखौरीहियाहरखौरी, एरी आली आदि अटा ॥टेक॥
अलख अकेलीचली अलबेली, पेली परख निहारी ।
सेली सुरति निरखि नभ न्यारी, सोधन पिया को लागै प्यारी ॥
चलौ सखि पिया सँग घर को री ॥१॥
चतुर सहेली सुन पर खेली, मेली मूर बहाई ॥
धाइ धार पार भट भेली, घट चढ़ चटक चढ़ाई ॥
घुमरि घुमरि घन करकीरी ॥२॥
बदरी स्याम सुँदर सुत न्यारी, ये मत मूर न जानै अनारी ।
संत अधर रस अंत बिचारी, जगबिषरस भौ खानि भिखारी ॥
संध सुरति सत सरको री ॥३॥
ये लै लार पार पट माहीं, ताई तत्त नियारी ।
तुलसी मरम सरम सतगुरु को, पूर परम गुरु आई ॥
कोइ सतगुरु सिष तरको री ॥४॥

॥ दोहा ॥

जिन सतगुरु सरना तका, पका सुरति के माहिँ ।
जाइ पदमपुर कँवल में, हरख जो हिये समाइ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनिसखिप्यार पुरुषका गाऊँ । ता में आदि अंत दरसाऊँ ॥
जोजस भया भाव बिधि लेखा । तस तस भाखौं अगम अलेखा ॥

बहु बिधि भाव बिपति से पाये । दुख सुख बिरह भाव दरसाये ॥
खोजत खोजत खोज लगावा । गुरु ने समझ बूझ समझावा ॥
भेष पंथ सब झारि निहारी । कोई न भाखा भेद बिचारी ॥
ढूँढ़त ढूँढ़त भई बेहाला । सब जग जीव परे जम काला ॥
कोऊ न कहै बात तस केरी । सब जग पचे भेष पर हेरी ॥
ब्याकुल तन मन बिरह समानी । कोई न कहै पिया पद जानी ॥
रत मत पत की पीर समानी । बिक्र तबिरत चित कहा बखानी ॥
ये जग भीतर काल कराला । बाँधा सब जग जम बिच जाला ॥
तन हबूब बुल्ला जस फूटा । स्वाँस स्वाँस छिन छिन दम छूटा ॥
पवन भवन बिच स्वाँस समानी । जीव निकरि जस हवा उड़ानी ॥
ज्यों सुपना जग जग जस माना । सोवत जुग जुग पिया न जाना ॥
दुर्लभ देह दाव अब आया । धृग जीवन जिन पिया न पाया ॥
सुन या की बिधि सब्द लखाऊँ । बिधि बिहाग बिच बरन सुनाऊँ ॥

॥ बिहाग १ ॥

बिपति कासे गाऊँ री माई । जगत जाल दुखदाई ॥ टेक ॥
रात दिवस मोहि नींद न आवै । जम दारुन जग खाई ॥ १ ॥
पिय के ऐन बिन चैन न आवै । हर दम बिरह सताई ॥ २ ॥
जा दिन से पिय सुधि बिसराई । भटक भटक दुख पाई ॥ ३ ॥
तुलसीदास स्वाँस सुख नाहीं । पिय बिन पीर सताई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग २ ॥

आली री हिये हरष न आवै । कारे की लहर ज्यों सतावै ॥ टेक ॥
तन मन सुधि बुधि सब बिसराई । अन्न पानी नहिं भावै ॥ १ ॥
कहा करौं कित जावँ सखी री । पिय बिन नींद न आवै ॥ २ ॥
है कोइ सतगुरु पिय को लखावै । पत पिय पीर बुझावै ॥ ३ ॥
तुलसी तलफ तलफ तन सूखै । मन बिच थिर नहिं लावै ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ३ ॥

अरी कहँ खोजौं री माइ । गुरु बिन भेद न पाई ॥ टेक ॥
खोजत खोजत जनम सिराना । काहू न खोज लखाई ॥ १ ॥

भेष पंथ सब खोजि निहारी । जोग बैराग गुपाईं ॥ २ ॥
अब मन मोर गुहार पुकारा । त्राह त्राह तन माईं ॥ ३ ॥
तुलसी तलब सुलभ जब पाई । सतगुरु अलख लखाई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ४ ॥

आली री गुरु गैल लखाई । अलख पलक पर पाई ॥टेक॥
दृग दुरबीन चीन्ह जब पावा । हर दम सुरति लगाई ॥ १ ॥
लीला सिषर निकर नभ न्यारी । छिन छिन सुरति समाई ॥ २ ॥
पच्छिम द्वार पार पट खोले । अगम निगम गम पाई ॥ ३ ॥
तुलसी तत्त तरक तन माहीं । अस आतम दरसाई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ५ ॥

आली री आगे खोज लगाई । चढ़ि सुति गगन समाई ॥ टेक ॥
मकर तार मारग लखि पावा । ता बिच धधक चढ़ाई ॥ १ ॥
मान सरोवर निरखि निहारी । बेनी में पैठि अन्हाई ॥ २ ॥
भीतर भिन्न चिन्ह भइ न्यारी । कोटि भान छबि छाई ॥ ३ ॥
ता मध बीच द्वार इक दरसा । साहिब सिंध कहाई ॥ ४ ॥
तुलसी सुरति सब्द सुन माहीं । गुरु पद सुरति मिलाई ॥ ५ ॥

॥ बिहाग ६ ॥

आली री इक अचरज बानी । गुरुमुख आप बखानी ॥ टेक ॥
चौथे चार पार इक स्वामी । लखि भिनि नाम अनामी ॥ १ ॥
सूरति सैल महल पिय पाया । रूप न रेख निसानी ॥ २ ॥
में मिलि जाइ पाइ पिय अपना । जल जल धार समानी ॥ ३ ॥
प्यारी प्रीति जाति पिय पाये । तुलसी तलब बुझानी ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ७ ॥

आली री आज अनंद बधाई । पिय पद परसि पठाई ॥ टेक ॥
ये सुख चैन सैन कहा गाऊँ । कहि कहि संत सुनाई ॥ १ ॥
आदि अनादि अमर पद पावा । दुख सुख बिपति नसाई ॥ २ ॥
अब मन मरन जिवन भ्रम भागा । पिय प्यारी पद पाई ॥ ३ ॥
तुलसीदास बास घर अपने । अली सुख कहत न जाई ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

ये सुख का का कहौं बिचारा । जाने जोई कीन्ह निरवारा ॥
सतगुरु से लेखा जिन पावा । बिन गुरु हाथ न काहू आवा ॥

; गुरु अंतर जानौ भाई । गुरु त्रिकुटी गुरु चौथ जनाई ॥
र अस गुरु मत बूझि बिचारा । सत सतगुरु मत इनसे न्यारा ॥
गुरु सत मत अगम लखावै । जा से जीव परम पद पावै ॥
ग के गुरु भेद नहिँ जानैँ । ज्योँ बनियाँ कर हाट दुकानै ॥
ाप आदि अनामी नहिँ जानी । सिष कहौ कस पावै सहदानी ॥
ो संतन सुत राह पुकारी । सो सब खोजि खोजि रचि हारी ॥
गत जीव संसार बिचारा । ये कहा जाने सार असारा ॥
ास जस कीन दीन समझाई । तस तस बाँधो गाँठि लगाई ॥
न सब आस बास फँस मारा । केहि बिधि उतरै भौजल पारा ॥
गत गुरू बिस्वास न माना । उनहूँ सतगुरु राह न जाना ॥
ुलसी सतगुरु सत्त लखावा । पुनि चढ़ि गये आदि घर पावा ॥
मैँ संतन कर दास निकामा । किरपा कीन्ह दीन्ह वाहि धामा ॥
मैँ पुनि कलप कलप कर भूला । नीच जानि मेटेउ दुख सूला ॥
बुधि मतिहीन जानि कियो छोहा । संत कृपाल काटि मद मोहा ॥
सतसँग सतगुरु पंथ लखावा । सतगुरु संत पंथ सत पावा ॥
चौथे पद सतगुरु जिन जाना । ता का आवागवन नसाना ॥
जग गुरुवा से काज न होई । सत्त कहौ राखौ नहिँ गोई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सतसँग सार, जग असार जानै नहीँ ।
सूरति सत मत द्वार, लखि अगार संतन कही ॥१॥
जग अबूझ अज्ञान, सना करम बस कस लखै ।
पूजै जल पाषान, योँ भुलान भौ मेँ परा ॥२॥

॥ छंद ॥

सतसंगति गाई जिन जिन पाई । करम नसाई पार भई ॥१॥
जिन कही बखानी देखि निसानी । जिन जिन घर को राह लई ॥२॥
बूझै मत दूरा कोइ कोइ सूरा । अगम अपूरा सार सही ॥३॥
उन की गति न्यारी संत बिचारी । भेद अपारा पार भई ॥४॥
उन उन गाइ राई ग्रंथन गाई । भेद सुनाई बूझि दई ॥५॥

औरो सुनो एक अधमाई । बिन बकरा मरे मास न आई ॥
बकरा मरै जीव दुख पावै । तब पुनि मास कसाई लावै ॥
आतम मरै कष्ट के माहीं । कसकै साधू देंह धुजाई ॥
ऐसे निष्ट साध जो खावैं । तिन को साधू कहि कहि गावैं ॥
दयाहीन इंद्री सुख भावै । जिभ्या रस मट्टी बतलावै ॥
जो कोइ पूछै कस कस खाई । तुम ता कौ मट्टी बतलाई ॥
जिव हत्या कछु नाहिं बिचारा । ऐसे साध अनीति अधारा ॥
करै स्वाद मट्टी बतलावै । इंद्री स्वाद बिधी नहिं गावै ॥
मट्टी तौ तब जानै भाई । ढेला खेत उठावै खाई ॥
जब जिभ्या सुख चीन्ह न आवे । तब मट्टी कहि सच करि गावै ॥
नोन मिरच पुनि छौंकै जाई । पुनि तेहि करै स्वाद से खाई ॥
कोइ कोइ गृस्थ बिष्नु तेहि थूकै । धूजै देंह प्रान तेहि सूखै ॥
गृस्थ अनीती मानै नीके । मास खाइ तेहि संगति छेके ॥
ये साधन के कर्म निकामा । नरक परै छुटै जब जामा ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की कहिया । गृस्थ डरै तेहि साधन लइया ॥
दास साध के कहैं पुनीता । करै साध ये कर्म अनीता ॥
वड़े साध येहि बिधि से गाये । यह अनीति सब संत बताये ॥
पलकराम बिधि समझो भाई । कहिये साध कि कहिये कसाई ॥
ये वावे मुख नहीं बखाना । मन अपने सुख इंद्री खाना ॥
तुलसी मैं तौ सब को दासा । देखि देखि जिव भयौ उदासा ॥
ऐसी कहि कहि कहँ लग गाई । मता साध का कहूँ न पाई ॥

॥ प्रश्न पलकराम । चौपाई ॥

तुलसी स्वामी भाखौ भेवा । साहिबजादे कर्म के लेवा ॥
यह बिधि संत मते में नाहीं । सत सत ये तौ कही गुसाँई ॥
कहो तुलसी इन का निरवारा । ये भी कबहूँ लगिहैं पारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

[प]लकराम तुम सुनियो स्वामी । ये तौ परिहैं नर्क की खानी ॥
[आ]तम नाम मास जिन खाया । बकरा मारि करम में आया ॥

गृस्थ रहैं जग माहिं मास मछरी भखैं।
जुग जुग नरक निवास तासु पुरखा चखैं ॥८॥
जो कोई भेदी भेद संत बतलावहीं।
गगन गंग कर बास सो हंस सुनावहीं ॥९॥
काग कुबुद्धी जीव न मन उनके बसे।
छूटै नर्क निदान जान जम ना फँसे ॥१०॥
तुलसी बूझि बिचार चारि जुग से कही।
जो कोइ मानै अन्त संत सरना सोई ॥११॥

॥ चौपाई ॥

संत सार सरना सोइ पावै। नीति अनीति नजर में आवै ॥
संत सरन बिन पंथ न सूझै। जीव हतन तन दया न बूझै ॥
जस घूघर दिन दिखै न भाई। अस जग भेस नैन अंधराई ॥
दृग दिवस तेहि सूझि न आवै। राति परे चरने को जावै ॥
घूघर का परसंग सुनाऊँ। नीत अनीत भेद दरसाऊँ ॥
गूलर बृच्छ रहै कहुं एका। ता पर घूघर बसैं अनेका ॥
आपस में चरचा भइ भाई। अपनी अपनी सब्रन सुनाई ॥
बोले एक सुरज कहं रहिया। ता को कछु बिख्यान सुनइया ॥
ता में एक घूघर उठि बोला। दिन को सूरज उगै अतोला ॥
सब सुनि बात अचंभी कीन्हा। सुन कर कोउ न हुँकारी दीन्हा॥
ये तो आज सुनी हम भाई। हम सब के यह मन नहिं आई ॥
वा को झूठा करि ठहराया। पूछा कहौ कहाँ सुनि आया ॥
उन से कहा सुनौ परसंगा। समुन्दर बीच मिली जहँ गंगा ॥
ता बिच धाम मोर अस्थाना। कई दिवस जहं बीति सिराना ॥
एकै दिवस भया अस लेखा। हंसा सरवर आवत देखा ॥
समुंदर वार काग कहुँ आये। उन हंसन पर चोँच चलाये ॥
हँसी कही सुनौ रे कागा। मैला मन बुधि ज्ञान न जागा ॥
जग बिच सूरज उगै जहाना। आँखि न सूझ अबूझ बखाना ॥
जस घूघर दर दिवस न सूझा। अस अंधरा हम तोहि को बूझा॥

कंज गुरू सोइ गैल लखाई । धुनि सुनि सुरति द्वार पर छाई ॥
तब तन मन की तपन बुझानी । सूरति सब्द मिलि सहदानी ॥
सिंध बुंद जब मिला ठिकाना । सब्द सुरति लखि अगम बखाना ॥

॥ सोरठा ॥

हिये पिय लखन लखाउ, गगन गुमठ दरसत लखा ।
सागर सुरति छुड़ाय, करम कलस कृत फूटि सब ॥

॥ चौपाई ॥

जब हिये में पिय को लखि पावा । गगन गुमठ सोइ अगम दिखावा ॥
ये तन बीच हिये के माहीं । बस्तु अगोचर संत लखाई ॥
जिन जिन घट में सुरति समाई । सो पहुँचे सतगुरु सरनाई ॥

॥ रेखता ॥

हिये में पिय लखि पावा । गगन गुमठ दरसावा ॥१॥
स्याह रँग सुरति से छूटा । कलसा करम का फूटा ॥२॥
सुन की धुनि दरसानी । पौरी पिया पहिचानी ॥३॥
सुन में सब्द लखि पावा । मन से सुरति दौड़ावा ॥४॥
फूला कँवल दल माहीं । सुरती सब्द में धाई ॥५॥
नाली निरखि नभ द्वारा । देखा ब्रह्मंड पसारा ॥६॥
गुरु से गली लखि पाई । प्यारी पिया घर जाई ॥७॥
बेनी बिबिध बिधि देखा । भाखा अगम का लेखा ॥८॥
बूझै कोइ संत बिचारी । निरखा जिन नैन निहारी ॥९॥
तुलसी चरन का चेरा । पावन रज कीन्ह निबेरा ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन रज धूर, सूर सुरति सगरी करी ।
भरी गगन के माहिं, गुमठ गगन चढ़ि लखि परी ॥

॥ दोहा ॥

सब्द सहर हेरा नहीं, किया न सतगुरु खोज ।
बीजक मति सँग पचि मुए, पढ़ पढ़ मन मत मोज ॥

॥ चौपाई ॥

गुपल गुसाईं खोज न कीन्हा । सब्द भेद का सार न चीन्हा ॥
बुधि मति हीन सूझ नहिं आई । गावत गावत जनम बिताई ॥

॥ गुपाल गुसाईं । चौपाई ॥

स्वामी तुलसी सरनि तुम्हारी । संत चरन पर तन मन वारी ॥
स्वामी चरन सरन में लीजे । दास जानि मोरा कारज कीजे ॥
मैं मति अंध नैन मति हीना । अब तौ तुलसी चरन यकीना ॥

॥ तुलसी साहिब । चौपाई ॥

सुनि लीजै अब गुपल गुसाईं । बिन सतसंगति कोऊ न पाई ॥
सूरति सब्द समझ घट माहीं । पूछौ सोइ सतगुरु से राही ॥
सब्द गुरू सूरति जब पावै । चढ़ि चढ़ि गगन गुमठ पर आवै ॥
गगना गुमठ फोड़ि असमाना । सूरति चढ़ि सब्दा गुरु जाना ॥
सार सब्द गुरु सुरति समानी । अस कबीर गुरु सिष्य पिछानी ॥
गुरु सिष भया अगम गम चेला । सो साधू सतगुरु का चेला ॥

॥ सोरठा ॥

गुपल गुसाईं धाइ, पाँय पकर करि सिर दियौ ।
हिया उमँगि जल धार, नैन नीर टप टप चुवै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी बोध ताहि का कीन्हा । समझ बूझ मारग को लीन्हा ॥

भेद राम और रामायण का जो तुलसी साहिब ने अपने शिष्य हिरदे से कह

॥ चौपाई ॥

हिरदे पंथ भेष सब बूढ़ा । संत मते को लखै अगूढ़ा ॥
वेद मता सब कासी माहीं । बूढ़े जा में भेष भुलाई ॥
रामायनि घट बूझि न जानी । सब जग पंडित भेष न मानी ॥
घठ मठ में रामायनि गाई । कासी कदर भेष नहिं पाई ॥
सुनि सुनि के सब अचरज कीन्हा । बुधि मत हीन न काहू चीन्हा ॥
परमहंस सन्यासी जोगी । ब्रह्मचारि जग बिष रस भोगी ॥
भेष पंथ मति सगरे झारी । अस बिधि कासी परी पुकारी ॥
कासी नगर सोर भया भारी । जग पंडित सब कहैं नकारी ॥
हिरदे घट रामायनि माहीं । निंदा की बिधि माहिं सुनाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सत मति मूल, जग अबूझ भूला फिरै ।
सहै करम कृत सूल, सत अतूल गति ना लखै ॥

॥ चौपाई ॥

सत मति संत राह गति गाई। पुनि काहू परतीत न आई॥
अब कहूँ भाखि सो सुन संबादा। घट में अंड ब्रह्मंड अगाधा॥
घट में रावन राम जो लेखा। भरत सत्रगुन दसरथ पेखा॥
सीता लखन कौसल्या माहीं। मंथरा केकई सकल रहाई॥
इन्द्रजीत मंदोदरि भाई। रावन कुंभकरन घट माहीं॥
सारा जगत पिंड ब्रह्मंडा। पाँच तत्त रचना कर अंडा॥
जिनजिन घट अंदर में चीन्हा। सोइ सोइ साधू करैं यकीना॥
या से अगम अगम येहि माहीं। निरखा देख नजर से आई॥
नाम अनेक अनेकन कहिया। घट रामायन में दरसइया॥
घठ रामायन अगम पसारा। पिंड ब्रह्मंड लखा बिधि सारा॥
नाम अनेक अनेकन कहिया। सो सब घट भीतर दरसइया॥
अगम निगम और अकथ कहानी। तुलसी भाखी अगम निसानी॥
घट रामायन ग्रन्थ बनाई। साखो सब्द अगम बिधि गाई॥
कही बिलावल जैजैवंती। कोइ कोइ बूझि अगम गति संती॥

॥ जैजैवन्ती[१] ॥

ए री घट माहिं लो रामायन गाई, ग्रंथन बनाइ कै॥टेक॥
तुलसी सब भाखि सुनाई, घट रामायन बिधि गाई।
पिंड पिंड ब्रह्मंड दिखाना, तुलसी लौ लाइ कै॥१॥
दृग देखा पिंड ब्रह्मंडा, निरखा सात दीप नौखंडा।
अंडा तत पाँच बनाया, काया धसि जाइ कै॥२॥
तीन लोक घट माहीं, पुनि चौथे जाइ समाई।
परे ता के रहत अनामी, स्वामी निरताइ कै॥३॥
सूरति दृग दीप उड़ानी, लीला गिर जाय समानी।
सुन्न सेत सब्द सुहाना, पुनि आई धाइ कै॥४॥
हिये हिरदे नैन खुलाना, जहँ निरखा पुरुष पुराना।
वहँ सुन्न न सब्द न बोला, खोला द्वार पाइ कै॥५॥

(१) यह सब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है।

मिला प्रीतम पुरुष पुराना, अगमन अज घर हम जाना।
स्यामा भइ गति मति मोरी, बुँदा सिंध पाइ कै ॥६॥
तुलसी संतन प्रति पाई, येहि धरम राह दरसाई।
लिया अजर अगम पुर धामा, ता में रही छाइ कै ॥७॥
कहूँ अब सतसंगति गाई, भइ कासी नगर मँझाई।
कासी काया भाखि बखाना, बिधि बिधि दरसाइ कै ॥८॥
हिरदे अहीर बखाना, हिरदे में हेर समाना।
गुनवाँ मन गुन सँग खेता, ता को कही गाइ कै ॥९॥
नैनू पंडित नैन कहाये, ता में स्यामा स्याम समाये।
जहँ माना मन लै बैठा, पंडित पिंड आइ कै ॥१०॥
कर्मा करि करि कर्म कहाये, धर्मा सब धर्म चलाये।
करिया पुतरी लै जाना, भाखू समझाइ कै ॥११॥
तकी तकि तकि नैन निहारा, सैनू सैनै सुरति सँवारा।
रहे मन इत रेवती दासा, या को कहो गाइ कै ॥१२॥
फूलदाम फूल गयो कँवला, जहँ सूर दल पर सम्हला।
प्रिय प्रीति सुरति चढ़ि आई, येही प्रियेलाल कै ॥१३॥
चढ़ि गई गगन के माहाँ, परदा तानाँ फोड़ि समाई।
पद चथे जाई निहारा, कला में गुरु पाइ कै ॥१४॥
गइ चौथे पद पर ताकी, राहि सुन्ना सुन्न न बाँकी।
तुलसी मत कीन्ही दाना, संतन गति गाइ कै ॥१५॥
सम्मत सोलासै अट्ठारा, घट रामायन लिखि सारा।
सूरति घट घट में देखा लेखा पद जाइ कै ॥१६॥
कासी में चोला[1] उड़ाई, तब हमने गुप्त छिपाई।
जानै कोइ सतसंग बासो, नहिँ कासी भाखियै ॥१७॥
हिरदे जाने जाति अहीरा, घट रामायन वोहि तीरा।
कोइ सत मत मन का आवा, जा को कही गाइ कै ॥१८॥

(१) चुहल, हँसी।

तुलसी तत तोल बताई, पुनि कहि कहि भाखि सुनाई।
घट रामायन बूझै, सूझै तिहुँ लोक में ॥१६॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, सोलह से अठरा कही।
सही भई नहिँ सार, लार निकट कासी बसै ॥

॥ चौपाई ॥

सोलहसै अठरा के माहीँ। घट रामायन कीन्ह बनाई ॥
सम्मत सोलहसै अट्ठारा। घट रामायन साज सँवारा ॥
पिरथम घट रामायन गाई। कासी सुनि सब अचरज लाई॥
तुलसी नाम इक साध गुसाईं। ग्रंथ कीन्ह इक भाखि बनाई ॥
ता में वेद कितेब न राखा। दस औतार कछू नहिँ भाखा॥
तीरथ वरत एक नहिँ मानै। वो कहै और और परमानै ॥
पंडित हिरदे से भयौ झगरा। और भेष जब कासी सगरा ॥
तब तुलसी मन कियौ विचारा। घट रामायन गुप्त करि डारा॥
जग के माहिँ चलन नहिँ पाई। जग बिरोध नित झगरा लाई ॥
ये जग भवसागर की धारा। संत मता भवसागर पारा ॥
सत सत मति सतन ने गाया। पुनि काहू की दृष्टि न आया॥
अगम निगम और आदि अनादा। समझै सुनि बूझै कोइ साधा ॥
काहू चित धर चेत न कीन्हा। ता से सतगुरु भेद न दीन्हा॥
जग बिरोध देखा जब जानी। सात कांड रामायन बखानी ॥
घट रामायन संत कोइ चीन्हा। समझै संत होइ लौ लीना ॥
रावन राम कीन्ह संवादा। तब कासी में चली अगाधा ॥
तुलसी मता कोइ नहिँ चीन्हा। गुप्त भेद सब जग से कीन्हा॥
ये भौसागर जगत असारा। तुलसी मता मते की लारा ॥
जग में वस्तु कोइ नहिँ चीन्हा। जा से ग्रंथ गुप्त कर दीन्हा ॥
जिन कोइ संत मते को चीन्हा। बूझै सोई होइ लौलीना ॥

॥ सोरठा ॥

कासी नगर मँझार, भरम भाव सगरे भयौ।
घट रामायन लार, ये निकाम कासी बसै ॥१॥

राम चरित्र बनाय, जगत भूल भ्रम ताहि मेँ ।
इष्ट भाव व्रत मान, समझाया समझै नहीँ ॥२॥
जासु बनी है बात, देखन विधि बिधि योँ कही ।
लही जो तुलसी दास, संत चरन रज धूरि धरि ॥३॥
हिरदे जानै बात, तुलसी तत मत लखि कही ।
लई अपनपौ आइ, जाइ सुरति सब्दै मिली ॥४॥
सतसँग करौ हजार, बिना संत अंतै नहीँ ।
भेष पंथ मेँ नाहिँ, ये अतंत रस अगम है ॥५॥
मैँ संतन कर दास, लखि हुलास अद्‌बुद कह्यौ ।
लह्यौ अमर पद बास, योँ अकास अंबर गह्यौ ॥६॥
सुरति निरति सँवारि, मार पार पद निरखि कै ।
बूझै बूझनहार, ये अगार अंदर कही ॥७॥
मैँ संतन की लार, सत सँवार सुरति दई ।
गई सेत के पार, सत सतगुरु मेँ मिलि रही ॥८॥
सत स्रुति महल अगार, फारि आठ अटकी नहीँ ।
सटकी सिंध मँझार, पदम कंज निरखत रही ॥९॥
अतल पच्छ इमि बास, सजि अकास आगे गई ।
लही अमरपुर बास, स्वाँस भास जहँ गम नहीँ ॥१०॥

तुलसी साहिब के पूर्व जन्म का हाल

॥ दोहा ॥

तुलसी कहत बताइ, अपनो उत्पति मति विधी ।
सुधि सतसंगति लार, जग जब से तन मेँ सिधी ॥

॥ चौपाई ॥

अब अपनी बिधि कहा विसेखा । तुलसी कौन नीच कर लेखा ॥
मैँ अति अधम अचेत अबूझा । संत चरन कछु मोहिँ को सूझा ॥
मैँ तो अजान जानि जित जाई । संतन कीन्ह जानि सरनाई ॥
मैँ तो अचेत चेत चित नाहीँ । संत चिताइ लीन्ह अपनाई ॥
मैँ पुनि संत सरन सम नाहीँ । संत दयाल दया के साईँ ॥

तुलसी मतबुद्धि नाहिँ बिवेका । संत चरन चित बाँधी टेका ॥
मैँ अब अपनी आदि बताऔँ । अपनी बिथा आदि गति गाऔँ ॥
जग व्यहार जगत जग राही । तन उपजा बिधि कहौँ बुझाई ॥
राजापुर जमुना के तीरा । जहँ तुलसी का भया सरीरा ॥
विधि बुन्देलखंड वोहि देसा । चित्रकोट बीच दस कोसा ॥
संवत पंद्रा से नावासी । भादौँ सुदी मंगल एकादसी ॥
भया जनम सोइ कहौँ बुझाई । बाल बुद्धि सुधि बुधि दरसाई ॥
तिरिया बरत भाव मन राता । बिधिबिधि रीत चित्त सँग नाथा ॥
ज्ञान हीन रस रँग सँग माता । कान्ह कुब्ज बाम्हन मोरा जाता ॥
जगत भाव ऊँचा सब भाँते । कुल अभिमान मान मदमाते ॥
मोटा मन कछु चीन्ह अचीन्हा । ज्ञान मते मत रहौँ मलीना ॥
एक विधी चित रहौँ सम्हारे । मिलै कोइ संत, फिरौँ तेहि लारे ॥
संत साथ मोहि नीका भावै । ज्ञान अज्ञान एक नहिँ आवै ॥
अब आगे का सुनौ विधाना । ता की बिधी कहौँ परमाना ॥
संवत् सोलासै थे चौधा । तादिन भया अगम का सौदा ॥
सावन सुदी नौमी तिथि बारो । आधा राति भई गति न्यारो ॥
बिजुली चमक भई उंजियारी । कड़का घोर सोर अति भारी ॥
मन मेँ वहु विधि भर्म समाया । यह अजगुत कहाँ कहँ से आया ॥
राति वीति गई भयउ बिहाना । मन अचरज सोइ कहौँ बिधाना ॥
पुनि प्रति रोज रोज असहोई । एक दिवस सूरति चढ़ि जाई ॥
नील सिखर गुरुद्वारे माहीँ । निरखा गरज कहा न जाई ॥
कहँ लगि कहौँ विधिविधि डंडा । पुनि सब निरखि परा ब्रह्मंडा ॥
गंगा जमुना और त्रिवेनी । कँवल माहिँ सतगुरु की सैनी ॥
पद्म प्रयाग अगम पुर बासा । सतगुरु कंज सुरति पदपासा ॥
तीन लोक भीतर सब देखा । कहौँ कहाँ लगि विधिबिधि लेखा ॥
जो ब्रह्मंड भरा जग माईँ । सो देखा सब घट मेँ जाई ॥
नितनित सैल सुरति सँग खेला । निरखा अगम निगम अस सैला ॥

कस कम कहौं अगम बिधि नाना । एक दिवस चढ़ि अगम ठिकाना ॥
वहँ की सैल चौज कछु भारी । अंड खंड ब्रह्मंड से न्यारी ॥
अस अर देखा अगम तमासा । चौथा पद सतलोक निवासा ॥
वे सन सतगुरु भेंटे जाई । सूरति सत्तनाम रही छाई ॥
तीनि लोक से चौथा न्यारा । तहँ गइ सुरति सतगुरु पारा ॥
नितनित सैल कोई दिन कीन्हा । चौथा पद जहँ सतगुरु लीन्हा ॥
एक दिवस भइ ऐसी रीती । सुरति चढ़ि रस आगे पीती ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारी । उतरै चढ़ै चढ़ै नित चारी ॥
चौथे पद से न्यारा धामा । सतगुरु पद के पार अनामा ॥
तुलसी प्रीति सुरति की लागी । राति दिवसि सोवै नहिँ जागी ॥
कहँ लगि ब्यान कहौं गति गाई । तुलसी मो से कही न जाई ॥
जो सब बिधि मैं कहौं सुनाई । तो जग कागद मिलै न स्याही ॥
ये बिधि देखा सकल बिधाना । अब कहौं सुनो और बिधि नाना ॥
कंज गुरू ने राह बताई । देह गुरू से कछु नहिँ पाई ॥
अब आगे बिधि सुनो बिधाना । ताकी बिधी कहौं परमाना ॥
ऐसे इक दिन बीते सिराने । राजापुरी जगत सब जाने ॥
लोग दरस को नित नित आवै । दरस भाव सबको उपजावै ॥
नर नारी सब आवैं भारी । दरसन करैं सिपारस भारी ॥
हिरदे अहीर कासी का बासी । रहै राजा पुर नौकर पासी ॥
वोहु प्रति दिन दरसन को आवै । प्रीति बड़ी हित कहा न जावै ॥
राति दिवस दिन दिन रहै पासा । तुलसी बिना और नहिँ आसा ॥
एक दिवस भइ ऐसी रीती । कासी गये बहुत दिन बीती ॥
हमरा चित हिरदे में बासी । हम चलि गये नग्र जहँ कासी ॥
संबत सोलासै रहे पन्द्रा । चैत मास बारस तिथि मँगरा ॥
पहुँचे कासी नगर मँझाई । हिरदे सुनत दौड़ि चलि आई ॥
आये चरन लीन्ह परसादी । बिधि बिध रहन कुटी की साधी ॥
कुटी बनाय कीन्ह अस्थाना । कासी में हम रहे निदाना ॥
गंगा निकट कुटी जहँ कीन्हा । हिरदे नित आवै लौलीना ॥

सतसँग रंग राह रस पीना। हम पुनि वस्तु अगम की दीन्हा॥
अस अस कछु दिन कासी माइँ। रहे तहाँ पुनि सहज सुभाई॥
सोरासै सोला में सोई। कातिक बदी पञ्चमी होई॥
आये पलकराम इक संतो। रहे कासी में नानक पंथी॥
गुष्टि भाव बिधि उनसे कीन्हा। खुसी भये मारग को लीन्हा॥
घट रामायन ग्रंथ बनावा। ता की बिधि दिवस सब गावा॥
सम्मत सोलासै अट्ठारा। उठी मौज ग्रंथ कियौ सारा॥
भादौं सुदी मंगल एकादसी। आरंभ किया प्रथम मन भासी॥
पुनि कासी में अचरज कीन्हा। सोर नगर में भयो अलीना॥
पंडित जगत जैन अरु तुरका। भयौ झगरा आइ कासीपुरका॥
पंडित भेप जगत मिलि सारा। घट रामायन परी पुकारा॥
जो कुल झगरा रीति जस भाँती। जस जस भया दिवस अरुराती॥
ता से ग्रंथ गुप्त हम कीन्हा। घट रामायन चलन न दीन्हा॥
या से संत मते की रीतो। जगत अजान न जानै प्रीती॥
सम्मत सोलासै इकतीसा। राम चरित्र कीन्ह पद ईसा॥
ईस कर्म औतारी भावा। कर्म भाव सब जगहिं सुनावा॥
जग में झगरा जाना भाई। रावन राम चरित्र बनाई॥
पंडित भेप जगत सब झारी। रामायन सुनि भये सुखारी॥
अंधा अंधे बिधि समझावा। घट रामायन गुप्त करावा॥
अब कहौं अंत समय अस्थाना। देह तजी बिधि कहौं बिधाना॥

॥ दोहा ॥

सम्मत सोलासै असी, नदी बरुन के तीर।
सावन सुकला सत्तमी, तुलसी तज्यो सरीर।

॥ चौपाई ॥

मैं अपना बरतंत बताई। समझ बूझ सुब बुध चित लाई॥
जस जस भया बिधी बिधि लेखा। तस तस तुलसी कहा बिसेखा॥

॥ दोहा ॥

तुलसी नीच निकाम, गति मति उनपति सब सुधी॥
निधि स्तुति संत समान, आदि अंत तुलसी बिधी॥

संत मत भेद बरनन

॥ छन्द ॥

मरनिसूरसंतासोली ताअनंता । कृपाकीन्हकंथा दयालंकृपालं ॥१॥
मिटेदुक्खदुंदाकटे कालफंदा । फटे भौ निखंदा न दुंदं न फदं ॥२॥
दयासंतजानीसोकहँलौंबखानी । मतामूलमानीनकरमं न भरमं ॥३॥
गुरूदीन्हसंधा भया नीच बंदा । जुतुलसीनिखंदासुबोधंप्रबोधं ॥४॥

दोहा–संत सरन सम मुक्ति मन, तन मन समझ सिहार ।
बूझि बचन मन मूल को, सबहि सूल मिटि जाय ॥१॥
पकरि पदर धरि संत पद, जद्यपि सुरति बिचार ।
लार लगन लागी रहै, तब उतरै भौ पार ॥२॥

॥ छन्द ॥

लाखै संतस्वामीपकै पंथनामी । अचतिंअनामी नठामंनधामं ॥१॥
करौप्रेमप्रीतीमरन सूर सुरता । घरै पद्मप्रीत न नीतं अनीतं। २॥
धरै धीर चरना हरै पार सरना । भगै भूमि भरमनजरमंनमरन। ३॥
गुरूसब्दसारानिकरि सिंध धारा। धर्मीअगम धारानियारं सुपारं। ४॥
चली सार सगी लगी लार चंगी । तनी तार तंगी उमंगै उलंघी ॥५॥
लखीलोकन्यारीपकीप्रेमप्यारी । अधर में निहारीन रंगं न रूपं॥६॥
गहै सूर साधू सो भाखै अगाधू । नसावन न भादूं न नीरं नपीरं।.७॥
बनावेनिघाटालखीचीन्हबाटा । सखीसंगठाटाबिराटंबिधानं ॥८॥
लखीसुतिसैलाचखीचौज खेला । तकातुलसीतालंकटाभर्मजालं॥९॥

सोरठा-तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो कौ कियौ ।
लियौ सरन के माहिँ, जाय जन्म फिर कर जियौ ॥

दोहा–भर्म भूल बस जग रहै, सहैं जो जम के सूल ।
फूल फँदै जग जाल में, बध न चीन्हा भूल ॥१॥
ये जग जाल कराल है, फँद फँद मुनि बेहाल ।
काल चाल चीन्हा नहीँ, तुलसी संत कृपाल ॥२॥
मैं मतिमंद निकामता, पता न जानौँ भेद ।
खेद जन्म की मिट गई, लई लगन सुति लार ॥३॥
सतगुरु सुरति लखाइया, दिया जो भेद सुनाइ ।
पाँय परसि रस बस रही, गई गगन के माहिँ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तुलमी तनमन अगम तमासा । लखै साध कोइ बरनि बिलासा ॥
कहि कहि कहौं सत के बैना । सुनि सुनि समझ भया सुख चैना ॥
मो मन जानि जमक जम गाई । खाइ खलक सोइ नाहिँ सुनाई ॥
ये जग जोर घोर अँधियारा । अंधे लगे अंध की लारा ॥
संत मता नहीँ चीन्हि गँवारा । कम कम लखै पार पद न्यारा ॥
नैन न चैन ऐन हिय झाँईँ । सो कहौ संत अत कस पाई ॥
मैला मन मद माहिं चलावै । साधन संग रंग नहिं भावै ॥
मन तरंग तन लहर गड़ानी । भया अंध कहौ कस कस जानी ॥

दोहा—मन तरंग थिर न भयौ, गही न सतगुरु टेक ।
भेष भरम बस पचि मरे, घर घर जनम अनेक ॥

॥ छन्द ॥

तुलसी तोल त्रानी सो भाखा बखानी । अलो आदि जानं सो छानं बखानं ॥
कही आदि जेती भई भाख तेती । लई सन सेनी जो सूझं सो बूझं ॥
गुरू गैल गवना लखी लोक भवना । चख चौज मौजं न सोगं न भोगं ॥
पती पार जानी मतो मूल मानो । सन सूर मानी सो आपं मिलापं ॥
मिली सिंध मारा जो सलिता मिधारा । धरा पेठ न्यारा जो सिंधं मो बुंदं ॥
असी सुर्त चाली मिली सब्द नाली । भई भेंट भालं अकालं न जालं ॥
तलत्र तुलसि भारा लगी प्रेम प्यारी । पिया सौँ सगर जो नैना निहारं ॥

दोहा—प्रेम पियारी प्रीति सौं, जीति जन्म मन मार ।
पार पकरि सुति सैल कर, भर भर भवन सिधार ॥

॥ चौपाई ॥

जोइ जोइ भेद भया सोइ भाखा । तुलसी कहन कछू नहिँ राखा ॥
ये बिधि भया भेद सोइ गाया । तुलसी अगम न भाखि सुनाया ॥

सोरठा-जोइ जोइ बिधि वरतंत, सत समझ मो को दई ।
लही जो तुलसी दास, कही कहन घट लखि परी ॥१॥
कहि लख लखन लखाव, चाव चौज जस जस भई ।
दही दधि माखन भाव, काढ़ि तत्त येहि बिधि लह्यौ ॥२॥
पद परसंग समान, जानि कल्प जुग जुगन की ।
पलक पार दरियाव, भाव भेद लखि जिन कही ॥३॥

॥ चौपाई ॥

हित नित चैन सैन छुति सारा । संत चरन पर तन मन वारा ॥
मोरे बुधि बल बरन विवेकी । मैं नित लखन संत की देखी ॥
कही सुनी नहिं निज निज बानी । सब्द बूझ कोइ संत पिछानी ॥
मोरे तन मन दृष्टि दिवानी । सो सब कृपा संत की जानी ॥

सोरठा-संतन सरन उबार, तार लगन जो कोइ करै ।
भरै भवन सुति द्वार, पार परसि पारस भरै ॥

॥ चौपाई ॥

मैं लोहा जड़ कीट समाना । गुरु पारस संग कंचन कहाना ॥
कंचन भया सोन सुख माना । सो सराफ की [illegible] दुकाना ॥
पुनि गहना गढ़ि कीन्ह सुनारा । तोड़ मोड़ बहु भाँति सँवारा ॥
पुनि पारस नहिं सोन कहाना । सोन सोन जुग जुग निज जाना ॥
पारस परसत पारस होई । तस सतगुरु मत भाखा सोई ॥
तुलसी सत गुरु पारस कीन्हा । लोहा सुगम [illegible] ॥
लोहा कंचन पारस होई । पारस पद [illegible] सोई ॥
करि सतसंग रंग जोइ जाना । जिन चाहि पारस पहिचाना ॥
कर सोइ पारस कंचन होई । ये पारस सतगुरु मत सोई ॥

सोरठा-पारस कंचन कीन्ह, दीन द्रव्य धन सो गहे ।
दई दई कर्म लीन्ह, पान विषम [illegible] ॥१॥
सतगुरु पारस सार, लगे तार पारस करै ।
सरै जीव को काज, भरै मुक्ति निज भवन में ॥२॥
सुरति सब्द मिलाप, आठ पहर [illegible] ।
खेली अगम गढ़ घाट, घाट लखन सतगुरु दई ॥३॥

॥ [illegible] ॥

॥ छन्द ६ ॥

गिरागोहगाँठी परे पाँच बाटी । फँसे घोर घाटी सोठाटं बैराटं ॥
प्रकिरती पचीसं गुनानाम ईसं । गिरागोहग्रीसं सो भीसं अनीसं ॥
जड़े जोड़ जानी पड़े पिंड पानी । चले चेत खानी न ज्ञानं न ध्यानं ॥
तुलसी मैंलमारं भया भूमि भारं । न तुरती सम्हारं सो वारं न पारं ॥

॥ छन्द ७ ॥

कृतिमकाल जारं फिकर फहम सो फारं । निकरनौ निवारं सो भारं उतारं ॥
अली आदि जानी भली भूल मानी । चली चीन्ह खानी नितानं चितानं ॥
तिरकूट तालं करौ सैल भालं । मिलौ मौज माल सो कालं निकालं
तुलसी तोल गाई गगन गैल जाई । सुरति सैल पाई सो साधं अगाधं

॥ छन्द ८ ॥

अली आतम रूपं अकासं सरूपं । रवी भास भूपं अनंतं अनूपं ॥
निराकार कारं भई जोति जारं । लई बिस्व भारं सो सारं सम्हारं ॥
सरगुन स्याम वारं सो सृष्टी सवारं । रची खानि चारं सो भूमी अपारं ॥
अली आस अंडा जमा जीव पिंडा । सो तुलसी अखंडा बैराटं ब्रह्मंडं ॥

॥ छन्द ९ ॥

गुनागोह तीतं वना बासकीतं । पके पाँच पीतं सो चीतं अनीतं ॥
वैराट धारं सो वेदौ न पारं । जो नेतौ पुकारं सो वारं न पारं ॥
निरवान वानं जगा जोग ध्यानं । पंगा प्रेम पालं सो कालं करालं ॥
तुलसी तत्त धैयं गठे गाँठि गोयं । पड़े पाँच मोयं जो सोयं सो खोयं ॥

सोरठा-त्रोटक तरक त्रिचार, समझि संघ साधू लखै ।
तकै सुरति धरि ध्यान, सो समान पद का चखै ॥
घट रामायन अन्त, समझि सूर संतहि लखै ।
झकै भेप ग्रोर पंथ, थकै जगत भौ भिल रहा ॥२॥

दोहा–पँडित ज्ञानी भेप जो, नहिँ पावै कोइ अँत ।
ये अनन्त रस अगम है, लखै सूर कोइ सँत ॥

सोरठा-तुलसी मैं मतिहीन, सँत चीन्ह मोको दई ।
भई निरत पद लीन, होइ अधीन अन्दर मई ॥

॥ इति ॥

आवश्यक सूचना

संतबानी पुस्तकमाला के उन महात्माओं की लिस्ट जिनकी जीवनी तथा बानियाँ छप चुकी हैं—

कबीर साहिब का अनुराग सागर
कबीर साहिब का बीजक
कबीर साहिब का साखी-संग्रह
कबीर साहिब की शब्दावली—चार भागों में
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते, झूलने
कबीर साहिब की अखरावती
धनी धरमदास की शब्दावली
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) भाग १ 'शब्द'
तुलसी शब्दावली और पद्मसागर भाग २
तुलसी साहिब का रत्नसागर
तुलसी साहिब का घट रामायण—२ भागों में
दादू दयाल भाग १ 'साखी',—भाग २ "पद"
सुन्दरदास का सुन्दर बिलास
पलटू साहिब भाग १ कुंडलियाँ। भाग २ रेख़ते, झूलने, सवैया, अरिल, कवित्त। भाग ३ भजन और साखियाँ
जगजीवन साहब—२ भागों में
दूलनदास जी की बानी
चरनदास जी की बानी, दो भागों मे
गरीबदास जी की बानी
रैदास जी की बानी
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमीघूँट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ 'साखी',—भाग २ 'शब्द'
अहिल्या बाई (अंग्रेज़ी पद में)

अन्य महात्मा जिनकी जीवनी तथा बानियाँ नहीं मिल सकीं

१ पीपा जी। २ नामदेव जी। ३ सदना जी। ४ सूरदास जी। ५ स्वामी हरिदास जी। ६ नरसी मेहता। ७ नाभा जी। ८ काष्ठजिह्वा स्वामी।

प्रेमी और रसिक जनों से प्रार्थना है कि यदि ऊपर लिखे महात्माओं की असली जीवनी तथा उत्तम और मनोहर साखियाँ या पद जो संतबानी पुस्तकमाला के किसी ग्रन्थ में नहीं छपे हैं मिल सकें तो कृपा पूर्वक नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। इस कष्ट के लिए उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जायगा। यदि पाठक महोदय ऊपर लिखे महात्माओं का असली चित्र भी प्राप्त कर सकें, तो उनसे प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। चित्र प्राप्ति के लिए उचित मूल्य या ख़र्च दिया जायगा।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।